RNI - MPBIL/2008/26448

डाक पंजीयन- म.प्र./भोपाल/4-167/2024-26

भला हो जिसमें देश का वह काम सब किये चलो

नवलय

रजत जयंती वर्ष

नवलय अनुबोध

पौष-माघ, युगाब्द 5127, वर्ष 18 अंक 11, प्रेषण तिथि 15 जनवरी 2026, पृष्ठ 36

मूल्य 25/- रु., प्रकाशन तिथि 14 जनवरी 2026, ISSN No. 2456 - 0499

213 वां अंक

देश, समाज, परिवार
की गरिमा संवर्धन हेतु,
संस्कृति, इतिहास और
उस परम वैभव की जागरूकता हेतु,
अपनी उत्कृष्ट परम्पराओं और
भाषा की
निरंतरता और समृद्धि हेतु,
पर्यावरण, संसाधनों की संरक्षा हेतु,
स्वदेशी भावना को जीवन में
उतारने हेतु,
समरस समाज के निर्माण हेतु,
अनुशासित नागरिक जीवन हेतु,
किया गया हर कार्य,
मेरा कर्तव्य है.

कर्तव्यबोध अंक

क्या आप

प्रतिदिन 2.75 रू. वंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिये दान कर सकते हैं?

यदि हाँ ! तो इस अभियान का अंग बनिये।
कम से कम 1000 रू. वार्षिक दान करें।

नवलय ज्ञानदान

चलो जलायें दीप वहाँ जहाँ अभी भी अंधेरा है।

योजना प्राख्भ से अब तक, वंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा हेतु ₹ 5,69,344/- की सहायता दी जा चुकी है

वार्षिक सहयोग राशि का भुगतान सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया की किसी भी शाखा में/ नेट बैंकिंग/गूगल पे/पेटीएम से कर सकते हैं

खाते का नाम - नवलय ज्ञानदान (Navalaya Gyandan)

खाता क्र. - 3164047076

बैंक - सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, जेल रोड, भोपाल

IFSCode – CBIN 0283134

Scan here to pay

NAVALAY HUZUR

क्यू आर कोड को स्कैन कर राशि प्रेषित कर सकते हैं।

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर धारा 80/जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगा

सम्पर्क करें : 9425005033, 9300494833

नवलय का मासिक प्रकाशन

नवलय अनुबोध

वर्ष 18 अंक 11, जनवरी -2026

संपादक
आशीष शर्मा

संपादक मण्डल
दीपक भसीन, राकेश कुमार जैन,
डॉ. पूर्णिमा दाते,

प्रबंधक
अनिल नेमा

प्रकाशक व मुद्रक
राकेश कुमार जैन

स्वामित्व
नवलय
54, जोन-2, महाराणा प्रताप नगर,
भोपाल - 462011
E-mail :
navalayaanubodh@gmail.com
Web.: www.navalaya.org
फोन : 9425005033, 9425011865

प्रेषण व्यवस्था
सत्येन्द्र श्रीवास

मुद्रण
श्री श्रद्धा ऑफसेट प्रिंटर्स,
एस–बी– लोअर ग्राउण्ड, विजय स्तम्भ, भोपाल
फोन : 0755–4235459

मूल्य : रू 25/-
वार्षिक शुल्क : रू 300/-
द्विवार्षिक शुल्क : रू 500/-

ISSN No. 2456 - 0499

मासिक पत्रिका

नवलय अनुबोध का इंटरनेट संस्करण हमारी वेबसाइट : www.navalaya.org पर उपलब्ध है।

सम्पादकीय	04
अभिमत	05
नज़रिया	06
कर्तव्य	07
मौलिक कर्तव्य	08
पक्षी संरक्षक - संदीप धौला	08
महिलाएं जिन्होंने कर्तव्य के नए...	09
कर्तव्य पथ के नायक - मोहम्मद...	10
भारत में संसाधन और स्वास्थ्यबोध	11
कर्तव्यपथ के नायक-शिक्षक	12
प्रकृति से सामंजस्य बोध-नागांव...	12
युवा नवाचार बोध-पूजा	13
सरल भाषा में	13
सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात	14
दुर्लभ बीज संरक्षक- सलाई अरुण	14
कर्तव्य पथ पर हमारे प्रशासक	15
सामंजस्य बोध का अर्थ स्व सहायता समूह	15
प्रकृति के प्रति कर्तव्यबोध -जादव पायेंग	16
कर्तव्यबोध प्रेरित प्रयास -हेल्पबॉक्स	16
लक्ष्यबोध से छोटे हैं पहाड़	17
कर्तव्य बोध के नायक	17
कर्तव्य के मार्ग पर सर्वोच्च बलिदान	18
सहकारिता बोध का शिखर - अमूल	19
कर्तव्यपथ के नायक - श्रीधरन	20
तिरोहित कर्तव्य बोध	21
कर्तव्य विचलन के स्मारक	22
हमारे संसाधन बोध	22
हमारे जनप्रतिनिधियों का शालीनता बोध	23
मतदान-कर्तव्य या विश्राम का अवसर ?	24
कर्तव्य मीमांसा	25
दल बदल-यह कैसा कर्तव्यबोध ?	26
ग्राहक के प्रति हमारा शून्य कर्तव्यबोध	27
राजनैतिक तत्वबोध की कमी से उपजी नियति	28
हमारे तालाब और भविष्यबोध का सूखा	29
सदर्भवश	30
कहानी	31

प्रस्तुत विचार लेखकों के अपने विचार हैं। नवलय अनुबोध का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

सम्पादकीय

बचपन में खेल होता था शब्दों का. किसी नाम के साथ कोई विशेषण या संज्ञा जोड़नी होती थी, जब एक बच्चा एक नाम लेता था और दूसरे पक्ष से उस व्यक्ति की पहचान बताता हुआ, कोई शब्द तत्काल जोड़ना होता था. जैसे महाराणा प्रताप के नाम के बाद देशभक्ति और लता मंगेशकर के साथ सुर, भगत सिंह के साथ बलिदान शब्द जोड़ने के इस खेल में आरुणि के नाम के बाद गुरुभक्ति और कप्तान हमीद के नाम के साथ तत्काल बलिदान जोड़ना होता था. कुछ नाम ऐसे भी होते थे जिनसे दूसरा पक्ष परिचित नहीं होता तो इस बात के अनुमान से कि यह व्यक्ति किसी क्षेत्र में उल्लेखनीय काम के लिए प्रसिद्ध होगा ही, तो ऐसे अनजान व्यक्तियों के नाम के आगे कर्तव्यपरायण जोड़ दिया जाता था. बच्चों की इस शरारत में एक सन्देश छुपा है. कर्तव्य और कर्तव्यपरायणता बहुत बुनियादी गुण हैं. एक गायक का कर्तव्य है सुर साधना, एक खिलाडी का कर्तव्य है टीम भावना बनाये रखना और विजय प्राप्त करना, और शोषण के विरुद्ध संघर्ष करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है.

कर्तव्य विशेषण है, वह काम जो करने योग्य हो, कर्तव्य संज्ञा है, जैसे करणीय. शाब्दिक समझ के ऊपर एक व्यक्ति की वैचारिक स्पष्टता है कर्तव्य जो समाज और देश उस व्यक्ति से उस दश काल और परिस्थिति में आशा करता है. इसी वैचारिक स्पष्टता के चलते 23 वर्ष की आयु में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु स्वयं फांसी का फंदा अपने गले में डालने का साहस करते हैं जो इतिहास में दर्ज होता है. कर्तव्यबोध अंक एक पड़ताल है उस बुनियादी गुण की, जिसका जिस देश समाज या परिवार में अभाव में हुआ, वह देश या तो पिछड़ गया या नष्ट हो गया. राष्ट्रबोध, शत्रुबोध, सखाबोध, समाजबोध एक बड़ी छतरी के नीचे रखे जा सकते हैं जिसका नाम कर्तव्यबोध है. यह अंक प्रासंगिक है, वर्तमान स्थितियां अच्छी नहीं हैं. भारतीयता और नागरिकता के ऊपर हम अपनी जाति को रख रहे हैं, संविधान के ऊपर हम अपने मजहब को रख रहे हैं. जब भारत ऑस्ट्रेलिया की तुलना हो तो यह कहा जाता है कि ऑस्ट्रेलिया की आबादी कम है इसलिए वहां तरक्की है, जब चीन से तुलना हो कहा जाता है कि वहां प्रजातंत्र नहीं है. इस बात का भान क्यों नहीं है कि हम सब सामूहिक रूप से कर्तव्यबोध से इतने विमुख हैं कि हमारा पूरा तंत्र नैतिकता के रसातल तक चला गया है. हम कर्तव्यबोध के अकाल के चलते मतदान के दिन को छुट्टी का दिन मनाने और दूध में पानी तो छोटी बात है, यूरिया और वाशिंग पाउडर तक मिलाने में नहीं हिचक रहे हैं. राजनीति में आयाराम गयाराम से लेकर संसद में नोटों की गड्डियां दिखाई जाना, दल बदल कानून से लेकर मंत्री न बना पाने के एवज में मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति और हमारे चुने गए प्रतिनिधियों की कारगुजारियां किसी से छुपी नहीं हैं. गणतंत्र दिवस की इस बेला में, यह अंक प्रयास करेगा, एक विहंगम में देश में विभिन्न विधाओं में हम एक नागरिक, एक समाज और एक देश के रूप में विकसित हुए हैं, और कौन सा वह गुण था जिससे हम विचलित हुए हैं. क्या हम कर्तव्यबोध से विमुख होने के कारण पिछड़ रहे हैं ?

यह अंक संकलन है कर्तव्य के प्रति समर्पित व्यक्तियों के लिए, और उन दृष्टांतों को भी चेतावनी के रूप में समाहित किया जाएगा जिनके चलते हमारे बारे में विश्वमत प्रभावित हो रहा है. आज देश में 4 से 5 करोड़ युवा नशे का शिकार है तो 40 करोड़ युवा सोशल मीडिया का शिकार है. कर्तव्य का अर्थ है जो किया जाना चाहिए, और जो किया जाना है वह समाज और देश की आपेक्षा के अनुरूप हो, जिसका सीधा सम्बन्ध उस परिवार समाज या देश हित के लिए हो. स्पष्ट है असामाजिक काम, करने की श्रेणी में तो रखे जा सकते हैं लेकिन कर्तव्य की श्रेणी में नहीं.

इस अंक में बात होगी उन क्षेत्रों की, जहाँ हमारा प्रदर्शन अच्छा रहा है. 2019 में भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में अगर 24 प्रतिषत महिलाएं थीं तो वर्ष 2023 में यह प्रतिशत 35 हुआ है. लेकिन महिलाओं के विरुद्ध अपराधों की बढ़ती संख्या पर नियंत्रण हमारे सामूहिक कर्तव्यबोध की कमी का परिचायक है. सामूहिक नकल को प्रचलन में लाने वाले शिक्षक भी हैं, तो ऐसे शिक्षक भी हैं जिनके स्थानांतरण पर स्कूल के बच्चों ने बिलख कर उनके स्कूल से जाने का दुःख व्यक्त किया. तो आदिवासी इलाकों में स्वास्थ्य की सुविधाएँ जुटाने के लिए आजीवन संघर्ष करते डॉक्टर दंपत्ति भी हैं. कर्तव्यबोध के प्रति समर्पण और कर्तव्य को हवा में उड़ा देने की प्रवृत्ति के ऐसे अनेक उदाहरण हैं देश में. विवेचना होगी इन सभी मुद्दों पर. पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।■

वर्मा

कालजयी कथन

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि

–गीता– श्लोक 47

आपको अपने निर्धारित कर्तव्यों को निभाने का अधिकार है, कार्यों के फल का नहीं. कभी भी अपने आप को अपनी गतिविधियों के परिणामों का कारण न समझें, न ही निष्क्रियता से जुड़े रहें।■

अभिमत

अधिक मशक्कत नहीं है कर्तव्यपालन करने में

–राकेश कुमार जैन

कर्मयोग तभी होता है, जब मनुष्य अपने कर्तव्य के पालनपूर्वक दूसरे के अधिकार की रक्षा करता है। जैसे, माता–पिता की सेवा करना पुत्र का कर्तव्य है और यही माता–पिता का अधिकार है। जो दूसरे का अधिकार होता है, वही हमारा कर्तव्य होता है। अतः प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्तव्य–पालन के द्वारा दूसरे के अधिकार की रक्षा करनी है तथा दूसरे का कर्तव्य नहीं देखना है। दूसरे का कर्तव्य देखने से मनुष्य स्वयं कर्तव्यच्युत हो जाता है। दूसरे का कर्तव्य देखना हमारा कर्तव्य नहीं है। कर्तव्य किसी भी व्यक्ति के लिए नैतिक या वैधानिक जिम्मेदारी है, जिनका पालन सभी को देश/समाज के लिए करना चाहिए। ये एक कार्य या कार्रवाई है, जिसका पालन प्रत्येक मनुष्य को अपनी नौकरी या पेशे की तरह करना चाहिए। कर्तव्यों का पालन करना एक नागरिक का अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान, एक व्यक्ति के रूप में अपने परिवार या समाज के प्रति सम्मान व आदरभाव को प्रदर्शित करता हैं। एक व्यक्ति के लिए राष्ट्र, समाज व परिवार के प्रति कई कर्तव्य होते हैं। इनमें से अधिकांश कर्तव्यों के पालन के लिये अधिक मशक्कत की जरूरत नहीं पड़ती। हम दृढ़ इच्छाशक्ति रखें तो अधिकतम कर्तव्यों की पूर्ति आसानी से की जा सकती है। जैसे :–

- प्रातःकाल जागरण उपरान्त अपने माता पिता, गुरू, इष्टदेव को मानसिक प्रणाम करना।
- स्वयं की, घर की व सार्वजनिक स्थानों की सफाई बनाये रखना।
- आवश्यकतानुसार सात्विक आहार लेना। नशीले पदार्थों के सेवन से बचना।
- किसी काम को छोटा या हीन नहीं समझना।
- किसी भी मनुष्य को भी छोटा या हीन नहीं समझना। सबमें परमात्मा का अंश है यह मानना।
- अपना व्यवसाय या नौकरी ईमानदारी से निष्ठापूर्वक करना।
- सत्य के समर्थन में कष्ट सहने के लिये तैयार रहना।
- पड़ौसियों के सुख–दुःख में भाग लेना।
- न दूसरों की आस्था तोड़ना और न अपनी टूटने देना।
- वृद्धों के प्रति श्रद्धा, साथियों के प्रति प्रेम तथा छोटों के प्रति स्नेह रखना।
- अपने सुख या लाभ के लिए दूसरों को कष्ट या हानि न पहुंचाना। झूठ या निन्दा से बचने का प्रयास करना।
- अपनी आय का दसवां हिस्सा समाज कल्याण के लिए देना।
- दैनिक जीवन में रोजाना दो घंटे का समय शुद्ध सामाजिक कार्य के लिये समर्पित करना।
- गलत तरीके से अमीर बनने के लालच पर लगाम लगाना।
- परिवार में संस्कारमय वातावरण बनाना।
- भोजन में पक्षियों एवं गौमाता का हिस्सा निकालना।
- अतिथि को भोजन अवश्य कराना।
- बच्चों में बचत प्रोत्साहित करने के लिए उनको गुल्लक देना। छोटे–छोटे कार्यों से बच्चों को परोपकार की ओर प्रवृत्त करना।
- अपने उपयोग किए हुए अखबारों, कबाड़ एवं अन्य वस्तुओं को बेचने के बजाय परोपकारी कार्यों के लिए दे देना।
- नाते–रिश्ते निभाना एवं उसके दायित्व के प्रति ईमानदारी बरतना।
- सार्वजनिक जीवन में श्रम को प्रतिष्ठा देना।
- सत्य के समर्थन में समाज को एकत्रित करना।
- सार्वजनिक कार्यों में वैभव–विलास की बजाय मितव्ययिता को प्रदर्शित एवं प्रोत्साहित करना।
- जीवन शुचिता एवं साधन शुचिता को अच्छाई और सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदंड बनाना।
- विवाह आयोजन एवं मृत्यु भोज पर फिजूलखर्ची से बचना।
- अपने गांव/क्षेत्र के पूजास्थलों पर अन्नशाला, गौशाला, पाठशाला, धर्मशाला तथा आरोग्यशाला स्थापित करना।
- प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल/जलस्रोत, जंगल/वृक्षारोपण, जमीन, जानवर आदि के संरक्षण, संवर्धन के कार्य को बढ़ाना।
- सामूहिक श्रमदान, सफाई जैसे कार्यों द्वारा सामाजिक सहभागिता को बढ़ाना।
- गांव/बस्ती में लोक संस्कार तथा लोक शिक्षण की दृष्टि से वाचनालय/पुस्तकालय स्थापित करना।
- विरोधी विचारों को लेकर झगड़ा नहीं करना।
- वाहन चलाते समय या सड़क पर जाते समय यातायात नियमों का पालन करना।
- सार्वजनिक स्थानों पर विनम्रता और अनुशासन बनाये रखना।
- सदैव अपने मताधिकार का प्रयोग करना व अन्य को भी इसके लिये प्रोत्साहित करना।
- अपनी भाषा, भूषा, भोजन, भजन, भेषज पर गर्व करना व उसके संरक्षण के लिये उपाय करना। घर में हमेशा अपनी मातृभाषा में ही बात करना।

ऐसे अनेक छोटे छोटे बिन्दुओं का अनुकरण करते हुऐ हम हमेशा अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं। ■

– मो. 9425005033 Email- bankchetna@gmail.com

नज़रिया

बचना होगा गाल बजाने से

– दीपक भसीन

एक देश के रूप में, हमें और गंभीर होने की आवश्यकता है. विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होना, आबादी बढ़ने के कारण है, हमारी उस प्रजातंत्र में भागीदारी कितनी है इसका आकलन इस गणतंत्र दिवस पर आवश्यक है. एक पाकिस्तानी पत्रकार का कहना है, कितने मोबाइल बनते हैं किसी मुल्क में यह मुद्दा नहीं है, मुद्दा यह है कि कितने मोबाइल की झपटमारी और चोरी होती हैं देश में. मोबाइल और इंटरनेट से लैस मोबाइल की संख्या पर गर्व बेमानी है. विश्व में सोशल मीडिया पर दैनिक औसत समय डेढ़ घंटे है तो भारत में यह तीन घण्टे है. और मोबाइल या इंटरनेट का प्रयोग किसी कौशल या किसी नयी विधि या भाषा को सीखने के लिए कम होता है. सोशल मीडिया में पहुँच रखने वाले 118 करोड़ चीनी, 50 करोड़ भारतीय, 31 करोड़ अमेरिकन हैं. रही मोबाइल निर्माण की तो सच यह है कि हम भारत में सिर्फ मोबाइल पुर्जों की असेंबली कर रहे हैं. हमारे संस्थान गलत बयानी को धर्म मान चुके हैं. रेलवे की घोषणा कि कोरोना काल में सभी गाड़ियां शत प्रतिशत समय पर चलीं, के साथ यह भी बताया जाना आवश्यक था कि कोरोना काल में बड़ी संख्या में गाड़ियां निरस्त थीं. भारत ब्रिटिश काल में आयुध निर्माण का केंद्र था. अविश्वसनीय पडोसी और चार युद्धों से सीख लेकर हमने रक्षा उत्पादन को स्वदेशी करने की बजाय रक्षा सौदों में अधिक रूचि ली जिसके स्पष्ट कारण थे. आयात पर निर्भरता कम करने के प्रयास हुए हैं, वॉर ग्रेड स्टील का निर्माण देश में शुरू हो गया है लेकिन सत्य यह है कि हम आज भी रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में दूसरे नंबर के आयातक हैं. पहला नंबर यूक्रेन का है. कृषि के क्षेत्र में अन्नदाता, मुआवजा और बोनस और भावान्तर जैसे शब्दों के पार हमें एक स्पष्ट कृषि नीति की आवश्यकता है. किसी एक जिंस के भाव एक वर्ष अच्छे आने पर अगले वर्ष उसी फसल का क्षेत्र बढ़ना स्वाभाविक है. हम आज खादयान्न उपज में आत्म निर्भर हैं, यह संतोष का विषय है लेकिन यह संतोष दीर्घजीवी हो यह आवश्यक है. मृदा की गिरती गुणवत्ता और पानी की उपलब्धतता एक बड़ी चिंता का विषय है. किसान की आय दुगनी करना एक दिवास्वप्न नहीं है, लेकिन उसके लिए एक स्पष्ट नीति की आवश्यकता है जिसमे फसलों की विविधता, जैविक खेती, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और निर्यात अनिवार्य कारक हैं. मोटे अनाज और हमारी पारम्परिक देसी किस्में संकट में हैं, उन्हें बचाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये. रबी में गेहूं के भण्डारण की कमी हमारी चिंता का विषय होनी चाहिये. फसलों पर दवाओं के प्रभाव को कम करने की आवश्यकता है. आज भटिंडा से बीकानेर चलने वाली रेल का नाम कैंसर एक्सप्रेस है जो पंजाब के मालवा क्षेत्र में अंधाधुंध कीटनाशकों के प्रयोग से होने वाले कैंसर रोगियों से भरी है. क्या देश के कोने कोने से कैंसर एक्सप्रेस चलना हमारी कृषि की समझदारी को रेखांकित नहीं कर रहा. हर गली मोहल्ले में योग के कक्षाएं चल रही हैं, पूजास्थलों पर भीड़ है लेकिन हमारा सामाजिक व्यवहार चिंता का विषय है जिसमे रेलवे प्लेटफॉर्म पर एक आलू बड़े वाला एक यात्री की मंहगी घडी उतरवा लेता है क्योंकि उस यात्री का सामान खरीदने के बाद यूपीआई नहीं चला और उसके पास नकद नहीं था, सड़क पर साइड न देने पर गोली मारना, नकली दूध, नकली मावा तक सहा जाने के बाद भेलपूरी की चटनी में सल्फ्यूरिक एसिड का प्रयोग और सरकारी अस्पतालों के शव गृह से बची बर्फ का प्रयोग फुटपाथ पर शरबत में होना, एक गंभीर चिंता का विषय है. कर्तव्यबोध की कमी को पूरा करना ही, एक सुदृढ़ और समृद्ध भारत की आधारशिला बन सकता है. ■

– मो. 9425011865. Email : deepak_bhasin35@hotmail.com

अरस्तू - प्रासंगिक है आज भी

2300 वर्ष पूर्व दार्शनिक अरस्तू ने प्रजातंत्र में निहित खतरों के बारे में चेतावनी दी थी. उसने कहा जब प्रजातंत्र संतुलन खोता है तो वह और सुदृढ़ नहीं होता, वह खतरनाक हो जाता है. अपनी पुस्तक पॉलिटिक्स में अरस्तू कहते हैं कि प्रजातंत्र तब तक सफल रहता है जब तक भावनाओं के मुकाबले नियम अधिक कड़े होते हैं. जब भावनाएं महत्व पाती हैं तो भीड़ तंत्र का प्रादुर्भाव होता है जब भीड़ निर्णायक होती है तब नियम कायदे गौण हो जाते हैं. इस भीड़ का नेता समस्याओं के समाधान की चर्चा नहीं करता वह क्रोध की बात करता है, वह भीड़ की सराहना करता है, नियमों और संस्थाओं को दोषी बताता है, और हर उस व्यक्ति को दोषी बताता है जो उसका विरोध करता है. जब भीड़ किसी को नेता मानती है तो संस्थाएं बेमानी हो जाती हैं और नियम विकल्प बन जाते हैं. ऐसी स्थिति में प्रजातंत्र केवल कागज पर लिखी चीज रह जाता है, उसकी आत्मा जा चुकी होती है. अरस्तू इसका हल बताते हैं, पहला, एक विशाल मध्यम वर्ग जो रेखा के किसी अंतिम और प्रारंभिक बिंदु पर नहीं रहता, उसका मध्य में होना किसी हेराफेरी के प्रति उसका संवेदनशील होना बताता है. अरस्तू कहते हैं, प्रजातंत्र एकाएक ध्वस्त नहीं होता, इसका क्षरण धीमे धीमे होता है, तालियों की गड़गड़ाहट के शोर के बीच. अरस्तू कहते हैं जब कोई नेता कहता है, अदालत एक अवरोध है, संस्थाएं भी अवरोध हैं, सिर्फ मुझपर विश्वास करो. प्रजातंत्र एक मौन मौत नहीं मरता, वह मरता है उन्माद, नारों और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ. ■

कर्तव्य

– दिलीप कुमार जैमिनी

साधारणतः कर्तव्य शब्द का अभिप्राय उन कार्यों से होता है, जिन्हें करने के लिए व्यक्ति नैतिक रूप से प्रतिबद्ध होता है। इस शब्द से वह बोध होता है कि व्यक्ति किसी कार्य को अपनी इच्छा, अनिच्छा या केवल बाह्य दबाव के कारण नहीं करता है अपितु आन्तरिक नैतिक प्रेरणा के ही कारण करता है। अतः कर्तव्य के पार्श्व में सिद्धान्त या उद्देश्य के प्रेरणा है। उदाहरणार्थ संतान और माता–पिता का परस्पर सम्बन्ध, पति–पत्नी का सम्बन्ध, सत्यभाषण, आस्तेय (चोरी न करना) आदि के पीछे एक सूक्ष्म नैतिक बंधन मात्र है। कर्तव्य शब्द में ''कर्म' और ''दान' इन दो भावनाओं का सम्मिश्रण है। इस पर निःस्वार्थता का अस्फुट छाप है। कर्तव्य मानव के किसी कार्य को करने या न करने के उत्तरदायित्व के लिए दूसरा शब्द है। कर्तव्य दो प्रकार के होते हैं– नैतिक तथा कानूनी। नैतिक कर्तव्य वे हैं जिनका सम्बन्ध मानवता की नैतिक भावना, अंतःकरण की प्रेरणा या उचित कार्य की प्रवृत्ति से होता है। इस श्रेणी के कर्तव्यों का सरंक्षण राज्य द्वारा नहीं होता। यदि मानव इन कर्तव्यों का पालन नहीं करता तो स्वयं उसका अन्तःकरण उसको धिक्कार सकता है, या समाज उसकी निन्दा कर सकता है किन्तु राज्य उन्हें इन कर्तव्यों के पालन के लिए बाध्य नहीं कर सकता। सत्यभाषण, संतान संरक्षण, सद्व्यवहार, ये नैतिक कर्तव्यों के उदाहरण हैं। कानूनी कर्तव्य हैं जिनका पालन न करने पर नागरिक राज्य द्वारा निर्धारित दंड का भागी हो जाता है। इन्हीं कर्तव्यों का अध्ययन राजनीतिक शास्त्र में होता है। हिन्दू राजनीति शास्त्र में अधिकारों का वर्णन नहीं है। उसमें कर्तव्यों का ही उल्लेख हुआ है। कर्तव्य ही नीतिशास्त्र के केन्द्र हैं ।

अधिकार और कर्तव्य का बड़ा घनिष्ठ संबंध है। वस्तुतः अधिकार और कर्तव्य एक ही पदार्थ के दो पार्श्व हैं। जब हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति का अमुक वस्तु पर अधिकार है, तो इसका दूसरा अर्थ यह भी होता है कि अन्य व्यक्तियों का कर्तव्य है कि उस वस्तु पर अपना अधिकार न समझकर उसपर उस व्यक्ति का ही अधिकार समझें। अतः कर्तव्य और अधिकार सहगामी हैं। जब हम यह समझते हैं कि समाज और राज्य में रहकर हमारे कुछ अधिकार बन जाते हैं तो हमें यह भी समझना चाहिए कि समाज और राज्य में रहते हुए हमारे कुछ कर्तव्य भी हैं। अनिवार्य अधिकारों का अनिवार्य कर्तव्यों से नित्यसंबंध है। फ्रांस के क्रांतिकारियों ने लोकप्रिय संप्रभुता के सिद्धांत को संसार में प्रसारित किया था। समता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व, ये क्रांतिकारियों के नारे थे ही। जनसाधारण को इनका अभाव खटकता था, इनके बिना जनसाधारण अत्याचार का शिकार बन जाता है। आधुनिक संविधानों ने नागरिकों के मूल अधिकारों की घोषणा के द्वारा उपर्युक्त राजनीतिदर्शन को संपुष्ट किया है। मनुष्य की जन्मजात स्वतंत्रता को मान्यता प्रदान की गई है, स्वतंत्र जीवनयापन के अधिकार और मनुष्यों की समानता को स्वीकार किया है। आज ये सब विचार मानव जीवन और दर्शन के अविभाज्य अंग हैं। आधुनिक संविधान निर्माताओं ने नागरिक के इन मूलअधिकारों को संविधान में घोषित किया है। भारतीय गणतंत्र संविधान ने भी इन्हें महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सी.डी. बर्न्स की उक्ति है, फ्रांस की क्रांति ने कोई दान नहीं माँगा, उसने मनुष्य के अधिकारों की माँग की। अधिकार ऐसी अनिवार्य परिस्थिति है जो मनुष्य के विकास के लिए आवश्यक है। अधिकार वे सामाजिक परिस्थितियाँ तथा अवसर हैं जो मनुष्य के व्यक्तित्व के उच्चतम विकास के लिए आवश्यक होते हैं। इन्हें समाज इसी कारण से स्वीकार करता है और राज्य इसी आशय से इनका सरंक्षण करता है।

17वीं और 18वीं शताब्दी के यूरोपीय राजनीतिज्ञों का यह अटल विश्वास था कि मनुष्य के अधिकार जन्मसिद्ध तथा उनके स्वभाव के अंतर्गत हैं। वे प्राकृतिक अवस्था में, जब समाज की स्थापना नहीं हुई थी तो तब, मनुष्य को प्राप्त थे। एथेंस के विचारक अरस्तू का भी यही विचार था। 1789 में फ्रांस की क्रांति के उपरांत फ्रांस की राष्ट्रीय सभा ने मानवीय अधिकारों की उद्घोषणा की। समाजवादी दर्शन ने इन अधिकारों का क्षेत्र और भी विस्तृत कर दिया है। सोवियत संघ ने अपने सामाजिक अधिकारों में इन अधिकारों को प्रमुख स्थान दिया है। आधुनिकतम सभी संविधानों में इन अधिकारों का समावेश है। नागरिक के मूल अधिकारों में इनकी गणना है। यह जाति और नर–नारी की समानता का युग है। नागरिक अधिकारों में इन्हें भी स्थान प्राप्त हो गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इन मानवीय अधिकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर एक विस्तृत सूची बनाई। नागरिक अधिकारों के संबंध में बदलती हुई समाजिक और राजनीतिक प्रक्रिया की छाप उसपर स्पष्ट है।

आज समय की आवश्यकता है कि इन अधिकारों के बराबर कर्तव्यों के पालन पर भी बल दिया जाये। अनेक यूरोपीय देशों में आज भी और हमारी प्राचीन गुरूकुल व्यवस्था में भी बचपन से ही अक्षरज्ञान न कराकर, बच्चों को नैतिक शिक्षा के माध्यम से उनके कर्तव्यों की शिक्षा दी जाती थी। हमने अपनी प्राचीन परम्परा में जो खोया है आज उसे पुनर्जीवित करने की जरूरत है। ■

(लेखक सेवानिवृत्त बैंक कार्यपालक हैं)

जो गुणी होते हैं वे अपनी जिम्मेदारियों की बात सोचते हैं, जो गुणहीन होते हैं वे अपने अधिकारों का नाम रटा करते हैं।

– कवीन्द्र रवीन्द्र

मौलिक कर्तव्य

ये मौलिक कर्तव्य मुख्य रूप से पूर्व सोवियत संघ के संविधान से प्रेरित थे। भारत में कुल 11 आवश्यक कर्तव्य हैं। हमें भारतीय संविधान का पालन करना चाहिए। निम्नलिखित 11 मूलभूत कर्तव्यों की सूची है–

1. संविधान का पालन करें और राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करें।
2. स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शों का अनुसरण करें
3. भारत की संप्रभुता और अखंडता की रक्षा करें।
4. देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्रीय सेवाएँ प्रदान करें।
5. आपसी भाईचारे की भावना विकसित करना
6. देश की मिश्रित संस्कृति का संरक्षण करें
7. प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण करें
8. वैज्ञानिक सोच और मानवता का विकास करें
9. सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करें और हिंसा से बचें
10. जीवन के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास करें।
11. 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों को स्कूल भेजना सभी माता–पिता/अभिभावकों का कर्तव्य है।

मौलिक कर्तव्यों के सृजन के पीछे उद्देश्य यह है कि प्रत्येक नागरिक को यह अहसास हो कि सर्वोपरि देश की रक्षा करना और राष्ट्र में सद्भाव को बढ़ावा देना हैय अर्थात, राष्ट्रीय हित प्रत्येक कार्य और लक्ष्य से ऊपर होना चाहिए। भारतीय मौलिक कर्तव्यों में भारतीय संविधान का पालन करना, हमारे ध्वज का सम्मान करना, राष्ट्रगान के प्रति सम्मान की भावना रखना और सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना शामिल है। इस संविधान में, 1976 के 42वें संशोधन अधिनियम के माध्यम से, नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों को सूचीबद्ध किया गया था। संविधान के भाग IV में निहित अनुच्छेद 51 'ए' मौलिक कर्तव्यों से संबंधित है। ■

सामाजिक सरोकार बाकी हैं अभी

– अहमदाबाद में डिजिटल अरेस्ट की शिकार एक महिला बैंक में अपनी जमा रसीदों के भुगतान के लिये पहुँचती है. शाखा प्रबंधक को पूछताछ के समय संदेह हुआ कि महिला ग्राहक लगातार वीडियो कॉल पर है. शाखा प्रबंधक ने पुलिस बुला ली और महिला ठगे जाने से बची.

– तेलंगाना की एक निर्धन छात्रा को मेडिकल में पीजी करने में प्रवेश तो मिला लेकिन उसे 3 वर्ष तक प्रतिवर्ष साढ़े सात लाख रुपयों के ऋण की आवश्यकता थी और बैंक इतने ऋण के लिये प्रतिभूति चाहता था. बीआरएस से विधायक हरीश राव के ध्यान में यह बात आयी तो उन्होंने अपना निजी घर बैंक के पास गिरवी रखकर छात्र के शिक्षा ऋण मिलना सुनिश्चित किया.

– मुंबई की चेम्बूर एजुकेशनल सोसाइटी की स्पृहा इंदु ने बच्चों में गणित विषय के प्रति भय को दूर करने और इस विषय को रोचक बनाने का महत्वपूर्ण काम किया. गणित शिक्षा का इंदु का तरीका इतना प्रभावी है कि इस तरीके को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण संस्थान (एनसीईआरटी) ने मान्यता दी. स्पृहा को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्रशंसा और पुरुस्कारों से अलंकृत किया गया है. ■

पक्षी संरक्षक - संदीप धौला

संदीप का कहना है कि ''पक्षियों के पास कोई डॉक्टर नहीं है इंसान तो पानी फिल्टर लगाकर पी लेगा, अगर बीमार हुआ तो डॉक्टर के पास चला जाएगा, पर पक्षियों के लिए कुछ भी नहीं है।'' और इसी चिंता के साथ वह पिछले 9 सालों से इन बेजुबान परिंदों के लिए आशियाना बनाने, उनके दाना–पानी का इंतजाम करने और पेड़ लगाने का काम कर रहे हैं। अब तक वह देशभर में करीब 70,000 घोंसले लगा चुके हैं। और यह सिलसिला 2002 में तब शुरू हुआ जब उनका अपना पक्का मकान बना। उन्होंने देखा धीरे–धीरे पक्षी घट रहे थे, तब उन्होंने गांव के बुजुर्गों से पूछा कि यह पक्षी कम क्यों हो रहे हैं, बुजुर्गों ने बताया पहले कच्चे घर में पक्षी अपनी वंशवृद्धि करते थे और बड़े पेड़ों की होल में ये अपने घर बनाते थे। अब काफी घर पक्के हो गए, पेड़ कटने लगे इसलिए ये पक्षी प्रजनन नहीं कर पा रहे हैं इसलिए संदीप ने घोंसले लगाने शुरू किए। कई लोगों ने उन्हें यह तक कहा कि वह घोंसले लगाकर पक्षियों को आलसी बना रहे हैं लेकिन संदीप लोगों को समझाते कि वह तो बस पक्षियों को एक जगह दे रहे हैं घोंसले तो वे खुद ही बनाते हैं। पक्षियों को घोंसले बनाने के लिए तिनके मिल सके इसलिए संदीप झाड़ी वाले पौधे भी लगाते हैं। यह संदीप के प्रयासों का परिणाम ही है कि आज पंजाब में उनके गांव के हर घर और घर के खम्भे पर पक्षी का घोंसला बना है और पक्षियों की संख्या कई गुना बढ़ चुकी है। सच, संदीप जैसे पक्षी प्रेमी के कारण ही इंसानों और पक्षियों की दोस्ती आज भी कायम है। ■

महिलाएं जिन्होंने कर्तव्य के नए आयाम स्थापित किए

– रूचिता तुषार नीमा

ग्रेगोरियन केलेण्डर अनुसार नववर्ष 2026 का आगमन हो चुका है। आज दुनिया जिस नए स्वरूप में दिखाई देती है, उसके पीछे अनगिनत लोगों के अलग अलग तरह के योगदान है। ये योगदान अलग अलग क्षेत्रों में है जैसे शिक्षा का नया स्वरूप हो या खेल के मैदान। समाज में जागरूकता फैलाना हो या किसी महामारी का सामना करना हो। ये परिवर्तन ही नई दुनिया की नींव बनाते हैं। इसी तरह जब आज के एक नए हिंदुस्तान की बात होती है तो हम देखते हैं कि पुरुषों के साथ साथ महिलाओं ने भी अपने कर्तव्य का पूरी ईमानदारी से पालन कर देश को नई दिशाएं प्रदान की है।भारतीय महिलाएं हमेशा से ही सौंदर्य, शक्ति और बुद्धिमत्ता की मिसाल रही हैं। आज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि उन्होंने यह प्रतिष्ठा पूरी तरह से अर्जित की है। ऐसी अनेक महिलाएं हैं, जिन्होंने अपने परिश्रम, लगन और संघर्ष से समाज में नई विचारधाराएं दी है और देश की उन्नति में अपना योगदान दिया है। भले ही ये महिलाएं अलग अलग क्षेत्र में सक्रिय रही हैं, लेकिन इन सभी के संघर्ष सराहनीय है। आज कुछ ऐसी ही विशेष प्रतिभाशाली और समाज की जागृति में सहायक महिलाओं पर एक दृष्टि डालते है

1. पद्मश्री श्री सिंधुताई सपकाल – 2021 में पद्म श्री से सम्मानित सिंधु श्रीहरि सपकाल, जिन्हें प्यार से लोग सिंधुताई के नाम से बुलाते है। समाज में अपने संघर्ष और अनाथ बच्चों के लिए किए महत्वपूर्ण कार्य के लिए प्रसिद्ध है। घोर गरीबी, पारिवारिक जिम्मेदारियों और एक बड़े उम्र के व्यक्ति से बाल विवाह के कारण उन्हें चौथी कक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के बाद औपचारिक शिक्षा छोड़नी पड़ी। बाद में मात्र 20 वर्ष की आयु में पति द्वारा घर से निकाले जाने के बाद भीख मांगकर अपनी और अपनी बेटी के लिए भोजन की व्यवस्था करती थी। तब उन्हें एहसान हुआ कि ऐसे बहुत से बच्चे है, जिनके माता पिता नहीं है, तो उनकी भी भोजन की व्यवस्था सिंधुताई स्वयं करने लगी। इसके लिए उन्हें और ज्यादा भीख मांगनी पड़ती थी। सिंधुताई सपकाल को ''अनाथों की माँ'' कहा जाता है, और यह उपाधि उनके समर्पण, ममता और निस्वार्थ सेवा को पूरी तरह दर्शाती है। उन्होंने अपने जीवन में असहाय, त्यागे हुए और अनाथ बच्चों को मां की ममता और पिता की सुरक्षा दी। उन्होंने एक–एक करके बच्चों को गोद लेना शुरू किया, उन्हें प्यार, सुरक्षा, शिक्षा और एक सम्मानजनक जीवन दिया। उनके द्वारा पाले गए बच्चे आज डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक और समाजसेवी बन चुके हैं। उन्होंने अपनी संस्था ''सांवली ममता बाल निकेतन'' के माध्यम से हजारों बच्चों को नया जीवन दिया। सिंधुताई ने कभी अपने जैविक बच्चों के साथ भेदभाव नहीं किया, बल्कि सभी को समान स्नेह दिया। उनके जीवन से यह सीख मिलती है कि सच्ची मां वही होती है, जो बिना किसी स्वार्थ के अपने बच्चों को जीवन दे। उनकी सरलता, संघर्ष और सेवा ने उन्हें सिर्फ एक सामाजिक कार्यकर्ता नहीं, बल्कि एक युगप्रेरणा बना दिया। देशभर में उन्हें कई पुरस्कार मिले, लेकिन लोगों के दिलों में उनका स्थान सबसे ऊंचा रहा। हम सबको गर्व है ऐसी दादी माँ पर, जिन्होंने ममता की नई परिभाषा गढ़ी। सिन्धुताई को कुल 273 राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें ''अहिल्याबाई होलकर'' पुरस्कार है जो स्त्रियों और बच्चों के लिए काम करनेवाले समाजसेवियों को महाराष्ट्र सरकार द्वारा दिया जाता है।

2. तुलसी गौडा – पद्म श्री तुलसी गौड़ा का जन्म 1944 में होन्नाल्ली गांव के हलक्की आदिवासी परिवार में हुआ था।वो अपनी मां के साथ एक स्थानीय नर्सरी में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करती थी। उन्होंने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की। इसके बावजूद उन्होंने 30,000 से अधिक पौधे लगाए और वन विभाग की नर्सरियों की देखरेख की। उनके कार्यों को भारत सरकार और अन्य संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है। 2021 में, भारत सरकार ने उन्हें देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया। उन्होंने स्थानीय समुदायों को जंगलों और उनके संसाधनों के संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित किया। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका को उजागर किया और इसे आर्थिक सशक्तीकरण से जोड़ा। उन्होंने पर्यावरण की रक्षा के लिए समुदाय को शामिल किया। इससे सामूहिक जिम्मेदारी की भावना विकसित हुई और लोग स्वयं पहल करने के लिए प्रेरित हुए। किसी भी प्रजाति के वृक्ष की मातृ वृक्ष को पहचानने की उनकी क्षमता के कारण उन्हें ''वन का विश्वकोश'' कहा जाता है।

3. ऊषा चौमर– कभी घर–घर जाकर मैला ढोने का कार्य करने वाली उषा चौमर ने आज न केवल खुद को उस दलदल से बाहर निकाला, बल्कि अपने साथ की कई महिलाओं का भी जीवन संवारा है। उन्होंने सुलभ संस्था से जुड़कर इन महिलाओं को एक नई दिशा दी। आज यह महिलाएं अन्य कार्य करके बेतहर तरीके से अपना जीवन यापन कर ही रही हैं। साथ ही समाज में लोगों को भी संदेश दे रही हैं कि आज के समय में जातिगत भेदभाव के लिए जगह नहीं होनी चाहिए। आज उषा चौमर अलवर में संचालित नई दिशा संस्थान के माध्यम से 115 महिलाओं को रोजगार से भी जोड़ रही हैं। उषा ने बताया कि सुलभ संस्था से जुड़ने के बाद वह कई देशों में भी यात्रा कर चुकी हैं. यहां उन्होंने जाना कि विदेशों में साफ सफाई किस तरह रखी जाती है। स्वच्छता के क्षेत्र में बेहतर

कार्य के लिए उन्हें 2021 में राष्ट्रपति की ओर से पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है. उन्होंने महिलाओं को संदेश दिया कि यदि महिला घर से बाहर निकल कर सही राह चुनें तो वह कुछ भी मुमकिन कर सकती हैं.

4. मानसी प्रधान – मानसी प्रधान एक लेखिका और कवयित्री हैं, जिन्हें महिला अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए 2013 में रानी लक्ष्मीबाई स्त्री शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। ओडिशा राज्य के एक गरीब परिवार में जन्मीं मानसी प्रधान प्रतिदिन 15 किलोमीटर की यात्रा करके अपने क्षेत्र के एकमात्र विद्यालय में पढ़ती थीं। वे अपने गाँव की पहली महिला थीं जिन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त की। उन्हें संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन और राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा 2011 में दिए गए 'उत्कृष्ट महिला पुरस्कार' सहित कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वे निर्भया वाहिनी और ओवाईएसएस महिला की संस्थापक हैं और भारत में महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने के लिए चलाए जा रहे राष्ट्रव्यापी अभियान 'ऑनर फॉर वुमेन नेशनल कैंपेन' का नेतृत्व करती हैं। वे भारत के केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सेंसर बोर्ड) के पैनल में भी कार्यरत हैं। वे विश्व महिला संगठन (डब्ल्यूडब्ल्यूओ) की अंतर्राष्ट्रीय शासी परिषद और राष्ट्रीय महिला आयोग की जांच समिति की सदस्य हैं।

5. नसीम बानो – लखनऊ की रहने वाली नसीम बानो इकलौती ऐसी महिला हैं जो अनोखी चिकनकारी करती हैं। इनके कपड़े पर चिकनकारी इतनी बारीक तरीके से की जाती है कि दोनों तरफ से चिकनकारी की डिजाइन एक जैसी ही लगती है। यही वजह है कि इस अनोखी कला और अनोखी चिकनकारी के लिए इन्हें पद्मश्री सम्मान से नवाजा गया है। इन्होंने अपनी इस कला से 5000 से ज्यादा लोगों को प्रशिक्षित कर रोजगार दिलाने में सहायता दी है। और अपनी इस कला का प्रदर्शन देशभर के साथ साथ विदेशों में कर के देश को गौरवांवित किया है।

एसी विलक्षण महिलाओं के अलावा भी ऐसी अनेक भारतीय महिलाएं है, जिन्होंने जमीनी स्तर पर संघर्ष करके समाज के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किए हैं। अपने कर्तव्य का बोध होना और फिर उस दिशा में सार्थक पहल करना ही मनुष्य जीवन का विशेष लक्ष्य होता है, और जब एक महिला स्वयं को कमजोर और असहाय न समझकर, संघर्ष करके अपने कर्तव्य का पालन कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करती है तो उसे निश्चित ही नमन किया जाना चाहिए। ऐसी सभी महान विभूतियों को जिन्होंने अपने कर्तव्य को पहचान कर उनका निस्वार्थ भाव से पालन किया, हम दिल से नमन करते हैं। ■

ई मेल – tushar.rn86@gmail.com

कर्तव्य पथ के नायक - मोहम्मद ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती

दृष्टि दिव्यांगों की साक्षरता में बहुत कठिनाइयां आती हैं. ब्रेल लिपि में कौशल प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षक आवश्यक होता है. इन कठिनाइयों को देखते हुए विशाखापत्तनम के एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चिश्ती ने लर्निंग असिस्टेंट एम्बेडेड किट विकसित की है जिसकी सहायता से दृष्टिबाधित व्यक्ति घर पर ही ब्रेल लिपि सीख सकते हैं. इसमें एक हेल्प मी बटन है जो शिक्षक को सचेत करता है. इस किट की कई विषेषताऐं हैं। यह किट दृष्टिबाधित बच्चों को ब्रेल अक्षरों और संख्याओं को आसानी से सीखने में सक्षम बनाती है। डिवाइस में 3 गुणा 2 खोखले अर्धगोलाकार ब्रेल सेल होते हैं, जो छात्रों द्वारा बनाए गए उभरे हुए पैटर्न का सटीक पता लगाने के लिए सेंसर से लैस हैं। जब कोई छात्र सही पैटर्न बनाता है, तो सिस्टम उस अक्षर या संख्या को ऑडियो के माध्यम से बोलकर बताता है, जिससे छात्र स्वयं अभ्यास कर सकते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को बिना किसी शिक्षक की तत्काल सहायता के, अपनी गति से सीखने में सशक्त बनाना है, जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है। इसमें एक विशेष ''हेल्प मी'' बटन भी शामिल है। जब छात्र को सहायता की आवश्यकता होती है, तो वे इसे दबा सकते हैं, जिससे शिक्षक को अलर्ट मिल जाता है और कक्षा प्रबंधन आसान हो जाता है। चिश्ती ने इसे कम लागत वाला उपकरण बनाने पर ध्यान केंद्रित किया है, ताकि भारत में बड़ी संख्या में दृष्टिबाधित छात्र इसका लाभ उठा सकें। इस नवाचार के लिए पेटेंट हेतु आवेदन किया गया है। यह किट भारत में कम ब्रेल साक्षरता दर (लगभग 1 प्रतिशत) की चुनौती को संबोधित करती है और समावेशी शिक्षा में एक महत्वपूर्ण कदम है।■

अनाथ बच्चों की आशा कपिल कुटीर

तेलंगाना के करीमनगर में बना कपिल बालकोटी अनाथ बच्चों के लिए आशा की नई किरण बन गया है. यहां बच्चे न केवल सिर्फ पढ़ाई कर रहे हैं बल्कि आत्मविश्वास और सपनों की उड़ान भी भर रहे हैं. वर्ष 2022 में स्थापित यह संस्था कोविड महामारी के दौरान माता–पिता को चुके बच्चों को शिक्षा और आवास दे रही है. अब तक इस ट्रस्ट ने 10,000 से अधिक छात्रों को 13 करोड रुपए की छात्रवृत्ति दी है। संस्था प्रतिभाशाली बच्चों की सिविल सेवा तक की पढ़ाई का खर्च उठाती है ■

भारत में संसाधन और स्वास्थ्यबोध

140 करोड़ भारत के लोगों के लिए बनी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली एक विविध एवं जटिल संरचना है जिसमें सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्र आते हैं. हेल्थ केयर मैनेजमेंट रिव्यु के एक अध्ययन के अनुसार, मूल्य सीमा से उत्पन्न वित्तीय दबाव में अस्पतालों ने रोगी असंतोष में 15 प्रतिषत की वृद्धि दर्ज की. आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23 के अनुसार, स्वास्थ्य सेवा पर भारत का सार्वजनिक व्यय वित्त वर्ष 23 में सकल घरेलू उत्पाद का 2.1 प्रतिषत और वित्त वर्ष 22 में 2.2 प्रतिषत रहा, जो वित्त वर्ष 21 में 1.6 प्रतिषत रहा था। जापान, कनाडा और फ्राँस जैसे देश स्वास्थ्य पर अपने सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 10 प्रतिषत खर्च करते हैं। वर्ष 2024 तक स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र भारत के सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक बना हुआ है, जो लगभग 8 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार देने की क्षमता रखता है. चिकित्सा पर्यटन, टेलीमेडिसिन बाजार जैसे क्षेत्रों में भारत अपार संभावनाओं का मंच है. लेकिन इस क्षेत्र की एक बड़ी चुनौती सुदूर क्षेत्रों तक पहुँच, संक्रामक रोगों से निपटना और अपर्याप्त अवसंरचना और शहरी–ग्रामीण असमानताएँ एक बड़ी चुनौती हैं. 75 प्रतिषत से अधिक स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर महानगरीय क्षेत्रों में केंद्रित हैं (जो कुल जनसंख्या का 27 प्रतिषत हैं.) और ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा पेशेवरों की गंभीर कमी है. वर्ष 2021 के 'नेशनल हेल्थ प्रोफाइल' के अनुसार, भारत में प्रति 1000 जनसंख्या पर मात्र 0.6 बिस्तर उपलब्ध हैं।

स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों की कमी : विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़ों के अनुसार, भारत में प्रति 1000 व्यक्तियों पर केवल 0.8 चिकित्सक उपलब्ध हैं, जो प्रति 1000 व्यक्तियों पर 1 चिकित्सक के अनुशंसित अनुपात से कम है। सरकार के आँकड़ों के अनुसार, मार्च 2022 तक ग्रामीण भारत के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में सर्जन, फिजिशियन, स्त्री रोग विशेषज्ञों और बाल रोग विशेषज्ञों की लगभग 80% कमी की स्थिति थी। गैर–संचारी रोगों में वैश्विक स्तर पर तीव्र वृद्धि देखी गई है, जो विकलांगता, रुग्णता और मृत्यु दर के प्रमुख कारण के रूप में उभर रहे हैं। भारत इसका अपवाद नहीं है. जन औषधि योजना, टेलीमेडिसिन और ई–स्वास्थ्य सेवाएँ और मिशन इंद्रधनुष के अतिरिक्त राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग, प्रधानमंत्री राष्ट्रीय डायलिसिस कार्यक्रम जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम जैसे कुछ कदम स्थिति में सुधार के लिए प्रयासरत हैं. प्रौद्योगिकी नवाचार और अवसंरचना में निवेशः प्रौद्योगिकी स्वास्थ्य सेवा में क्रांति ला रही है, AI के माध्यम से निदान को द्रुत एवं अधिक सटीक बना रही है और इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड के माध्यम से देखभाल समन्वय में सुधार कर रही है। कर्नाटक में टेलीमेडिसिन पहल से अस्पताल आने वाले रोगियों की संख्या में 40 प्रतिशत की कमी आई है।■

इतिहासबोध को चाहिये वैज्ञानिक आधार

भारत में गौमूत्र चिकित्सा, उसके शास्त्रीय प्रमाण उपलब्ध हैं. गौमूत्र चिकित्सा को मजाक में उड़ाए जाने के पहले यह जानना आवश्यक है कि गौमूत्र का पेटेंट हो चुका है. और तो और मूत्र चिकित्सा के वैज्ञानिक आधार स्वरुप प्रेमारिन जो घोड़ी के मूत्र से बनता है (इसका नाम प्रेग्नेंट मेयर अर्थात घोड़ी से आता है) एक बहुत बड़ा ब्रांड है. दूसरी तरफ यूरोकेन से जो 1950 में मानव मूत्र से बनाई गयी आज एक ब्रांड है जिसका मानव चिकित्सा में प्रयोग होता है.

यदि शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल व्यवस्था और लार्ड मेकाले को कोसने की बजाय इस बात पर विचार क्यों नहीं हुआ कि हम उस व्यवस्था को आज प्रायोगिक रूप से पुनः स्थापित कर के देखें कि हम कितने भीम और अर्जुन उत्पन कर पाते हैं ? हमारे इतिहास के अनेक प्रमाण आज भी हैं जो शोध मांगते हैं कि लोहे का एक प्राचीन खम्भा आज भी बिना जंग लगे कैसे खड़ा है, क्या उस का धातुशास्त्र शोध का विषय होना चाहिए कि वह कैसे बना और आज उसके निर्माण की पुनरावृत्ति हो सकती है क्या ? खगोल में भारत का प्राचीन ज्ञान बहुत विकसित था इसमें संदेह नहीं, लेकिन वर्तमान समय के विज्ञान और खगोल के समकक्ष आने के लिए हमें एक वैज्ञानिक सोच विकसित करनी होगी जिसके लिए हमारे संसाधन अपर्याप्त हैं. ढाका की मलमल का पुनर्निर्माण संभव है या नहीं इसपर कोई शोध क्यों आवश्यक नहीं है प्रश्न यह है. कौन सा वह कौशल था जो लुप्त हो गया, इस बात का महत्व नहीं है, वह था और आज उसे कैसे विकसित किया जा सकता है इसका प्रयास आवश्यक क्यों नहीं है ? दूसरी तरफ विमान शास्त्र में विमान निर्माण की तकनीक लिखी होने की बात तब ही सिद्ध होती है जब आज कोई विमान शास्त्र पढ़कर सारे संसाधन और विज्ञान आज उपलब्ध हैं, एक कार्यशील विमान का निर्माण करे. हमारा इतिहासबोध स्पष्ट होने की आज बहुत आवश्यकता है. कोरोना काल में आयुर्वेद और ऐलोपैथी के बीच (बाबा रामदेव और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन) के बीच विवाद का कोई तार्किक हल निकले इसके लिये आवश्यक है कि हमारा इतिहासबोध प्रमाणित वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हो. यही एक मार्ग है देश को अतीत के गर्व से भरपूर ऊर्जा देने का, जो हमारा मार्ग सुनहले भविष्य की तरफ प्रशस्त करे.■

कर्तव्यपथ के नायक-शिक्षक

एक तरफ कभी मध्य प्रदेश के मंडला जिले के एक सरकारी शिक्षक का नशे में धुत्त स्थिति में बच्चों को पढ़ाने का वीडियो सोशल मीडिया पर आता है, कभी बिहार में कोई कलेक्टर किसी सरकारी स्कूल में शिक्षक से छोटा सा प्रश्न पूछकर उत्तर नहीं पाता, कभी अपनी जगह पर किसी अन्य व्यक्ति को शिक्षक के रूप में नौकरी पर रखने का समाचार आता है, लेकिन कर्तव्य पथ पर चलने वाले शिक्षक आज भी हैं, जो इस अन्धकार में प्रकाश की किरण हैं, कुछ उदाहरणः

– 42 वर्षीय दर्शना चौधरी राजस्थान के कटइलपुरा से सुबह निकलती हैं. उनका गंतव्य होता है बसेड़ी सरकारी स्कूल जहाँ वे पहली से आठवीं तक के छात्रों को पढ़ाती हैं. स्कूल तक के लिए कोई साधन या सड़क नहीं है. दर्शना दैनिक रूप से 5 किलोमीटर दूर इस स्कूल पैदल पढ़ाने जा रही हैं.

– रणजीत सिंह दिसले ने अपनी कल्पनाशक्ति और समर्पण से महाराष्ट्र के परीते वाड़ी नामक एक आदिवासी क्षेत्र के ग्रामीण स्कूल का काया पलट कर दिया. इस स्कूल में बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए उन्होंने बच्चों के पालकों से संपर्क किया और बच्चों को स्कूल की तरफ आकर्षित करने के लिए अपने लैपटॉप में बॉलीवुड की लोकप्रिय फिल्में तक दिखाईं. आज स्कूल में छात्रों की उपस्थिति 100 प्रतिशत को छू रही है. इस आदिवासी गाँव की बेटियां आज मुंबई तक में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं. वर्ष 2015 में तकनीक के शिक्षा में उनके नवाचार को देखते हुए माइक्रोसॉफ्ट ने उनका माइक्रोसॉफ्ट इन्नोवेटर एडुकेटर के रूप चयन किया. 2017 तक वे स्काइप पर वे शिक्षण के 1483 सत्र पूरे कर चुके थे. उनको जब ग्लोबल टीचर पुरुस्कार से सम्मानित किया तो उन्होंने लाखों डॉलर के पुरुस्कार का आधा उन प्रतियोगियों में बाँट दिए जो उनके साथ इस स्पर्धा के फाइनल में पहुंचे थे.

– तमिलनाडु के तिरुवल्लुर में एक स्कूल से जब 28 वर्षीय तमिल भाषा शिक्षक जी भगवान का स्थानांतरण उनके स्कूल से हुआ तो उस स्कूल के बच्चे बिलख उठे. रोते हुए उन्होंने शिक्षक को उनके स्कूल से न जाने का अनुरोध किया. बाद में सोशल मीडिया पर इन सब बातों को देखते हुए, शासन ने उनका स्थानांतरण निरस्त कर दिया.

– पश्चिम बंगाल के पुरुलिया नामक दूरस्थ गाँव में मालती मुर्मू ने शिक्षा के अपरंपरागत तरीके विकसित किये. जब मालती ने यह देखा कि स्कूल बीच में छोड़ने वाले बच्चों की संख्या बढ़ रही है तो उन्होंने बिना शासकीय सहायता की प्रतीक्षा किए उन्होंने अपनी मिटटी की झोपडी को ही स्कूल बना दिया, जो बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देता है. आज यहाँ पर 45 से अधिक बच्चे पढ़ रहे हैं. हालांकि एक सरकारी स्कूल थोड़ी ही दूरी पर है लेकिन बच्चों और उनके पालकों की पहली पसंद मालती का स्कूल है. ■

कर्तव्य की बलिवेदी पर कमीकेज

कामिकेज का शाब्दिक अर्थ जापान में दूसरी विश्वयुद्ध में होता था आत्मघाती विमान दस्ता, वैसे जापान में इसका सही अर्थ है 'दिव्य हवा' या 'आत्मा की हवा'. कामिकेज जापानी विशेष हमला इकाइयों का एक हिस्सा थे, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र देशों की नौसेना के जहाजों के खिलाफ आत्मघाती हमले किए, जिसका उद्देश्य पारंपरिक हवाई हमलों की तुलना में युद्धपोतों को अधिक प्रभावी ढंग से नष्ट करना था. युद्ध के दौरान लगभग जापान के 3,800 कामिकेज पायलटों की मृत्यु हो गई थी. पर्ल हारबर पर तबाही मचाने का एक आत्मघाती कदम जापान के राष्ट्रवाद का उदाहरण है जिसमे हमले के पूर्व पायलट अपने सर के कुछ बाल और नाखून काटकर एक लिफाफे में रखकर उसपर अपना नाम लिखकर जाता था ताकि इन प्रतीकों से उसका अंतिम संस्कार किया जा सके.■

प्रकृति से सामंजस्य बोध-नागांव और कारटंगी आंगलोंग

असम में नागांव और आंगलोंग जिले के 200 गावों में खेती का क्षेत्रफल चार वर्षों में लगभग 13,000 एकड़ से बढ़ गया. कभी पड़ती रही इस भूमि पर एक वर्ष में 30000 मेट्रिक टन धान का उत्पादन हुआ है. यह जंगल से लगे हुए खेत थे जिन पर दशकों से किसानों ने खेती बंद कर दी थी क्योंकि हाथी फसल नष्ट कर देते थे. लेकिन 4 सालों में परिस्थितियों पूरी तरह बदल गई है. जंगल के सबसे समीप के लगभग 100 गांव के 6000 किसान अपने खेत के कुछ हिस्से की फसल हाथियों के खाने के लिए छोड़ देते हैं और खुद उन्हें खाने के लिए आमंत्रित करते हैं. हाथी इन्हीं खेतों से ही धान और दूसरी फसलें खाकर वापस जंगल लौट जाते हैं. हाथियों से इस सामंजस्य के चलते शेष भूमि में खेती में प्रगति हो रही है और शीघ्र यहां के किसानों को खाद बीज के लिए ऋण और अन्य सुविधाओं की मांग उठने लगी है. एक बात और हाथियों से बचाव के लिए हर गांव के बाहर खेतों के बीच 3 महीने के लिए टांगी घर बनाए जाते थे जहां आग जलाकर गांव की युवा पहरा देते थे. इस आग के लिए रोज दो वृक्ष काटे जाते थे. इस पूरे क्षेत्र में हर साल लगभग 300 टांगी घर बनते थे जिनमें 200 वृक्ष जलाए जाते थे इस प्रकार करीब 54000 वृक्ष तो तंगी घरों में आग जलाने के लिए कट जाते थे 4 साल से यहां टांगी घर बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी है इसलिए यहां पर 2 लाख से अधिक वृक्ष काटने से बच गए. प्रकृति से सामंजस्य बोध का यह एक बड़ा उदाहरण है. ■

युवा नवाचार बोध-पूजा

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के सआदतगंज पोस्ट ऑफिस के पोस्टमैन ने अपने साथियों से कहा मैं डाक बांटने पूजा के गांव जा रहा हूं।' पूजा इस गाँव की पहचान बन गयी है. 17 बरस की पूजा भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाती थी। कई सालों तक वह भी अपने स्कूल में गेहूं कटाई के मौसम में उड़ने वाली धूल की शिकार बनी। स्कूलों और घरों के आसपास चलने वाले थ्रेशरों के कारण समूचे इलाके में यह लोगों के लिए, खासकर श्वास रोगों से जुड़ी गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन चुकी थी। उसके स्कूल के समीप के थ्रेशर से रोजाना धूल कक्षा तक पहुंचती थी। बच्चों का पढ़ना, लिखना और यहां तक कि सांस लेना भी मुश्किल हो जाता था। दूसरों की तरह कक्षा–दर–कक्षा पास होती गई पूजा सातवीं में पहुंच गई, जहां बच्चे विज्ञान जैसे विषयों से परिचित होते हैं। उन्हें बताया जाता है कि विज्ञान और तकनीक से आप कई समस्याएं हल कर सकते हो। उसकी समस्या यह थी कि वह स्कूल में पढ़ाई पर ध्यान नहीं लगा पा रही थी। उसे यह भी बताया गया कि गेहूं कटाई और थ्रेशिंग रोके नहीं जा सकते, क्योंकि इसी से गांव की रोजी–रोटी चलती है। कुछ दिन बाद उसने मां को घर पर आटा छानते देखा तो उसे आइडिया आया कि अगर रसोई में किसी जाली से महीन कणों को छाना जा सकता है तो वैसी ही प्रक्रिया थ्रेसिंग के दौरान उड़ने वाली धूल को भी रोक सकती है।

अपने विज्ञान शिक्षक राजीव श्रीवास्तव के साथ उसने एक ऐसे समाधान पर काम शुरू किया, जो व्यावहारिक और सस्ता हो और व्यापक पैमाने पर उपयोग किया जा सके. पूजा द्वारा विकसित कागज और लकड़ी से बने शुरुआती प्रोटोटाइप ठोस नतीजा नहीं दे पाए। लेकिन वह अपनी डिजाइन को सुधारने में जुटी रही। आखिरकार टिन शीट और वेल्डिंग मशीन की मदद से एक कारगर मॉडल बन कर तैयार हो गया। इस नवाचार को 'भूसा–धूल पृथक्करण यंत्र' नाम दिया गया। इसने अनाज अलग करने के दौरान उड़ने वाले ऐसे धूल और सूक्ष्म कणों को प्रभावी तरीके से कम कर दिया, जो फेफड़ों को नुकसान पहुंचाते हैं और श्वास संबंधी बीमारियां बढ़ाते हैं। इसने किसानों और ग्रामीणों का बचाव किया। मॉडल ने गांव के बाहर के लोगों का ध्यान खींचा और पूरे जिले में इसकी चर्चा फैलने लगी। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने मूल्यांकन और मंजूरी के बाद इंस्पायर अवार्ड के तहत इस मॉडल का चयन किया और पूजा को अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर का अवसर मिला. 2025 में उसे जापान साइंस एंड टेक्नोलॉजी एजेंसी की महत्वपूर्ण पहल 'साकुरा साइंस हाई स्कूल प्रोग्राम' के लिए चुना गया। वह देशभर से चुने गए 54 भारतीय छात्रों में उत्तर प्रदेश की इकलौती छात्रा थी। इस कार्यक्रम में विज्ञान के गहन सत्र और टोक्यो का स्टडी टूर शामिल था। इससे पहले, उत्तर प्रदेश सरकार ने उसे बाल वैज्ञानिक के रूप में एक लाख रुपए का पुरस्कार प्रदान किया। 17 साल की पूजा अपने महत्वपूर्ण नवाचार के लिए प्रधानमंत्री बाल पुरस्कार से अलंकृत उन 20 बच्चों में शामिल है, जिन्हें देशभर से इस सम्मान के लिए चुना गया है। पूजा की योग्यता और जरूरत को देखते हुए जिला प्रशासन ने उसके परिवार को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत स्थायी मकान भी अनुमत किया है. ■

कर्तव्यपरायणता

गुजरात में एक प्रसिद्ध वकील रहा करते थे। एक बार वे एक मुकदमा लड़ रहे थे कि गाँव में उनकी पत्नी बीमार हो गई। वे उसकी सेवा करने गाँव पहुचे कि उन्हीं दिनों उनके मुकदमे की तारीख पड़ गई। एक तरफ उनकी पत्नी का स्वास्थ्य था, तो दूसरी और उनका मुकदमा। उन्हें असमंजस में देख पत्नी ने कहा – ''मेरी चिंता न करे, आप शहर जायें। आपके न रहने पर कहीं किसी बेकसूर को सजा न हो जाये।'' वकील साहब दुःखी मन से शहर पहुचे और जब वे अपने मुवक्किल के पक्ष में जिरह करने खड़े हुए ही थे कि किसी ने उनको एक टेलीग्राम लाकर दिया। उन्होंने टेलीग्राम पढ़कर अपनी जेब में रख लिया और बहस जारी रखी। अपने सबूतों के आधार पर उन्होंने अपने मुवक्किल को निर्दोष सिद्ध कर दिया, जो कि वह था भी। सभी लोग वकील साहब को बधाई देने पहुँचे और उनसे पूछने लगे कि टेलीग्राम में क्या लिखा था ? वकील साहब ने जब वह टेलीग्राम सबको दिखाया तो वे अवाक् रह गए। उसमे उनकी पत्नी की मृत्यु का समाचार था। लोगों ने कहा – ''आप अपनी बीमार पत्नी को छोड़कर कैसे आ गए ?'' वकील साहब बोले –''आया तो उसी के आदेश से ही था, क्योंकि वह जानती थी कि बेकसूर को बचाने का कर्तव्य सबसे बड़ा धर्म होता है।'' वे वकील साहब और कोई नहीं, सरदार वल्लभ भाई पटेल थे, जो अपनी इसी दृढ़ कर्तव्यपरायणता के कारण लौह पुरुष कहलाये। ■

सरल भाषा में

कर्तव्य

बिना निजी पसंद नापसंद के विचार से, जिस कार्य को करना देश और समाज हित में है, कर्तव्य माना जा सकता है. आरुणि अगर खेत की मेड़ टूटने से बचने के लिए स्वयं को झोंक देता है, पन्ना धाय राजहित में अपने शिशु को तलवार की धार के नीचे रख देती है, श्री कृष्ण कुरुक्षेत्र में जो बात अर्जुन से कह रहे हैं, कर्तव्य बोध के उदाहरण हैं. ■

सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात

महाराष्ट्र के सोलापुर के अक्कलकोट तहसील का नागिन हेली आश्रम स्कूल हर साल चार बेटियों की शादी में 25–25 हजार देता है. स्कूल की अधिकांश बेटियां उन परिवारों से है जो मजदूर, मजदूरी के लिए पलायन करते हैं या बेहद गरीब हैं जो अक्सर 10वीं 12वीं के बाद माता–पिता उनकी शादी करने की जल्दबाजी करते हैं. ऐसे में यह स्कूल उन्हें जल्दी शादी करने से रोकता है और बालिग होने पर शादी करने पर रू. 25000 की सहायता देता है. स्कूल के संस्थापक जावेद पटेल बताते हैं कि यह योजना 10 साल पहले शुरू की गई थी अब तक 40 बेटियों की शादी कर चुके हैं. इस समय यहां लगभग ढाई सौ छात्राएं हैं. स्कूल के शिक्षकों ने अब तक अनेक नाबालिक बच्चियों को दुल्हन बनने से रोकने में सफलता पाई है और वह छात्रों के पालकों से भेंट कर उन्हें कानून में सजा के बारे में भी समझाते हैं. सामाजिक कुरीति पर कुठाराघात का यह प्रयास प्रशंसनीय है. ■

पुनर्स्थापना प्राचीन ज्ञान परम्परा की

अजंता की गुफाओं में मिले चित्र के आधार पर 2000 साल पुरानी तकनीक से तैयार जहाज कौडिन्य दिसंबर के अंत में पोरबंदर से ओमान जाएगा. लकड़ी के तख्तों और नारियल के रस्सी से सिलकर बनाए गए इस जहाज में एक भी कील नहीं लगी है. जहाज में इंजन और जीपीएस भी नहीं है. इसमें चौकोर सूट के पाल लगे हैं. यह सिर्फ कपड़े के बल के सहारे हवा से चलेगा. हजारों साल पुराने भारत के गौरवशाली समुद्र व्यापार के इतिहास को दर्शाते हुए इस जहाज का नाम महान नाविक कौडिन्य के नाम पर रखा गया है. इस तरह का जहाज चलाने का आज किसी को भी अनुभव नहीं है इसलिए चालक दल के सदस्य पिछले कई महीनो से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं. विश्व को भारत के पुराने जहाज बनाने के कौशल का पता लगे इसके लिए भारत सरकार ने 2023 में इस प्रोजेक्ट को सहमति. गोवा की एक कंपनी ने 2000 साल पुराने तक पद्धति से इस जलयान को तैयार किया है. ■

दुर्लभ बीज संरक्षक- सलाई अरुण

32 वर्षीय सलाई अरुण ने 80 हजार किलोमीटर घूमकर 300 दुर्लभ फल–सब्जियों के बीज एकत्रित किये. तमिलनाडु के एक छोटे से गांव मंगलम के रहने वाले अरुण ने अपनी सारी जमा पूंजी लगाकर बनाया 300 से अधिक दुर्लभ सब्जियों का देसी बीज बैंक बनाने में सफलता पायी. अरुण को बचपन से ही खेती से लगाव था छोटी उम्र में माँ को खोने के बाद वह अपने दादा–दादी के साथ पले–बढ़े और अक्सर अपने दादा को खेती में मदद किया करते थे। लेकिन खेती से उनका प्यार जुनून में तब बदला जब वह 2011 में जैविक कृषि वैज्ञानिक जी नम्मालवर से मिले अरुण ने उनसे ट्रेनिंग ली और एक्सपर्ट बनकर दूसरे किसानों को जैविक खेती सिखाने में लग गए। इस दौरान अरुण ने देखा कि किसानों के पास उगाने के लिए देसी सब्जियों के बीज हैं ही नहीं इसी चिंता के साथ साल 2021 में उन्होंने देशभर में घूमकर बीज इकट्ठा करने का मन बनाया जब उनके पास बचत के नाम पर सिर्फ 300 रुपये थे। ■

कर्तव्यबोध के नायक

– झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले में दिव्यांगता के बाद भी गुलशन लोहार नाम के एक शिक्षक जिनकी दोनों बाहें बचपन से ही नहीं हैं, पैरों में चॉक पकड़कर ब्लैकबॉर्ड पर लिखकर शिक्षण कार्य कर रहे हैं.

– वर्ष 2030 तक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों में निहित संपूर्ण साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम दर्ज किया गया जब छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के 15000 से अधिक वरिष्ठ नागरिक जिनकी आयु 50 से 75 के बीच है ने न्यू इंडिया लिटरेसी परीक्षा उत्तीर्ण की.

– डॉ. लक्ष्मीबाई जो कटक के एक प्रतिष्ठित कॉलेज के प्रथम बैच की एमबीबीएस है ने अपना जीवन वंचित वर्ग की महिलाओं के इलाज में समर्पित किया और अब उन्होंने अपने पूरे जीवन के संचित कमाई 3.4 करोड़ रुपए इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज भुवनेश्वर को दान की ताकि वंचित वर्ग की महिलाओं को कैंसर रोग में बेहतर इलाज सुलभ किया जा सके

– बिहार के गोबरिया गांव में स्वतः स्फूर्त निर्णय के चलते सभी ग्रामवासियों ने दहेज पर प्रतिबंध लगा दिया है इस सामाजिक कुरीति को दूर करने की यह पहला प्रशंसनीय है.

– जब बच्चे विज्ञान और गणित से दूर भागते हैं उनमें इस विषय में रुचि जगाने के लिए पंजाब के शिक्षक 58 वर्षीय जसविंदर सिंह ने अपनी कार को एक चलती फिरती प्रयोगशाला के रूप में परिवर्तित कर छात्रों में विज्ञान और गणित के विषय में रुचि जागृत करने का एक अनूठा प्रयास किया ■

कर्तव्य पथ पर हमारे प्रशासक

एक कठिन परीक्षा उत्तीर्ण कर भारत का प्रशासन सम्हालने वाले हमारे अधिकारी बड़ी संख्या में कर्तव्य पथ पर अनेक कीर्तिमान रच चुके हैं. कुछ उदाहरण :

– आंध्र प्रदेश के पर्वतीपुरम मण्यम जिले के कलेक्टर और प्रभाकर रेड्डी ने आदिवासी और ग्रामीण बच्चों में साफ सफाई की आदत है सुधारने के लिए मस्तबू नामक पहल की. यह विचार उन्हें तब आया जब उन्होंने देखा कि माता–पिता के जल्दी काम पर निकलने के कारण कई बच्चे बिना चेहरा धोएं, बिना बाल हमारे गंदे कपड़ों में स्कूल पहुंचते थे जिससे संक्रमण बढ़ रहा था. इस योजना में दैनिक रूप से स्कूल में यूनिफार्म और स्वच्छता का निरीक्षण किया जाता है और किसी कमी होने पर सजा नहीं बल्कि साबुन पानी और कंघी से तुरंत सुधार कराया जाता है. यह पहला अब 17003 स्कूलों में लागू है और 135413 छात्रों को इसका लाभ मिल रहा है मुख्यमंत्री ने इस योजना को पूरे आंध्र प्रदेश में लागू करने के निर्देश दिए हैं

– दुर्गा शक्ति नागपाल वर्ष 2010 बैच की आईएएस बड़े पैमाने पर अवैध खनन को रोकने, रेत माफियाओं को उजागर करने और रॉयल्टी चोरी रोकने के लिए, 2014 बैच के भूपेश चौधरी, मिजोरम के सइहा जिले में मिर्च के उत्पादकों को सही मूल्य दिलवाने के लिए, 2016 बैच के आईएएस अंशुल गुप्ता इंडियन रेड क्रॉस हॉस्पिटल (आईआरसीएच) को बदहाली से उबारने के लिए, 2012 बैच के आईएएस ओम प्रकाश कसेरा कोटा में छात्रों की सुविधा के लिए प्रशासनिक स्तर पर कई सुधार के साथ अन्य सुविधाओं को भी दुरूस्त करने, वर्ष 2012 बैच की हर्षिका सिंह, मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ में निरक्षरता मिटाने और विषम लिंगानुपात को सुधारने के लिए, वर्ष 2012 के आईएएस रमेश घोलप झारखंड में बाल मजदूरी के विरुद्ध अभियान के लिए, देवांश यादव अरुणाचल प्रदेश में मेधावी किन्तु निर्धन छात्रों की सहायता के लिए, विक्रांत राजा पुदुचेरी के कराईकल में सूख चुके 178 जल स्रोतों को केवल 3 महीने के अंदर पुनर्जीवित करने, 2015 बैच के आईएएस आदित्य रंजन झारखंड में आँगनबाड़ी केन्द्रों का कायापलट करने के लिए, 2010 बैच की दिव्या देवराजन तेलंगाना में 2017 में आदिवासी संघर्ष की घटनाओं पर नियंत्रण करने के लिए अपने सफल प्रयास दर्ज कर चुके हैं.

– स्वप्निल वानखेड़े का जन्म अमरावती में, पिता शिक्षक और मां स्टाफ नर्स. शिक्षा नवोदय सरकारी स्कूल से फिर नागपुर यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की शिक्षा के बाद सॉफ्टवेयर कंपनी में नौकरी फिर असिस्टेंट कमांडेंट, इनकम टैक्स के असिस्टेंट कमिश्नर के रूप में अपनी सेवाएं दीं. अपने चौथे प्रयास में वर्ष 2015 में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे आईएएस अधिकारी बने उनकी पहली पदस्थी नागपुर में सहायक कलेक्टर के रूप में हुई जिसके बाद वे मध्यप्रदेश के अन्य जिलों में एसडीएम जिला पंचायत सीईओ नगर निगम कमिश्नर, एडिशनल कमिश्नर और कलेक्टर के पदों पर पदस्थ हुए.

स्वप्निल वानखेडे का स्वास्थ्य, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुपोषण और आंगनवाड़ी पर विशेष ध्यान है. महिलाओं को घाटों पर कपड़े बदलने की सुविधा देने के लिए उनकी प्रशंसा विदेश तक में हुई अलग–अलग स्कूलों में जाकर बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करते हैं उत्कृष्ट छात्रों को मुफ्त में आईएएस आईपीएस की परीक्षाओं में वे मुफ्त प्रशिक्षण को भी बढ़ावा देते हैं.जबलपुर के निराश्रितों का रैन बसेरा और समाज के वंचित लोगों के प्रति उनके नवाचारों के लिए उन्हें बहुत प्रशंसा प्राप्त हुई. स्वप्निल वानखेडे ने कर्तव्यबोध के आगे जाकर नवाचारों से अनेक काम किये हैं. ■

कर्तव्य-आवश्यकता और आविष्कार

आसाम में बाढ़ का प्रकोप लगभग प्रतिवर्ष की बात है. जब पूरे प्रदेश के 32 जिले बाढ़ से प्रभावित थे और एनडीआरएफ जैसी संस्थाएं लोगों को बचाने के काम कर रही थीं तभी सिल्चर के कैंसर अस्पताल के मरीजों को सुरक्षित निकालना एक बड़ी चिंता का कारण था. सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट और इस अस्पताल के डायरेक्टर डॉ. रवि कन्नन ने ट्रक की ट्यूब और लकड़ी से ऐसी नौकाओं का निर्माण किया जिनसे रोगियों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने में सुविधा हुई. ■

सामंजस्य बोध का अर्थ स्व सहायता समूह

स्वसहायता समूह एक निश्चित लक्ष्य को लेकर सामान पृष्ठभूमि के लोगों के द्वारा जीवन स्तर सुधारने के प्रयास का नाम है. बांग्लादेश में स्व सहायता समूह की सफलता इतिहास में दर्ज है. सफलतम स्वसहायता समूहों में कुछ नाम इस प्रकार हैं.

– कुदुंबश्री (केरल) यह राज्य सरकार द्वारा शुरू किया गया एक राज्य–व्यापी मॉडल है, जो गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूहों का एक विशाल नेटवर्क है।

– चमोली (उत्तराखंड) के महिला स्व सहायता समूह चौलाई से प्रसाद बनाकर बेचने में सफलता प्राप्त कर चूका हैं.

– शहरी समूहों में धार के मांडव का 'रेवा' और उज्जैन का 'संत रविदास' जैसे समूह बाग प्रिंट और बांस शिल्प जैसी कलाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं और राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत हो चुके हैं। ■

प्रकृति के प्रति कर्तव्यबोध -जादव पायेंग

वर्ष 2015 के पद्मश्री जादव ''मोलाई'' पायेंग एक पर्यावरणविद और जोरहाट के वानिकी कार्यकर्ता हैं, जिन्हें लोकप्रिय रूप से फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया के रूप में जाना जाता है। कई दशकों के दौरान, उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी के एक सैंडबार पर पेड़ लगाए और उन्हें जंगल में बदल दिया। इन्होंने अपनी मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति से केवल मिट्टी और कीचड़ से भरी जमीन को फिर से हरा–भरा कर दिया। यह जंगल माजुली द्वीप पर स्थित है, जिसे अब मोलाई वन के नाम से जाना जाता है. यह जोरहाट, असम, भारत के कोकिलामुख के पास स्थित है और इसमें लगभग 1,360 एकड़ का क्षेत्र शामिल है। वर्ष 1979 में इस क्षेत्र में आयी भयंकर बाढ़ ने उनके जन्मस्थान के आसपास बड़ी तबाही मचाई थी। एक दिन जादव ब्रह्मपुत्र नदी स्थित द्वीप अरुणा सपोरी लौट रहे थे। उस समय जाधव ने बालिगांव जगन्नाथ बरुआ आर्य विद्यालय से कक्षा 10 की परीक्षा दी थी। रेतीली और सूनसान जमीन में सैकड़ों सांपों को बेजान मरता देख वह चौंक गए। 16 वर्ष की आयु में मिट्टी और कीचड़ से भरे द्वीप को एक नया जीवन देने के बारे में ठान लिया। इस बारे में जादव ने गांव वालों से बात की। गांव वालों ने उन्हें पेड़ उगाने की सलाह के साथ–साथ 50 बीज और 25 बांस के पौधे दिए। जादव ने बीज बोए और उनकी देखरेख की। उसी का परिणाम है कि आज 36 साल बाद उन्होंने अपने दम पर एक जंगल खड़ा कर दिया। इस जंगल को बनाना आसान नहीं था। जादव दिन–रात पौधों में पानी देते। यहां तक कि उन्होंने गांव से लाल चींटियां इकठ्ठी कर उन्हें सैंड बार (कीचड़) में छोड़ा। अंत में उन्हें प्रकृति से उपहार मिला और जल्द ही खाली पड़ी जगह पर वनस्पति और जीव–जंतुओं की कई श्रेणियां पाई जाने लगीं। इनमें लुप्त होने की कगार पर खड़े एक सींग वाले गैंडे और रॉयल बंगाल टाइगर भी शामिल हैं। जादव पेलांग को उनकी उपलब्धि के लिए वर्ष 2012 में जादव पायेंग को ''फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया'' खिताब दिया। अक्टूबर 2013 में, उन्हें भारतीय वन प्रबंधन संस्थान में उनके वार्षिक कार्यक्रम कोएलिशंस के दौरान सम्मानित किया गया। पद्मश्री के अतिरिक्त अपने योगदान के लिए असम कृषि विश्वविद्यालय और काजीरंगा विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की मानद उपाधि दी गयी. ■

वन्य पशु संरक्षण की अनूठी पहल

मुंबई के दंत चिकित्सक संपत्ति पीवी सुब्रमण्यम और सरिता ने वन्यजीवों की देखभाल को अपना लक्ष्य बना लिया है. उन्होंने देश भर में 28 जंगलों में सौर ऊर्जा से चलने वाले लगभग 200 पंप लगाए हैं ताकि बाघों शेरों सहित सभी जानवरों को गर्मी में भी पानी मिल सके हर पंप की लागत लगभग 4 से 5 लाख रुपए के बीच है दोनों की योजना ऐसे और पंप लगाने की है. दंपति ने मिलकर अर्थ ब्रिगेड फाउंडेशन की स्थापना भी की है ■

कर्तव्यबोध प्रेरित प्रयास -हेल्पबॉक्स

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के युवा दंपत्ति कविता और सुनील अवसरकर विगत एक दशक से पर्यावरण संरक्षण को समर्पित हैं. सीमित संसाधनों के बाद भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के प्रसार में नो पॉलीथिन, प्लॉग रन, नुक्कड नाटक, मोब, ईको फ्रेंडली पेपर एवं क्लाथ बैग निर्माण, प्लांटेशन, व्हाय वेस्ट हॉफ वाटर अभियान जैसे प्रयास कर रहे हैं. इनकी संस्था हैल्पबॉक्स द्वारा एक निःशुल्क आनंदम केन्द्र का संचालन किया जाता है जिसमें बच्चे पढ़ाई के साथ पर्यावरण संरक्षण का पाठ पढ़ते है। बच्चों में पर्यावरण संरक्षण में रूझान के लिए सीड़ बॉल की पोटली लगे हजारों नए संस्टेनेबल कपड़ें पूरे वर्ष प्रोत्साहन के रूप प्रदाय किए जाते है। अवसरकर दंपत्ति पर्यावरण, रचनात्मक शिक्षा एवं आर्ट कल्चर के विभिन्न अभियानों पर सतत कार्य कर रहे है। शहर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखने के लिए ''मेरा शहर–मेरी जिम्मेदारी अभियान'' के तहत शहर के स्वच्छता ब्रांड एंबेसेडर भी है। दंपत्ति रक्तदान के प्रति जागरूकता शिविर भी आयोजित करते हैं. कोविड काल में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर ब्लड, दवाईयाँ, प्लाज्मा, बैड उपलब्ध करवाने जैसी आवश्यक सहायता देने का काम किया. जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए पुराने कपड़े एकत्रित कर वितरण प्रारंभ किया तथा वंचित बच्चों को 'एक कॉपी एक पेन अभियान' के माध्यम से शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई। पुराने कपड़े एकत्रित करने उपरांत उनसे कपड़ों की थैलियों का निर्माण कर पर्यावरण बचाने की मुहिम प्रारंभ की। इसके लिए शहर के विभिन्न हाट एवं सब्जी बाजारों में थैलियों का निःशुल्क वितरण कर लोगों को जागरूक किया। इसके उपरांत अब हम मुख्य रूप से पर्यावरण संरक्षण एवं बच्चों की रचनात्मक शिक्षा पर कार्य करते है। आर्ट कल्चर पर एक टी–टॉक, जीवन एवं कला संवाद श्रंखला 'चायनामा' का आयोजन प्रति माह होता है जिसमें विभिन्न क्षेत्र की ख्यातनाम शख्सियतों से उनके जीवन एवं कार्य पर खुला एवं रोचक संवाद होता है। प्रतिवर्ष पर्यावरण एवं कला समारोह वसुधा का आयोजन होता है जिसमें पर्यावरण, जल संरक्षण एवं स्वच्छता पर कार्य करने वाले व्यक्तियों का अभिनंदन एवं वसुधा पत्रिका के माध्यम से नवाचारों को मंच प्रदान किया जाता है। ■

लक्ष्यबोध से छोटे हैं पहाड़

बाईस बरस का श्रम, एकदम स्पष्ट उद्देश्य में पगा कर्तव्यबोध, छैनी हथोड़ी से अकेले पहाड़ को काटकर सड़क का निर्माण करने वाले व्यक्तित्व का नाम है दशरथ माँझी. वर्ष 1934 में जन्मे मांझी को ''माउंटेन मैन''के रूप में भी जाना जाता है, बिहार में गया के करीब गहलौर गाँव के निवासी मांझी एक गरीब मजदूर थे। 22 वर्षों परिश्रम के बाद, दशरथ के बनायी सड़क ने अतरी और वजीरगंज ब्लाक की दूरी को 55 किमी से 15 किलोमीटर कर दिया। मांझी को बचपन से ही जीवन में उन्हें अपना छोटे से छोटा हक माँगने के लिए संघर्ष करना पड़ा। वे जिस गांव में रहते थे वहाँ से पास के कस्बे जाने के लिए एक पूरा पहाड़ (गहलोर पर्वत) पार करना पड़ता था। उनके गाँव में उन दिनों न बिजली थी, न पानी। ऐसे में छोटी से छोटी जरूरत के लिए उस पूरे पहाड़ को या तो पार करना पड़ता था या उसका चक्कर लगाकर जाना पड़ता था। उन्होंने फाल्गुनी देवी से शादी की। दशरथ माँझी को गहलौर पहाड़ काटकर रास्ता बनाने का जूनून तब सवार हुआ जब पहाड़ के दूसरे छोर पर लकड़ी काट रहे अपने पति के लिए खाना ले जाने के क्रम में उनकी पत्नी फाल्गुनी पहाड़ के दर्रे में गिर गयी और उनका निधन हो गया। उनकी पत्नी की मौत दवाइयों के अभाव में हो गई, क्योंकि बाजार दूर था। समय पर दवा नहीं मिल सकी। यह बात उनके मन में घर कर गई। इसके बाद दशरथ माँझी ने संकल्प लिया कि वह अकेले दम पर पहाड़ के बीचों बीच से रास्ता निकलेगा और अत्री व वजीरगंज की दूरी को कम करेगा। मांझी ने 110 मीटर लम्बा 7.6 मीटर गहरा और 9.1 मीटर चौड़ा गेहलौर की पहाड़ियों से रास्ता बनाने का फैसला किया। वे कहते हैं ''जब मैंने पहाड़ी तोड़ना शुरू किया तो लोगों ने मुझे पागल कहा लेकिन इसने मेरे निश्चय को और मजबूत किया।''

हालांकि इन्होंने एक सुरक्षित पहाड़ को काटा, जो भारतीय वन्यजीव सुरक्षा अधिनियम अनुसार दंडनीय है और इन्होंने इस पहाड़ के पत्थर भी बेचे फिर भी इनका ये प्रयास सराहनीय है और कर्तव्यों के प्रति समर्पण और धीरज के साथ लक्ष्य की स्पष्टता को रेखांकित करता है. 73 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ. बिहार की राज्य सरकार के द्वारा इनका अंतिम संस्कार किया गया। बाद में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गहलौर में उनके नाम पर 3 किमी लंबी एक सड़क और हॉस्पिटल बनवाने का निर्णय किया है. फिल्म प्रभाग ने इन पर एक वृत्तचित्र (डाक्यूमेंट्री) फिल्म ''द मैन हु मूव्ड द माउंटेन'' से रूपहले परदे पर मांझी को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है. ■

कर्तव्य बोध के नायक

किसी भी नौकरी में छुट्टी की अनिवार्य सुविधा होती है. कर्तव्य के प्रति समर्पण की पराकाष्ठा तक पहुंचे हमारे अनेक नायक हैं जिन्होंने सेवा धर्म को इतना अंगीकार किया कि वे लम्बे समय तक अवकाश न लेकर रिकॉर्ड बना गए.

– अमेरिका के केविन फोर्ड ने 27 वर्ष की नौकरी में एक भी छुट्टी नहीं ली. एक बर्गर कंपनी में सेवाएं देने वाला केविन जब सेवानिवृत हुआ, तो उसकी कम्पनी ने इस बात को प्रचारित कर उसके लिए ऑनलाइन धन्यवाद अभियान चलाया तो उसे सेवानिवृत्ति पर भेंट के रूप में 3 करोड़ से अधिक रूपये प्राप्त हुए.

– दिल्ली पुलिस के रिटायर्ड सब–इंस्पेक्टर बलजीत सिंह राणा, ने पिछले 20 सालों में एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली। साल 1998 के बाद से उन्होंने कभी भी कोई भी मेडिकल या कैजुअल लीव भी नहीं ली है। हरियाणा के कुंडली गांव के बलजीत ने साल 1972 में अपनी ड्यूटी ज्वाइन की। नौ महीने की ट्रेनिंग के बाद उनकी पहली नियुक्ति राष्ट्रपति भवन के बाहर हुई। यहाँ तक कि मेरी बेटी के शादी वाले दिन भी मैंने पूरा दिन ड्यूटी की और शाम को उसकी शादी के लिए पहुंचे. साल 2012 में उनकी रिटायरमेंट होने के बाद भी वे खुद कभी रिटायर नहीं हुए। बिना किसी वेतन के वे आज भी पुलिस बल में काम कर रहे हैं।

–हिमाचल रोड ट्रांसपोर्ट के नाहन डिपो में परिचालक जोगिंदर सिंह ने 4 जून 2005 में परिचालक की नौकरी शुरू करने के बाद एक भी अवकाश नहीं लिया, जिसमे साप्ताहिक अवकाश हो या फिर होली दिवाली या फिर अन्य त्योहार का अवकाश हो. कोरोना काल में जब बसें बंद थीं तो वे इंचार्ज के रूप में बस अड्डे पर सेवाएं देते रहे. कोरोना काल के बाद भी काफी समय तक कई रूट बंद थे, लेकिन जिस रूट पर जोगिंदर चलते थे वह रूट कभी बंद नहीं हुआ. ■

कर्तव्यपथ पर युवा जासूस

महात्मा गाँधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज इंदौर में जब रैगिंग की घटनाएं गंभीर रूप से बढ़ गयीं तो इस मामले में शिकायत की जाँच के लिए मध्य प्रदेश पुलिस में नव नियुक्त कांस्टेबल 24 वर्षीय शालिनी को उसी कॉलेज में छात्र के रूप में भेज दिया. वह अन्य छात्रों के साथ मेडिकल की पढाई करती रही. लेकिन इस अवधि में उसने सहपाठी छात्रों से सभी आवश्यक जानकारी निकालकर 11 ऐसे छात्रों को चिन्हित किया जो रैगिंग के अपराधी थे. उसने इनके विरुद्ध पर्याप्त साक्ष्य एकत्र कर इस रैगिंग के प्रकरण को हल करने में पुलिस की सहायता की. ■

कर्तव्य के मार्ग पर सर्वोच्च बलिदान

भारत रणबांकुरों का देश है. सीमा पर सुरक्षा को सर्वोपरि रखकर प्राण न्यौछावर करना कर्तव्य के प्रति सर्वोच्च समर्पण का प्रतीक है. परमवीर चक्र से अलंकृत हमारे रणबांकुरों की सूची इस प्रकार है.

– मेजर सोमनाथ शर्मा (मरणोपरांत), कुमाऊँ रेजीमेंट, 1947, कश्मीर. दुश्मन के भारी हमले के बीच अंतिम सांस तक लड़ाई, साथियों को बचाया।
– नायक जदुनाथ सिंह (मरणोपरांत), राजपूत रेजीमेंट, 1948, नौशेरा, अकेले दुश्मन पर हमला, पोस्ट की रक्षा करते हुए शहीद।
– सेकंड लेफ्टिनेंट राम राघोबा राणे, बम डिफ्यूजल यूनिट, 1948, कश्मीर, दुश्मन की गोलाबारी में सड़क बनाते हुए टैंक आगे बढ़ाए।
– कंपनी हवलदार मेजर पीरु सिंह (मरणोपरांत), राजपूताना राइफल्स, 1948, तिथवाल, अकेले दुश्मन के बंकर पर हमला करते हुए शहीद।
– हवलदार अब्दुल हमीद (मरणोपरांत), ग्रेनेडियर्स, 1965, खेमकरण, दुश्मन के कई टैंकों को नष्ट किया, शहीद हुए।
– मेजर धन सिंह थापा, 1/8 गोरखा राइफल्स, 1962, लद्दाख, पोस्ट की रक्षा में अद्भुत साहस दिखाया।
– सूबेदार जोगिंदर सिंह (मरणोपरांत), सिख रेजिमेंट, 1962, तवांग, दुश्मन के भारी हमले को रोकते हुए शहीद।
– लेफ्टिनेंट अरुण खेतरपाल (मरणोपरांत), 17 पूना हॉर्स, 1971, बसंतर, टैंक युद्ध में अद्भुत साहस, शहीद।
– मेजर शैतान सिंह (मरणोपरांत), 13 कुमाऊँ, 1962, रेजांग ला, पोस्ट की रक्षा में अद्भुत वीरता, शहीद।
– नायक करम सिंह, 1 सिख, 1948, तिथवाल, पोस्ट की रक्षा में कई हमलों को विफल किया।
– सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेतरपाल (मरणोपरांत), 17 पूना हॉर्स, 1971, शकरगढ़, टैंक युद्ध में अद्भुत साहस, शहीद।
– फ्लाइंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेखों (मरणोपरांत), 18 स्क्वाड्रन, वायुसेना, 1971, श्रीनगर, दुश्मन के विमानों से अकेले मुकाबला, शहीद।
– मेजर होशियार सिंह, ग्रेनेडियर्स, 1971, शकरगढ़, पोस्ट पर कब्जा दिलाने में अद्भुत साहस।
– लांस नायक अल्बर्ट एक्का (मरणोपरांत), 14 गार्ड्स, 1971, गंगासागर, दुश्मन के बंकर पर हमला कर पोस्ट पर कब्जा दिलाया, शहीद।
– ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव, 18 ग्रेनेडियर्स, 1999, टाइगर हिल, कारगिल, गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद चोटी पर चढ़कर दुश्मन के बंकर नष्ट किए।
– राइफलमैन संजय कुमार, 13 जम्मू–कश्मीर राइफल्स, 1999, कारगिल, अकेले दुश्मन के बंकर पर हमला कर पोस्ट पर कब्जा दिलाया।
– कैप्टन विक्रम बत्रा (मरणोपरांत), 13 जम्मू–कश्मीर राइफल्स, 1999, कारगिल, बिंदु 5140 पर कब्जा करते हुए ''ये दिल मांगे मोर'' के नारे के साथ शहीद।
– लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे (मरणोपरांत), 1/11 गोरखा राइफल्स, 1999, कारगिल, दुश्मन की चौकियों पर कब्जा करते हुए शहीद।
– सूबेदार मेजर (मानद कैप्टन) बाना सिंह, 8 जम्मू–कश्मीर लाइट इंफेंट्री, 1987, सियाचिन, दुश्मन की पोस्ट पर कब्जा कर सियाचिन में भारत का झंडा फहराया।
– हवलदार भैरों सिंह, 14 राजपूताना राइफल्स, 1971, लोंगेवाला, दुश्मन के टैंकों को नष्ट किया, पोस्ट की रक्षा की।
– सूबेदार संदीप उन्नीकृष्णन (मरणोपरांत), राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड, 2008, मुंबई, ताज होटल में आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद। ■

कर्तव्यबोध के नन्हे कदम

– नॉएडा के कक्षा नौवीं के दक्ष मलिक ने खगोल में एक महत्वपूर्ण खोज कर सबको चौंका दिया है. उन्होंने एक उल्का पिंड की पहचान की, जिसकी पुष्टि अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी ने कर दी है. दक्ष को उस उल्कापिंड का नामकरण करने का गौरव प्राप्त होगा.

– पटना की शालिनी जब 12 वर्ष की थीं तो उन्होंने पाया कि उनके दादा जो वॉकर प्रयोग करते थे वह समतल सतह पर तो ठीक था, सीढ़ियों पर काम नहीं आता था. शालिनी ने एडजस्टेबल वॉकर विकसित किया जो सीढ़ियों पर भी उतना ही प्रभावी था. आज इस वॉकर का प्रयोग बुजुर्ग और वॉकर के प्रयोग करने वालों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है. इस प्रशंसनीय काम के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से अलंकृत किया गया है. ■

सहकारिता बोध का शिखर - अमूल

अमूल की कहानी एक छोटे से गांव से शुरू होती है और इसने भारतीय दुग्ध उद्योग में एक अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है। अमूल भारत का एक प्रसिद्ध डेयरी सहकारी आंदोलन है, जिसकी शुरुआत 1946 में गुजरात के आणंद शहर में हुई थी। यह "गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड (जीसीएमएमएफ)" नामक सहकारी संस्था द्वारा संचालित एक ब्रांड नाम है। अमूल की डेयरी और उत्पादों का स्वामित्व और संचालन लगभग 26 लाख दुग्ध उत्पादकों द्वारा किया जाता है, जो इसके सदस्य हैं। अमूल ने किसानों को बेहतर आय प्रदान करके और उन्हें डेयरी प्रबंधन में भागीदारी देकर सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमूल दूध, दही, पनीर, घी, मक्खन, आइसक्रीम और चॉकलेट सहित विभिन्न प्रकार के डेयरी उत्पादों का उत्पादन और विपणन करता है।

1940 के दशक के मध्य में, भारत में दुग्ध उत्पादन और वितरण की स्थिति काफी खराब थी। अधिकांश दूध उत्पादक किसानों को अपने उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिलता था। दूध के बिचौलियों और बड़े व्यापारियों का बोलबाला था, जो किसानों से सस्ते दाम पर दूध खरीदकर शहरों में महंगे दाम पर बेचते थे। इस शोषण से किसानों की स्थिति और भी दयनीय हो गई थी। सहकारिता के इस अभियान का नेतृत्व त्रिभुवनदास पटेल ने किया, जो बाद में अमूल के पहले चेयरमैन बने। किसानों ने सहकारी मॉडल को अपनाते हुए अपने दूध को सीधे सहकारी समिति को बेचने का निर्णय लिया, जिससे उन्हें उचित मूल्य मिल सके। अमूल की सफलता में डॉ. वर्गीज कुरियन का योगदान अनमोल है। 1949 में, वे आणंद आए और बॉम्बे विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में मास्टर्स की डिग्री पूरी करने के बाद उन्हें आणंद में एक सरकारी डेयरी पर काम करने का अवसर मिला। डॉ. कुरियन ने डेयरी उद्योग में कई तकनीकी सुधार किए और नए तरीके अपनाए। उन्होंने किसानों को आधुनिक दुग्ध उत्पादन तकनीकों से परिचित कराया और उन्हें गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रेरित किया। उनकी दूरदर्शिता और नेतृत्व ने अमूल को एक मजबूत नींव प्रदान की।

अमूल का सफल होना सहकारिता का सफल होना है, जहाँ गाँव के स्तर पर दुग्ध उत्पादक समितियाँ बनाई गईं। किसान अपना दूध इन समितियों को बेचते थे। इसके बाद तालुका स्तर पर दुग्ध संघ स्थापित किए गए, जो गाँव की समितियों से दूध संग्रह करते थे। जिला स्तर पर मार्केटिंग यूनियनों की स्थापना की गई, जो तालुका संघों से दूध प्राप्त कर उसे प्रोसेस और मार्केटिंग करते थे। इस मॉडल ने किसानों को सीधे तौर पर लाभान्वित किया और बिचौलियों के शोषण से मुक्ति दिलाई।

वर्ष 1966 में, अमूल ने विज्ञापन एजेंसी "डाकुना कम्युनिकेशन्स" के साथ मिलकर "अमूल गर्ल" का कैम्पेन शुरू किया। यह कैम्पेन अपने मजाकिया और व्यंग्यात्मक विज्ञापनों के लिए जाना जाता है, जो तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर टिप्पणी करते थे। इसने अमूल को एक अलग पहचान दिलाई और उपभोक्ताओं के दिलों में अपनी जगह बना ली। अमूल ने केवल दूध तक ही सीमित न रहकर अपने उत्पादों की विविधता पर ध्यान दिया। इसने दूध से बने विभिन्न उत्पाद जैसे मक्खन, चीज, दही, आइसक्रीम, घी, और अन्य डेयरी उत्पाद बाजार में उतारे। इसके अलावा, अमूल ने चॉकलेट, बेवरेज, और स्नैक्स की श्रेणी में भी अपने उत्पाद बाजार में उतारे.

अमूल की सफलता ने भारत में "श्वेत क्रांति" या "दुग्ध क्रांति" की नींव रखी। यह आंदोलन देश के विभिन्न हिस्सों में फैला और अन्य राज्यों में भी सहकारी मॉडल को अपनाया गया। 1970 के दशक में, भारत सरकार ने राष्ट्रीय दुग्ध विकास बोर्ड की स्थापना की और डॉ. वर्गीज कुरियन को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया। "ऑपरेशन फ्लड" के नाम से शुरू की गई इस परियोजना ने भारत को दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश बना दिया। अमूल ने न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा किए और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया। अमूल की दुग्ध समितियों में महिलाएँ भी सक्रिय रूप से शामिल होती हैं, जिससे उनके सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। ■

शुद्ध पेय जल के लिए एक युवा इंजीनियर निरंजन करागी एक ऐसा वॉटर फिल्टर विकसित किया है जो पानी की बोलत के ऊपर ढक्कन की तरह बैठ जाता है और शुद्ध पेय जल बिना बिजली के उपलब्ध कराता है. निरंजन ने महज 30 रुपये में इस वाटर फिल्टर का प्रोटोटाइप तैयार किया था। अनेक प्रयोगों और पेटेंट तकनीक के साथ उन्होंने इसका एक विकसित मॉडल तैयार किया जिसे वह नीरनल नाम के स्टार्टअप के तहत महज 300 रुपये में बेच रहे हैं। वह अब तक लाखों फिल्टर बेच चुके हैं। इसमें सेना के जवान से लेकर स्कूल के बच्चे और किसान जैसे लोग शामिल हैं। ■

कर्तव्यपथ के नायक - श्रीधरन

भारत में सार्वजनिक परिवहन की दिशा और दशा बदलने के लिए ई श्रीधरन का नाम दर्ज है. उन्होंने दिल्ली मेट्रो, कोंकण रेलवे, कोलकाता मेट्रो, कोची मेट्रो और लखनऊ मेट्रो जैसी कई परियोजनाओं में एक कुशल इंजीनियर और प्रशासक के रूप में स्वयं को स्थापित किया. 1932 में केरल में जन्मे, प्रारंभिक पढ़ाई सरकारी स्कूल से और काकीनाडा के सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज से उन्होंने सिविल इंजीनियरिंग की शिक्षा. यहाँ भारत के पूर्व चुनाव आयुक्त टीएन सेशन उनके सहपाठी थे. अपने करियर की शुरुआत कोझीकोड के पॉलिटेक्निक कॉलेज में व्याख्याता के रूप में, उसके बाद एक वर्ष मुंबई पोर्ट ट्रस्ट में प्रशिक्षक के रूप में और 1953 में भारतीय इंजीनियरिंग सेवा में प्रवेश लिया और भारतीय रेलवे इंजीनियर सेवा से जुड़ गए. उनकी पहली उपलब्धि 1964 में थी, जब रामेश्वरम और तमिलनाडु को जोड़ने वाला पंबन ब्रिज चक्रवात में बह गया. उसे 6 महीना में पूरा करने का लक्ष्य रेलवे के सामने था, लेकिन श्रीधरन ने इसे केवल 46 दिनों में पूरा किया जिसके लिए उन्हें रेल मंत्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया. 1970 में श्रीधर को भारत के पहले, अंडरग्राउंड मेट्रो कोलकाता के डिजाइन और निर्माण का काम सौंपा गया. 1980 में उन्हें कोचीन षिपयार्ड का अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक बनाया गया. लगभग बंद प्राय संस्था को अपने अनुभव, कार्यकुषलता से उन्होंने इसका कायाकल्प कर दिया. कोचीन शिपयार्ड का पहला जहाज एम. वी. पद्मिनी उन्हीं के समय लोकार्पित हुआ. कोंकण रेलवे भारत की एक चुनौती पूर्ण परियोजना थी. 1990 में उनकी सेवानिवृत्ति के बाद भी सरकार ने उन्होंने छोड़ना पसंद नहीं किया और कोंकण रेल्वे परियोजना का दायित्व दिया. 760 किलोमीटर लंबे 150 से ज्यादा फूलों और 93 सुरंग की इस परियोजना में श्रीधर ने इस कठिन प्रोजेक्ट को न केवल समय पर पूरा किया जो विश्व की सबसे कठिन रेल परियोजनाओं में से एक मानी जाती है. वर्ष 1995 में जब श्रीधरन को दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन का प्रबंध निदेशक बनाया गया तब बहुत से लोग इस परियोजना को लेकर सशंकित थे लेकिन उन्होंने सटीक योजना से न केवल मेट्रो के सभी चरण समय से पूरे किए बल्कि से तय बजट से कम खर्चे में सफल बनाया. इसके बाद वे कोच्चि मेट्रो के प्रधान सलाहकार बने और 2017 को कोची मेट्रो का शुभारंभ हुआ. वे लखनऊ मेट्रो के भी मुख्य सलाहकार रहे जो केवल 2 साल और 9 महीने में बनकर तैयार हुई जो भारत और विश्व के सबसे तेज निर्माण कार्य में से एक था. श्रीधरन ने जयपुर विशाखापट्टनम विजयवाड़ा और कोयंबटूर जैसी कई मेट्रो परियोजनाओं में सलाहकार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. इसके अतिरिक्त उन्होंने बांग्लादेश की राजधानी ढाका के लिए भी मेट्रो परियोजना में महत्वपूर्ण सुझाव दिए. उन्हें पद्मश्री, पद्मभूषण और टाइम मैगजीन द्वारा एशिया के हीरो की उपाधि से अलंकृत किया गया. ■

हमारा देश और विज्ञानबोध

शून्य, दशमलव, योग, गुरुत्वाकर्षण, खगोलीय गणनाओं पर गर्व के अतिरिक्त भारत के विज्ञानबोध ने देश को सतत रूप से एक सशक्त भारत के रूप में विश्वमंच पर स्थापित किया है.

भारत का रक्षा क्षेत्र आज दुनिया के अग्रणी देशों की कतार में खड़ा है. हाल के वर्षों में देश ने कई ऐसी तकनीकें विकसित की हैं, जो पहले सिर्फ अमेरिका, रूस या चीन जैसे देशों के पास ही थीं. लेजर आधारित हथियार प्रणाली विकसित कर भारत अब अमेरिका, रूस और चीन जैसे देशों की उस छोटी सूची में शामिल हो गया है जो इस तकनीक में महारथ रखते हैं. हाइपरसोनिक मिसाइल परीक्षण की सफलता ने देश को लंबी दूरी की हाइपरसोनिक मिसाइल की शक्ति दी है जो पारंपरिक और परमाणु दोनों तरह के हथियार ले जाने में सक्षम है. इसकी गति, ध्वनि की गति से पांच गुना ज्यादा है.मल्टिपल इंडेपेंडेंटली टार्गेट व री–एंट्री व्हीकल तकनीक से लैस अग्नि–V का सफल परीक्षण व एक ही मिसाइल से कई लक्ष्य एक साथ नष्ट किए जाने की क्षमता देश के पास है. समुद्र आधारित मिसाइल डिफेंस सिस्टम का वर्ष 2023 में विकसित होना भारत की मारक क्षमता में अभूतपूर्व छलांग है. स्वदेशी स्टेल्थ यू ए वी, वर्ष 2023 में विकसित हुआ जो देश की तकनीकी आत्मनिर्भरता का प्रमाण है. वर्ष 2019 में मिशन शक्ति में भारत ने अंतरिक्ष में लाइव सैटेलाइट को मार गिरा कर (एंटी–सैटेलाइट) तकनीक में महारत हासिल की और अमेरिका, रूस और चीन के साथ एक श्रेणी में आ खड़ा हुआ. अंतरिक्ष में भी स्पाडेक्स एक्स में हाल ही में भारत ने उपग्रह डॉकिंग और अनडॉकिंग तकनीक में सफलता पाई है, जिससे अब वह उन चुनिंदा देशों में शामिल हो गया है जो यह क्षमता रखते हैं. वर्ष 2023 में भारत ने इतिहास रचते हुए चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की, ऐसा करने वाला वह दुनिया का पहला देश बना. वर्ष 2022 में भारत ने अपनी क्रायोजेनिक इंजन निर्माण इकाई का उद्घाटन किया, जिससे वह विश्व के उन छह देशों में शामिल हो गया जो इस तकनीक में सक्षम हैं. भारत ने एक ही मिशन में 104 उपग्रह लॉन्च करके विश्व रिकॉर्ड कायम किया. भारत अब क्वांटम टेक्नोलॉजी और सेमीकंडक्टर जैसे उभरते क्षेत्रों में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है मउपबवद अभियान के चलते भारत ने चिप मैन्युफैक्चरिंग में कदम रखते हुए वैश्विक निवेशकों को आकर्षित किया है. ■

तिरोहित कर्तव्य बोध

पन्ना के गुनौर में दिनांक 27 जुलाई 2022 को उपाध्यक्ष पद के लिए भाजपा समर्थक राम शिरोमणि मिश्रा व कांग्रेस नेता परमानंद शर्मा ने नामांकन दाखिल किया था। इसी दिन मतदान संपन्न होने पर परमानंद शर्मा को 13 व राम शिरोमणि मिश्रा को 12 वोट प्राप्त हुए थे। इस तरह एक वोट से विजयी हुए परमानंद को पीठासीन अधिकारी ने निर्वाचित घोषित करते हुए जीत का प्रमाण पत्र प्रदान किया था। लेकिन भाजपा समर्थित प्रत्याशी राम शिरोमणि मिश्रा के द्वारा पीठासीन अधिकारी के निर्णय को चुनौती देते हुए 27 जुलाई को ही पन्ना कलेक्टर एवं जिला रिटर्निंग ऑफिसर के समक्ष अपील प्रस्तुत की गई। उपाध्यक्ष पद के निकटतम प्रतिद्वंदी राम शिरोमणि के द्वारा अपील में कहा गया कि एक वोट के बैलेट पेपर पर स्याही बीच में लगी होने से वह रिजेक्ट की श्रेणी में आता है। इसे अमान्य मानकर निरस्त करते हुए पुनः चुनाव कराया जाए। पन्ना कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी संजय कुमार मिश्र ने 27 जुलाई को ही देर शाम इस मामले की सुनवाई पूरी कर तुरंत फैसला सुनाते हुए एक वोट को निरस्त मानकर दोनों को 12–12 मत देते हुए लॉटरी सिस्टम से अगले दिन 28 जुलाई को उपाध्यक्ष का चुनाव पुनः कराने के आदेश जारी कर दिए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने परमानंद को अपना पक्ष रखने का अवसर दिए बगैर आश्चर्यजनक तरीके से एकतरफा निर्णय पारित कर दिया था। फलस्वरूप 28 जुलाई शासकीय महाविधायलय गुनौर में लॉटरी सिस्टम के तहत लॉटरी डालकर उपाध्यक्ष का पुनः चुनाव कराया गया। भाजपा जिसमें समर्थित राम शिरोमणि मिश्रा के नाम की लॉटरी निकलने पर उन्हें उपाध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित घोषित कर सार्टिफिकेट जारी कर दिया गया। यह सब कुछ महज 24 घण्टे के अंदर हुआ था। इस बीच कांग्रेस नेता परमानंद शर्मा के द्वारा कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्णय के विरुद्ध मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय जबलपुर में याचिका दायर की। जिसमें उपाध्यक्ष के चुनाव में हुई गड़बड़ी को लेकर पन्ना कलेक्टर एवं एवं जिला निर्वाचन अधिकारी संजय कुमार मिश्र पर बेहद गंभीर आरोप लगाए गए। हाईकोर्ट में परमानंद की याचिका पर सुनवाई के दौरान जस्टिस विवेक अग्रवाल ने आलोक में आये तथ्यों, दस्तावेजी साक्ष्यों एवं याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ अधिकवक्ता मनोज शर्मा और काजी फखरुद्दीन के तर्कों को सुनने के बाद पन्ना कलेक्टर संजय कुमार मिश्र की कार्यप्रणाली को लेकर गहरी नाराजगी जाहिर की है। जस्टिस श्री अग्रवाल ने पन्ना कलेक्टर को नोटिस जारी करने का आदेश देते हुए कहा कि– इसको, संजय कुमार मिश्र को बाय नेम पार्टी बनाईए। क्योंकि, कलेक्टर संजय कुमार मिश्रा सत्ताधारी दल के एजेण्ट की तरह काम कर रहे हैं।" कोर्ट ने कलेक्टर को नोटिस जारी करने का आदेश देते हुए उन्हें अपने आचरण को लेकर पक्ष रखने को कहा है। साथ ही यह भी पूछा है कि, भविष्य में उन्हें चुनाव जैसे संवेदनशील मामलों को ना सौंपने की सिफारिश क्यों न की जाए। और इस सिफारिश को भारत निर्वाचन आयोग तथा राज्य निर्वाचन आयोग को क्यों न भेजा जाए। ■

चिकित्सा सेवाओं में असमानता बोध

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में जहां पर स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है. चिकित्सा उपाधि प्राप्त करने के बाद शासकीय/ग्रामीण सेवाएं देने की अनिवार्यता पर और उल्लंघन पर आर्थिक दंड के आकार में व्यापक असमानता दिखाई देती है. नियमतः डॉक्टर की उपाधि प्राप्त करने के बाद सरकारी अस्पताल या ग्रामीण क्षेत्र में सेवाएं न देने के लिए एक बांड और सेवा शर्तें पूरी न करने पर निश्चित राशि दी जानी होती है. इस सेवा अवधि को पूरा को पूरा न करने के दंड स्वरूप 10 लाख रूपये निश्चित हैं. इसके विपरीत कुछ संस्थानों में इस सेवा शर्त को पूरा करने की कोई बाध्यता नहीं है जैसे ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी. आश्चर्यजनक रूप से देश में ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं में कमी की व्यापकता के बाद भी कुछ राज्यों में एमबीबीएस करने के बाद शासकीय या ग्रामीण सेवाएं न करने की एवज में ऐसे किसी दंड की व्यवस्था नहीं है. ये राज्य हैं आंध्र प्रदेश बिहार, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, केरल, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, पांडिचेरी, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल. चिकित्सा उपाधि प्राप्त करने के बाद शासकीय या ग्रामीण सेवा की अनिवार्यता की अवधि दिल्ली गोवा गुजरात कर्नाटक मध्य प्रदेश महाराष्ट्र और पंजाब में 1 वर्ष है जबकि चंडीगढ़ छत्तीसगढ़ दादरा ओडिशा और उत्तर प्रदेश में यह दो वर्ष है. इसके विपरीत झारखंड में यह अवधि 3 वर्ष है. झारखण्ड में यह राशि 30 लाख असम में 5 वर्ष बंद राशि 30 लाख हरियाणा अवधि 5 वर्ष बंद 25 लाख तमिलनाडु अवधि 5 लाख बंद राशि 5 लाख और त्रिपुरा में यह अवधि 5 वर्ष और बांड राशि 20 लाख है. यह पूरा परिदृश्य एक नयी सोच मांगता है. राष्ट्र के संसाधनों से बने सभी संस्थानों से उत्तीर्ण होने के बाद अपने ही देश के वंचित लोगों की सेवा न करने का विकल्प और उसके बदले कुछ अर्थदंड देने की व्यवस्था पर पुनर्विचार की आवश्यकता है. चिकित्सा सेवाएं जीवनावश्यक हैं इसका मोल कुछ लाखों में आंकना अनुचित होगा. ■

कर्तव्य विचलन के स्मारक

लोक सभा सदस्य बीजद सांसद भर्तुहरि महताब और बीजेपी सांसद संगीता कुमारी सिंह देव ने लोकसभा में पूछा था कि क्या प्रधानमंत्री बताएंगे कि पिछले तीन वर्षों में कितने आईएएस, आईपीएस और आईआरएस अफसरों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों में कार्रवाई हुई. साथ ही कितने अफसर अवैध तरीके से संपत्ति अर्जित करने में फंसे. उन अफसरों का ब्यौरा क्या है, जो अपने खिलाफ जांच शुरू होने पर विदेश भाग गए ? लोकसभा में सरकार के राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि सीबीआई ने भ्रष्टाचार के मामलों में कुल 86 आईएएस, आईपीएस और आईआरएस के खिलाफ पिछले तीन वर्षों में कार्रवाई की है. ये कार्रवाई 2016, 2017, 2018 और 2019 में हुई. सरकार ने 30 जून 2019 तक हुई कार्रवाइयों का ब्यौरा देते हुए बताया कि इन तीन वर्षों में 26 आईएएस, आईपीएस, आईआरएस के खिलाफ आरोप साबित हुए हैं. कोई अफसर विदेश नहीं भागा है. मंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार भ्रष्टाचार के विरुद्ध 'शून्य सहिष्णुता' की नीति अपनाए हुए है. उधर गृह मंत्रालय ने बताया है कि पिछले पांच वर्षों में 1083 अधिकारियों को सेवा से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया. इन अफसरों के विरुद्ध प्रदर्शन, चरित्र और भ्रष्टाचार के मामले में सरकार ने कार्रवाई की है. गिरावट इतनी गंभीर है कि ये 1083 लोग भारत के वे युवा थे जिन्होंने एक कठिन परीक्षा न केवल उत्तीर्ण की बल्कि साक्षात्कार में व्यवस्था को साफ करने को अपने जीवन का उद्देश्य बताया था. क्या कर्तव्य से विमुख होना सिर्फ एक अवसर का नाम है ? ■

न्यायपालिका - रेकयूजल और न्यायबोध

न्याय पालिका के किसी न्यायाधीश द्वारा किसी मुकदमे में निर्णय देने की प्रक्रिया से स्वयं को अलग कर लेने की व्यवस्था का नाम रेकयूजल है. उल्लेखनीय यह है कि अपने को किसी मामले से अलग करने के लिए कोई कारण बताया जाना आवश्यक नहीं है. यह बात भी ध्यान देने की है कि न्याय देने में न्यायाधीश की व्यक्तिगत शुचिता पर कोई संदेह न हो इसके लिए न्यायाधीश की किसी मामले की सुनवाई से हट जाना एक परंपरा है. पक्षकारों से पूर्व संबंध, वादी से संपर्क के अवसर, स्वयं के फैसले की समीक्षा और आर्थिक या निजी हितों का जुड़ाव इसका मुख्य आधार हैं.

संजीव चतुर्वेदी, भारतीय वन सेवा के अधिकारी खनन और वन माफिया के भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए जाने जाते हैं. वे अपने प्रयासों के लिए रमन मैग्ससे पुरुस्कार के अलंकृत हुए और उन्होंने पुरुस्कार राशि सरकारी कोष में जमा कर दी. इनके नाम पर एक और रिकॉर्ड है कि इनके मुकदमे की सुनवाई से नैनीताल हाईकोर्ट 15 न्यायाधीशों ने सुनवाई से अपने को अलग कर लिया है. उत्तर प्रदेश के बाहुबली अतीक अहमद की इलाहबाद उच्च न्यायलय में जमानत अर्जी पर सुनवाई से 10 न्यायधीशों ने स्वयं को अलग कर लिया. अपने विरुद्ध यौन उत्पीड़न के एक मामले को सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन मुख्य न्यायधीश ने स्वयं सुना जबकि यौन उत्पीड़न की शिकायत उन्हीं के विरुद्ध थी. सुप्रीम कोर्ट के एक न्यायधीश ने गुजरात कैडर के पुलिस सेवा के अधिकारी संजीव भट्ट के मामले में सुनवाई से स्वयं को अलग कर लिया. इसके पूर्व एक न्यायाधीश ने केरल के मुख्य मंत्री पिनरई विजयन के विरूद्ध एक भ्रष्टाचार के मामले की सुनवाई से स्वयं को अलग कर लिया.

बढ़ते लंबित मुकदमे और रेकयूजल की स्वतंत्रता, न्याय होने और होता दिखने के बीच मार्ग खोजने की तात्कालिक आवश्यकता है. ■

हमारे संसाधन बोध

हम संसाधनों के प्रति एक संवेदनशील और संगठित समाज या देश के रूप में उभर पाने में सफल नहीं रहे हैं, यह बात कटु लेकिन सत्य है. लोक सभा में उन घोषणाओं पर तालियां बजती हैं जिनमे कहा जाता है कि इतने हजार किलोमीटर सड़क देश में बन रही है, द्रुत गति मार्ग बन रहे हैं, दो शहरों के बीच की दूरी घट रही है. सत्य यह है कि छह लेन का हाइवे वास्तव में सिंगल लेन का रह गया है, बाकी की लेन राजमार्ग से लगे गाँव के किसान अपनी फसल सुखाने के लिए कर रहे हैं. राजमार्गों पर करोड़ों खर्च करने के बाद हम जंगली जानवरों के सुरक्षा के लिए सड़क के डिजाइन में परिवर्तन करने की बात करते हैं लेकिन सड़क किनारे के गावों से राजमार्ग पर बैठे जानवरों को रोकने की कोई व्यवस्था हमारे पास नहीं है. सड़क पर बने पीने के पानी के नल सारे वरिष्ठ नागरिकों की स्मृति का भाग हैं. यह योजना इसलिए असफल रही कि शहर के नागरिकों ने इस सुविधा के बदले थोड़ा सा शुल्क नगर निगम को न देना निश्चित किया. आज वही नागरिक बोतलबंद पानी खरीदकर उपयोग कर रहे हैं. केरल सरकार ने घोषणा की चूंकि जल जीवन मिशन में घर घर नल में पानी उपलब्ध है इसलिए सड़क पर स्थित नल बंद किये जा रहे हैं. वस्तुस्थिति यह है कि सड़क पर नल उस जनसँख्या के लिए एक सुविधा थी जो नल की सुविधा घर में नहीं ले सकती.■

हमारे जनप्रतिनिधियों का शालीनता बोध

हाल के दशकों में जनप्रतिनिधियों के बयान शालीनता की सारी सीमायें लांघ रहे हैं. कुछ उदाहरण

– 28 नवंबर 2022 को रामपुर विधानसभा उपचुनाव में पार्टी के उम्मीदवार असीम रजा के पक्ष में चुनाव प्रचार करने के लिए आजम खान गंज थाना के शुतुरखाना मुहल्ले में सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा ''बहुत कम अकल है। अगर अकल होती तो जो लोग आज दावा कर रहे हैं कि 35 बरस बाद हमें छोड़ा है तो ये हमें छोड़ देते, इस काबिल मैं छोड़ देता इन्हें ? जो आज तुम्हारे और हमारे साथ हुआ है, चार सरकारों में रहते हुए मैंने ऐसा किया होता तो बच्चों तुम्हारी मुस्कुराहट की कसम खाकर कहता हूँ, माँ से पेट से पैदा होने से पहले बच्चा कहता कि पूछ लो आजम खान से कि बाहर निकलना भी है या नहीं।''. माननीय की रामपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद, समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य उत्तर प्रदेश सरकार में सबसे वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री भी थे और रामपुर विधानसभा क्षेत्र से नौ बार विधान सभा के सदस्य रहे हैं।

– वर्ष 2013 में मध्य प्रदेश के दो बार मुख्य मंत्री रह चुके दिग्विजय सिंह ने मंदसौर की एक चुनाव प्रचार सभा में कहा की वे राजनीति के पुराने जौहरी हैं और 'मुझे पता है कि कौन फर्जी है और कौन सही है. इस क्षेत्र की सांसद मीनाक्षी नटराजन सौ टंच माल हैं.'

– 2014 में मुरादाबाद में एक रैली में मुलायम सिंह ने कहा कि सभी मामलों में रेप पर फांसी देना पूरी तरह गलत है. लड़कों से अक्सर गलतियां हो जाती हैं. उन्होंने कहा कि मुंबई में तीन लड़कों को फांसी की सजा सुनाई गई है, जो कि नहीं होनी चाहिए. मुलायम सिंह ने कहा कि ऐसे कानूनों को बदलने की जरूरत है. माननीय भारत सरकार के रक्षा मंत्री और देश के सबसे बड़े प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं.

– कांग्रेस के दिग्गज नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने कानपुर में एक सभा में कहा था, 'पुरानी जीत पुरानी पत्नी की तरह है, जो समय बीतने के साथ अपना आकर्षण खो बैठती है.'

– ''अगर भारत में राजनीतिक रूप से सबसे खतरनाक कोई चीज है तो वह भाजपा और आरएसएस हैं। वे जहर की तरह हैं। अगर सांप काटता है तो वह व्यक्ति मर जाता है। ऐसे जहरीले सांप को मार देना चाहिए।'' यह बयान वर्ष 2024 में दिया गया है, कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा .

– 2024 में लालू प्रसाद ने नीतीश कुमार की महिला संवाद यात्रा पर आपत्तिजनक बयान देते हुए कहा कि नीतीश कुमार आंखें सेंकने जा रहे हैं।

– इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने लोकसभा चुनाव में नस्लीय टिप्पणी की. उनका कहना था कि उत्तर भारत के लोग तो सफेद नजर आते हैं, जबकि, पूर्वी भारत के लोग चाइनीज दिखते हैं। दक्षिण भारतीय लोग अफ्रीकी जैसे और पश्चिम भारत के लोग अरब के लोगों जैसे दिखते हैं।

–कांग्रेस के भाई जगताप ने बयान दिया कि ''चुनाव आयोग तो कुत्ता है। पीएम मोदी के बंगले के बाहर बैठा कुत्ता बनकर काम कर रहा है। लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए बनाई गई सभी एजेंसियां अब कठपुतलियां बन गई हैं।'

– पश्चिम बंगाल से बीजेपी सांसद दिलीप घोष ने कहा ''दीदी (ममता बनर्जी) गोवा में खुद को गोवा की बेटी बताती हैं, त्रिपुरा जाकर खुद को त्रिपुरा की बेटी बताती हैं. उन्हें पहले अपने पिता की पहचान करनी चाहिए.''

– पिछले दिल्ली विधान सभा चुनाव के समय राहुल गांधी जो लोक सभा में प्रतिपक्ष ने नेता हैं, ने कहा ''ये जो नरेंद्र मोदी भाषण दे रहा है, छह महीने बाद ये घर से बाहर नहीं निकल पाएगा. हिन्दुस्तान के युवा इसको ऐसा डंडा मारेंगे, इसको समझा देंगे कि हिन्दुस्तान के युवा को रोजगार दिए बिना ये देश आगे नहीं बढ़ सकता.'' ■

कर्तव्य-एक अलग दृष्टिकोण

– ओशो

कर्तव्य शब्द ही गंदा है। प्रेम से जीना समझ में आता है, कर्तव्य से जीना समझ में नहीं आता। यह तुम्हारी पत्नी है, इसलिए तुम्हारा कर्तव्य है कि इसको प्रेम करो। अब जब कोई कर्तव्य से प्रेम करेगा तो तुम सोच ही सकते हो कि प्रेम क्या खाक होगा! दिखावा होगा, वंचना होगी, धोखा होगा। ऊपर–ऊपर प्रेम होगा, भीतर भीतर घृणा होगी। और घृणा फूट–फूट कर निकलेगी। कितना दबाओगे? एक सीमा है दबाने की। कहां तक रोकोगे? एक तरफ से रोकोगे, दूसरी तरफ से बहेगी। वह घृणा तुम्हारे भीतर जो तुम इकट्ठी कर रहे हो – कर्तव्य के नाम पर। और कर्तव्य सिखाया जा रहा है, हरेक को कर्तव्य सिखाया जा रहा है। प्रेम की तो बात ही मत करना। इस सूत्र में कहीं प्रेम नहीं आता।

ब्रह्मज्ञानी प्रेम से भरा होगा, लबालब होगा। यूं लबालब होगा कि प्रेम उसके ऊपर से बहता होगा। कर्तव्य नहीं होता ब्रह्मज्ञानी के जीवन में, प्रेम होता है। वह जो करता है प्रेम से करता है। जो उसके प्रेम में नहीं आता, नहीं करता। उसके लिए प्रेम ही एकमात्र कसौटी है। जो प्रेम पर खरा उतरता है वही सोना है और जो प्रेम पर खरा नहीं उतरता वह खोटा है। कर्तव्य सामाजिक व्यवस्था है। तुम्हें सिखाया जाता है : कर्तव्य का पालन करो। और जो कर्तव्य का पालन करेगा उसको आदर दिया जाता है, सम्मान दिया जाता है, पुरस्कार दिए जाते हैं। यह प्रलोभन है। यह समाज की रिश्वत है कि तुम पद्म–विभूषण होओगे, कि भारत–रत्न बनोगे, नोबल पुरस्कार मिलेगा, कर्तव्य पूरा करो। ■

मतदान-कर्तव्य या विश्राम का अवसर ?

देश में आम चुनावों पर होने वाला खर्च आजादी से अबतक 5 हजार गुना से ज्यादा बढ़ चुका है. 1952 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में प्रति व्यक्ति खर्च 67 पैसे था, जो साल 2019 के चुनाव में बढ़कर करीब 32 रुपये पहुंच गया. भारत के चुनावों को दुनिया के सबसे खर्चीले चुनावों में से एक माना जाता है. इस मामले में पिछले चुनावों के आधार पर केवल अमेरिका ही भारत से आगे है.

दूसरी बात यह है कि हमारे देश में मतदान प्रतिशत अधिकतम 66 का आंकड़ा 2019 में छू पाया. पहले आम चुनाव में 40, दूसरे में 45, तीसरे में 55, चौथे में 61, पांचवे में 55, छटवें में 60, सातवें में 56, आठवें में 64, नौवें में 61, दसवें में 58, ग्यारहवें में 57, बारहवें में 61, तेहरवें में 60 चौदहवें व पन्द्रहवें में 58, सोलहवें में 64, सत्रहवें में 67 और अठारहवें में 66 प्रतिशत रहा. एक दृष्टि इस बात पर भी आवश्यक है कि सत्तारूढ़ दल द्वारा मतदान में कितने मतदाताओं का जनादेश था. 50 प्रतिशत से कम जनसंख्या वाली सरकार नौवें चुनाव में 36, दसवें में 46, ग्यारहवें में 29, बारहवें व तेहरवें में 33, चौदहवें में 26, पन्द्रहवें में 37 और अठारहवीं लोक सभा में सत्तारूढ़ दल के पास मतदाताओं के 44 प्रतिशत को लेकर बनी। एक ओर एक तिहाई मतदाता की रूचि नहीं हैं लोकतंत्र में, जितने मतदाता मतदान केंद्र तक आने की आवश्यकता समझी, उसका 50 प्रतिशत से कम एक दल को देश को पांच वर्षों के लिए सौंपने की स्थिति बनती है. आवश्यकता इस बात की है कि हम मतदाता प्रतिशत को बढ़ाने के उपाय करें. यह बहुत सामान्य बात है कि शहरों में मतदान कम और ग्रामीण इलाकों में अधिक होता है. प्रजातंत्र का मूल है मतदान. देश की नीतियां और भविष्य इसी मतदान पर निर्भर करता है. ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, बेल्जियम, ब्राजील, चिली, साइप्रस, कांगो, इक्वाडोर, फिजी, पेरू, सिंगापुर, स्विट्जरलैंड सहित कई देशों में मतदान अनिवार्य है मतदान विलासिता नहीं है, अनिवार्य आवश्यकता है. यह बात समझनी आवश्यक होगी. ■

हम भारत के लोग... विलुप्त होता प्रश्न बोध

समय के साथ परिवर्तन नैसर्गिक और सतत प्रक्रिया है. लेकिन कुछ चुभते हुए प्रश्न भी हैं. यदि हम खाद्यान्न उत्पादन में अग्रणी हैं तो कुपोषण अभी भी हमारी समस्या क्यों है. यदि भारत की आर्थिकी प्रगति पर है तो भिखारियों की संख्या कम क्यों नहीं हो रही, बेरोजगारी शून्य क्यों नहीं हो रही. विद्युत् उत्पादन में हम सरप्लस हैं, तो कुछ को छोड़कर सभी डिस्कॉम घाटे में हैं जबकि विद्युत् दरें बढ़ रही हैं. यदि हम पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं तो केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार भारत की कुल 445 नदियों में से आधी नदियों का पानी पीने के योग्य क्यों नहीं है ? जवाबदेही का अकाल क्यों है देश में यह अनुत्तरित प्रश्न है. सन 2000 से 2010 के बीच देश के बीस राज्यों की 38 नदियों के संरक्षण के लिए 2607 करोड़ रूपये जारी किए गए। राष्ट्रीय नदी निदेशालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार सन 2001 से 2009–10 तक दिल्ली में यमुना की सफाई पर 322 करोड़, हरियाणा में 85 करोड़ का खर्च हुआ. उ.प्र. में गंगा, यमुना, गोमती की सफाई में 463 करोड़ की सफाई हो जाना, बिहार में गंगा के शुद्धिकरण के लिए 50 करोड़ का खर्च सरकारी दस्तावेज स्वीकार करते हैं। गुजरात में साबरमती के संरक्षण पर 59 करोड़, कर्नाटक में भद्रा, तुंगभद्रा, कावेरी, तुंपा नदी को साफ करने पर 107 करोड़। इस अवधि में पंजाब में अकेले सतलुज को प्रदूषण मुक्त करने के लिए सरकार ने 154.25 करोड़ रूपए खर्च किए, जबकि पश्चिम बंगाल में गंगा, दामोदर, महानंदा के संरक्षण के लिए 264 करोड़ का सरकारी धन लगाया गया। स्थिति में कोई सुधार नहीं यह बात अलग है, लेकिन देखना यह है कि जवाबदेही किसी की नहीं तय हुई.

एक सरकार परीक्षा में नकल करने को अपराध मानने का कानून बनती है. चुनाव में दूसरी पार्टी वादा करती है, अगर उनको चुना जाता है तो वे नकल के अपराध होने को नकार देंगे पहली कैबिनेट बैठक में इस कानून को निरस्त कर देंगे. यह पार्टी जीतती है, सरकार बनाती है और इस कानून को निरस्त करती है. यही सरकार आतंक के आरोपियों के विरुद्ध मुकदमे वापिस लेने का निर्णय लेती है, अदालत इस अनुरोध को ठुकरा देती है. कृषकों की आय दुगनी होना एक स्वप्न है, भरी भीड़ में एक कृषक से पूछा जाता है क्या आपकी आय दुगनी हुई ? उत्तर आता है जी हो गयी. प्रश्न नहीं पूछे जाते, कैसे हुई ? छोटी जोत एक बड़ी समस्या है जो कृषि के पूरे संचालन को लाभप्रद आर्थिकी नहीं बनाती, क्यों चकबंदी आज भी हमारी प्राथमिकता नहीं है ? वार्षिक रूप से सात करोड़ टन अनाज भण्डारण की अपर्याप्त व्यवस्था के कारण बर्बाद हो रहा है, भण्डारण को वैज्ञानिक रूप से सस्ता और टिकाऊ बनाने के बारे में चिंता कब की जाएगी यह प्रश्न है.

भाषा, बोली, परिधान, खान पान के वैविध्य के इस प्रजातंत्र में विभाजनों के मुद्दों की कमी नहीं है, लेकिन विश्व मंच पर यदि सशक्त भारत बनाना है तो भावनाओं पर नहीं, इतिहास पर नहीं, वैचारिक और सत्यनिष्ठ प्रश्नबोध को जीवित रखना आवश्यक है जो प्रतिध्वनित करें 140 करोड़ भारतीयों के एक स्वर में बोले गए तीन शब्द, हम, भारत के लोग ... ■

कर्तव्य मीमांसा

रोमन दार्शनिक एपिक्टेटस अनुसार नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने हितों को दूसरों के हितों से बिल्कुल अलग ना समझे. कर्तव्य को दो भागों में बांटा जा सकता है – पहले नैतिक कर्तव्य, जिसका आधार व्यक्ति की नैतिक चेतना है। इन कर्तव्यों का पालन व्यक्ति स्वयं करता है। यदि व्यक्ति इन कर्तव्यों का पालन न करें तो राज्य ऐसा करने के लिए उसे बाध्य नहीं कर सकता, न दंडित कर सकता है। दूसरे कर्तव्य हैं, वैधानिक कर्तव्य, जिन्हें राज्य कानून बनाकर व्यक्ति को जो उस राज्य में रहते हैं, इनका पालन करने के लिए बाध्य कर सकता है। उनका पालन व्यक्ति की सुरक्षा पर निर्भर नहीं है, इनका पालन न करने पर राज्य व्यक्ति को दंडित भी कर सकता है। मौलिक कर्तव्यों के बिना मौलिक अधिकार अधिकारों का पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता। मौलिक कर्तव्यों का अर्थ ऐसे कर्तव्यों से है जिनका अनुपालन व्यक्तिगत विकास और सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक है। नैतिक कर्तव्य में आत्म नियंत्रण चरित्र निर्माण अच्छा स्वास्थ्य सादा जीवन उच्च विचार आदर्श दिनचर्या और व्यवहार शिक्षक प्राप्त करना जीवन निर्वाह के लिए काम करना जैसे कर्तव्य आते हैं। कर्तव्य बोध से तात्पर्य है संवेदनापूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन करना। कर्तव्यपरायणता को समझें तो कर्तव्यपरायणता का अर्थ अपने अंत तक आदेशों का पालन का अभ्यास अंतः करण से मनुष्य को अपने कर्तव्य का बोध होता है। कर्तव्यपरायण व्यक्ति सदा अपने कर्तव्य का पालन करता है। वह न्यायशील, धार्मिक तथा नैतिक दायित्व का पालन करता है। वह अपनी इच्छाओं और साधनों पर विचार करता है वह खुद अपनी चरित्र की मीमांसा करता है वह आत्मनिर्भर होता है कि किस परिस्थिति में उसका क्या कर्तव्य है यह वह जानता है। ■

हमारा भटकता प्रदर्शन बोध

किसी सरकारी योजना में संसाधनों को झोंकना और आंकड़े चमकाना देश में परंपरा बन गयी है. अनेक अच्छे उद्देश्य से प्रारम्भ किये गए प्रयास अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके. कुछ उदाहरण :

– गरीबी उन्मूलन में संस्थागत वित्त को हथियार बनाने की आवश्यकता का औचित्य तो है लेकिन उसे नियंत्रित न कर पाना एक अभिशाप रहा. गरीबी उन्मूलन के प्रारंभिक प्रयासों में कम ब्याज दर पर वित्तपोषण शुरू हुआ और इस योजना का नाम डीआरआई था. कालांतर में ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरग्रटेड रूरल डेवलपमेंट प्लान बनाया गया जिसमें परंपरागत ग्रामीण रोजगार को वित्तपोषण कर आर्थिकी को सुदृढ़ करने का प्रयास हुआ. आंकड़े प्रभावित करते थे लेकिन मैदानी स्थिति यह थी कि कभी कभी ऐसे लाभार्थी किराना दुकान के लिए ऋण पा गए जिन्हें एक किलो में कितने ग्राम होते हैं या सामान कैसे तौला जायेगा की कोई जानकारी नहीं थी. लोकलुभावन बनाने की गति में हमारी योजनाएं मत संग्रह का एक साधन बन कर रह गयीं.

– सरकारी बैंकों में जमा संग्रह की होड़ के चलते नित नयी योजनाएं बनाई गयीं. इनमें एक योजना जो अनेक नामों से जानी गयी वह थी, जमाकर्ता के घर से राशि को प्राप्त करना. यद्यपि इस योजना को चलाने वाले एजेंट कहलाते थे लेकिन मुकदमों की श्रंखला का उदय हुआ जब एजेंट ने स्वयं को बैंक कर्मी बताते हुए वे सभी सुविधाएँ मांगी जो स्थाई कर्मियों को मिलती हैं. निगरानी की कमी के कारण इस योजना में बहुत फ्राड हुए और जमाकर्ताओं का पैसा वास्तव में बैंक में जमा हुआ ही नहीं. दूसरा, एजेंट की कमीशन और ब्याज मिलकर इतना हो रहा था कि बचे पैसे को ऋण के रूप में देकर लाभ कमाना बैंक के लिए संभव नहीं था. योजना बंद करना एक विवशता बन गया.

– 1960 के दशक से गोबर गैस को ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोत बनाने पर सरकार ने काम शुरू किया. चीन में आज गोबर गैस संयंत्रों का संचालन निरंतर हो रहा है जबकि भारत में लगभग 80 प्रतिषत संयंत्र बंद हैं. तकनीक असफल नहीं हुई है हमारे देश में, व्यवस्था असफल रही है. हमारी इस क्षेत्र में असफलता के कई तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक कारण रहे हैं। रखरखाव और तकनीकी समस्याएँ, यह विचार कि "एक बार लगा दिया, अब अपने आप चलेगा", सब्सिडी–केंद्रित सोच, गुणवत्ता से ज्यादा संख्या पर जोर, इस योजना के महत्वपूर्ण कारण रहे. एक कारण यह भी था कि महिलाएँ चूल्हे पर जल्दी और नियंत्रित आग चाहती थीं और जब "लकड़ी मुफ्त है, तो मेहनत क्यों करें ?" का विचार भी एक बड़ी बाधा बना. छोटे किसानों के पास 2–3 पशु ही होते हैं, जिससे पर्याप्त गैस नहीं बनती, पशु चरागाह में चले जाते हैं, गोबर नियमित नहीं मिल पाना भी एक बड़ा कारण रहा. भारत में अधिकांश संयंत्र व्यक्तिगत थे जबकि चीन जैसे देशों में समुदाय आधारित मॉडल सफल रहा. भारत में साझा जिम्मेदारी और पेशेवर संचालन की कमी इस योजना के असफल होने का एक बड़ा कारण रहा. चीन ने इसे सरकारी मिशन की तरह चलाया, भारत ने योजना की तरह चलाया. इस प्रकार एक ऐसी योजना जो हमारी ऊर्जा आवश्यकता, खेतों के लिए खाद और पशुधन संवर्धन का मंच बन सकती थी, असफल रही. ■

दल बदल-यह कैसा कर्तव्यबोध ?

दल–बदल राजनीतिक अस्थिरता को जन्म और प्रोत्साहन देता है. भारत में दल–बदल स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही शुरू हो गया था. सन् 1947 से सन् 1967 तक दल–बदल राष्ट्रीय कांग्रेस के पक्ष में रहा. सन् 1967 से सन् 1971 तक दल–बदल सत्ताधारी दल और विरोधी दलों के मध्य होता रहा.

प्रभावशाली दलीय नेतृत्व का अभाव इसका बड़ा कारण रहा क्योंकि स्वाधीनता संग्राम के प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले नेता सक्रिय राजनीति के क्षेत्र से लगभग विदा हो चुके थे. चुनावी गणित के चलते चौथे आम चुनाव के बाद काँग्रेस और कुल मिलाकर विरोधी दल के सदस्यों की संख्या लगभग सन्तुलित होने के कारण प्रत्येक सांसद की स्थिति इतनी महत्त्वपूर्ण हो गयी कि वह स्वयं को सरकार की 'कुंजी' समझने लगा. इसके बाद काँग्रेस के संसदीय बोर्ड ने दल–बदलुओं को कांग्रेस में शामिल करने के प्रश्न पर अपनी नीतियों में औपचारिक परिवर्तन किया. संसदीय बोर्ड ने यह निर्णय किया कि गैर–कांग्रेसी विधायकों को कांग्रेस में शामिल किये जाने के बारे में सभी प्रतिबन्ध हटा दिये जायें और इस मामले को दल के राज्य एककों के विवेकाधिकार पर छोड़ दिया जाये. इस नीति के फलस्वरूप बहुत से दल–बदलू जनप्रतिनिधियों को कांग्रेस में सम्मिलित कर लिया गया. कांग्रेस कार्य समिति ने हैदराबाद अधिवेशन में राज्यों के कांग्रेसी विधायकों को अन्य दल–बदलू विधायकों के साथ मिल–जुलकर सरकारें बनाने के लिए अधिकृत किया.

दल बदल का मुख्य कारण सत्ता प्रभुता का मोह और पद–लोलुपता ने देश के राजनीतिक वातावरण को इतना खराब और दूषित बना दिया कि चुने हुए जनप्रतिनिधियों की दृष्टि में सिद्धान्त, आदर्श और नैतिकता का मूल्य और महत्त्व कम हो गया. विधायकों में अवसरवादिता की भावना अधिक हो गयी. इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत संघर्ष और दल के नेताओं के बीच व्यक्तिगत संघर्ष और स्वभावों के न मिलने के कारण भी कई विधायक दल छोड़ने के लिए बाध्य हो जाते हैं. कई बार पार्टी में टिकटों का बँटवारा न्यायोचित नहीं होता. लगभग सभी प्रमुख दलों में दादागिरी की स्थिति है और जब दल को किन्हीं वरिष्ठ सदस्यों के दल के सर्वोच्च नेताओं के साथ अच्छे सम्बन्ध नहीं होते तब टिकटों के बँटवारे और अन्य अवसरों पर उन्हें निरन्तर उपेक्षा सहन करनी होती है और यह स्थिति उन्हें दल–बदल के लिए प्रेरित करती है. धन का प्रलोभन अब इतना आम हो गया है कि झारखण्ड मुक्ति मोर्चे से समर्थन के प्रकरण में जो पैसों का लेनदेन सामने आया उसमे सजा भी हुई. तत्कालीन केन्द्रीय गृह मन्त्री ने लोकसभा में एक बार बताया था कि दल–बदलू का भाव हरियाणा में बीस हजार रुपये से चालीस हजार रुपये तक आँका जा रहा है. अब यह राशि लाखों व करोड़ों में पहुँच चुकी है.

भारतीय मतदाता दल–बदल की घटना से उदासीन ही रहा. दल–बदल से न तो साधारण मतदाता को कोई धक्का लगा और न ही कोई चोट ही पहुँची ऐसे कितने उदाहरण सामने आये जब दल–बदल करने वाले विधायकों का सार्वजनिक रूप से स्वागत किया गया, फूलमालायें पहनायी गयीं और उनका जुलूस निकाला गया. मध्य प्रदेश में एक सरकार विधायकों की खरीद से बदली, जब ये विधायक नयी पार्टी से चुनाव के मैदान में गए तो वे पुनः विजयी रहे.

भारत में वैचारिक ध्रुवीकरण का अभाव एक दो दलों के अतिरिक्त पूरी राजनीति को दूषित कर रहा है. कोई भी जनप्रतिनिधि किसी भी दल में मिल जाये तो उसके सिद्धान्तों और विचारों पर कोई खास असर नहीं पड़ता. संविधान विशेषज्ञ डॉ. सुभाष कश्यप के अनुसार लिखते हैं कि "जिस आसानी से वे एक दल का परित्याग कर दूसरे दल में सम्मिलित होते हैं उससे एक बात तो बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि वे किसी राजनीतिक सिद्धान्त अथवा किसी दल की राजनीतिक विचारधारा को अधिक महत्त्व नहीं देते. इसके साथ–साथ विभिन्न दलों में कोई वास्तविक विचारात्मक ध्रुवीकरण नहीं है.

वर्तमान स्थितियां और भयावह हैं. अब वैचारिक प्रतिबद्धता नहीं, सिद्धांतों के प्रति समर्पण नहीं, अपने आपराधिक प्रकरणों के चलते जनप्रतिनिधि सत्तारूढ़ दल की सदस्यता ले रहे हैं. यह एक बड़ा प्रहसन है कि सत्तारूढ़ दल ने एक ऐसे व्यक्ति को महाराष्ट्र में अपना सत्ता का भागीदार बनाया जिसके जेल में चक्की पीसने की भविष्यवाणी सत्ताधारी दल के गृह मंत्री ने की थी. हरियाणा की हसनपुर सीट से विधायक गयालाल ने एक दिन में तीन बार पार्टी बदल कर रिकॉर्ड बनाया. इनके गुरु लोहारू से विधायक अधिवक्ता हीरानंद राय ने एक दिन में 6 बार पार्टी बदलने का आरोप झेलकर रिकॉर्ड बनाया. एक अनुमान के अनुसार वर्तमान सत्तारूढ़ दल में बाहर से आने वाले नेताओं का प्रतिशत सत्तारूढ़ दल के नेतृत्व में एक चौथाई है. एक राज्य में एक राजनेता जिसपर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप थे, आज दल बदल कर उसी सीमावर्ती राज्य का मुख्यमंत्री है.

समय अंकेक्षण, अन्वेषण अनुसंधान और विलाप का नहीं है. यदि राजनैतिक शुचिता रसातल में जाती है तो इसमें सुधार के लिए प्रजातान्त्रिक व्यवस्था कारगर नहीं होगी. बात कट्टर ईमानदारी की हो या पार्टी विथ अ डिफरेंस हो, यह दृश्य हृदय विदारक है कि प्रतिबद्धता और सैद्धांतिक इस हवन में समिधा चारों दिशाओं, से आ रही है, जिसमें राजनेता, मतदाता, सरकारें और विपक्ष सब सम्मिलित हैं. ■

ग्राहक के प्रति हमारा शून्य कर्तव्यबोध

भारत में सचमुच खाद्य मिलावट को स्वास्थ्य विशेषज्ञ इसे 'धीमी हत्या' बता रहे हैं. इस बात के प्रमाण हैं कि मिलावट के चलते कैंसर, हृदय रोग और किडनी फेलियर जैसी बीमारियों बढ़ रही हैं. यूरोपीय संघ ने 2019–2024 के बीच 400 से ज्यादा भारतीय उत्पादों को कैंसरकारी पदार्थों से दूषित पाया, जिनमें मसाले, मछली और फल शामिल थे। आश्चर्य की बात यह है कि एक शताब्दी से अस्तित्व में रही कंपनी के मसाले या गेरुआ वस्त्र पहने किसी व्यक्ति द्वारा समर्थित शहद के सैंपल दूषित पाए गए हैं. एक अलिखित वादा होता है खाद्य पदार्थों के उत्पादकों का उपभोक्ताओं के साथ कि वह ऐसी गुणवत्ता का सामान देगा जिसे वह स्वयं उपयोग कर सके. स्थिति इतनी भयावह है कि इस बात का भय है कि आने वाले 15 साल में देश का हर व्यक्ति कैंसर का शिकार हो जायेगा.

खेदजनक बात यह है कि भारत में लम्बे समय से अनाज में पत्थर, दूध में यूरिया और मसालों में कृत्रिम रंग मिलाये जा रहे हैं. यह मामला अब एक महामारी के रूप में उपस्थित है. खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) की मानी जाए तो त्योहारों के मौसम में मिलावट के मामले 30 प्रतिशत तक बढ़ जाते हैं। दूध, घी, पनीर, मावा, तेल और मसाले ये सब आज जहर की तरह बन चुके हैं। गुजरात में 198 दूध और पनीर के नमूने अमानक हों या आगरा में 2 क्विंटल मिलावटी खोआ या सूरत में 745 किलो नकली पनीर, तिरुपति के प्रसिद्ध लड्डू के घी मिलावट, या वनस्पति तेल, बीटा कैरोटीन और एसिड एस्टर जैसे रसायनों बनाया जाता घी, हर तरफ तबाही का सामान है, और सामान भी ऐसा जिसके बिना जीवन सम्भव नहीं.पतंजलि का घी भी गुणवत्ता परीक्षण में फेल हो गया, जिसमें मिलावट की पुष्टि हुई।

ये सारे दृष्टांत मात्र नमूने हैं. एक राज्य जम्मू–कश्मीर की बात करें तो वर्ष 2025 में 13,944 निरीक्षण हुए, जिनमें 21 आपराधिक मामले दर्ज किए गए। लखनऊ में केएफसी, मैकडॉनल्ड्स और हल्दीराम जैसे ब्रांडों के 36 नमूने फेल हुए, जहां बैक्टीरिया और बासी सामग्री मिली। गोरखपुर की फैक्ट्री से 40 क्विंटल नकली पनीर (पोस्टर कलर, डिटर्जेंट और सल्फ्यूरिक एसिड से बना) जब्त होना, पाली में 4660 किलो मिलावटी मावा, देवली में मूंगफली तेल के नमूने इस बात का स्पष्ट द्योतक हैं कि हम एक ऐसी स्थिति में आ गए हैं जिसमे लाभ के लालच में उत्पादक या वितरक ग्राहक के प्रति कर्तव्यबोध को किनारे कर चूका है.

मिलावट का असर तत्काल और दीर्घकालिक दोनों है। तत्काल प्रभाव में उल्टी, दस्त, फूड पॉइजनिंग शामिल हैं, जैसा कि हाल के कफ सिरप कांड में 14 बच्चों की मौत हुई। लेकिन दीर्घकालिक खतरा और भी भयानक है। कैडमियम, पेस्टीसाइड्स और मेटानिल येलो जैसे रसायन कैंसर, लीवर–किडनी डैमेज और हृदय रोग का कारण बनते हैं। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के अनुसार, मिलावट से जुड़े गैर–संक्रामक रोगों में 20 प्रतिशत वृद्धि हुई है। दक्षिण भारत में दूध और फलों में मिले रसायन गॉलब्लैडर कैंसर और ड्रॉप्सी के मामलों को बढ़ा रहे हैं। बैकरी आइटम्स में कृत्रिम रंगों से कैंसर का जोखिम दोगुना हो गया है। फ्रंटलाइन पत्रिका के अनुसार, मिलावट से क्रॉनिक डिजीजेज में उछाल आया है, खासकर कैंसर और कार्डियोवस्कुलर डिसऑर्डर में। भारत पहले से ही एशिया में कैंसर के मामलों में तीसरा सबसे बड़ा देश है, और मिलावट इसे और बढ़ावा दे रही है। ग्रामीण इलाकों में जहां जैविक खेती कम है, प्रभाव ज्यादा पड़ता है। शहरीकरण और प्रोसेस्ड फूड के बढ़ते उपयोग से मध्यम वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहा है। स्वाभाविक है कि वैश्विक व्यापार में भारतीय निर्यात भी प्रभावित हो रहा है और घरेलू स्तर पर समस्या गंभीर होने के स्पष्ट कारण हैं.

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिलावट को 'सामाजिक अपराध' कहा और तीन नई माइक्रोबायोलॉजी लैब्स शुरू कीं। एफएसएसएआई ने त्योहारों पर विशेष अभियान चलाए, लेकिन सजाएं अपर्याप्त हैं. रामेश्वरम कैफे मामले में कीड़े मिलने पर एफआईआर दर्ज हुई, लेकिन मालिकों को सजा मिलने में कितना समय लगेगा यह निश्चित नहीं है. मिलावटी दूध के मामले में कोई डेयरी सील होती है तो उसके दोबारा खुलने का डर रहता है। समस्या यह है कि दंड अपर्याप्त हैं दृ अधिकतम 10 लाख का जुर्माना या 7 साल की सजा, लेकिन लागू नहीं होता। जाँच की सुविधा भी पर्याप्त नहीं है.

मिलावट सिर्फ व्यापारिक लालच नहीं, बल्कि जन स्वास्थ्य पर हमला है। अगर 15 साल में कैंसर न फैले, तो इसके लिए सरकार, उद्योग और उपभोक्ता सबको जागना होगा। घर पर टेस्ट किट्स इस्तेमाल करें, ब्रांडेड उत्पाद चुनें और शिकायत दर्ज कराएं। अन्यथा, हमारा भोजन ही हमारा काल बन रहा है. जैविक खेती को प्रोत्साहन, मिलावट पर न्यूनतम बीस वर्ष का कारावास और संपत्ति जब्ती जैसे कदम आज के समय की मांग हैं. एफएसएसएआई को स्वायत्त बनाया जाना चाहिए जो अभी स्वास्थ्य मंत्रालय के अधीन है ऐसे कदम हैं जिनकी तात्कालिक आवश्यकता है. हर जिले में मोबाइल टेस्टिंग वैन और एआई–आधारित निगरानी करना जन जागरूकता अभियान स्कूलों में मिलावट की पहचान का प्रशिक्षण और अंत में सबसे आवश्यक भ्रष्टाचार पर प्रहार करारा प्रहार, जो निरीक्षक रिश्वत लेते हैं, उन्हें बर्खास्त किया जाना इस दिशा में आवश्यक कदम हैं. ■

राजनैतिक तत्वबोध की कमी से उपजी नियति

स्वतंत्रता के उपरांत राजनैतिक सूझबूझ के अभाव के गिने चुने अवसर ऐसी थे, जो भारत की नियति को निर्धारित करने वाले दृष्टांत के रूप में इतिहास में दर्ज हैं.

– तत्कालीन प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हजारों कार्यकर्ताओं को आपातकाल में कारागार में डालने का निर्णय अपने साथ दूरगामी परिणाम लेकर आया. इससे संघ कांग्रेस का एक वैचारिक प्रतिद्वंदी के रूप में स्थापित हुआ. कांग्रेस पार्टी के वामपंथी समानता मूलक समाज के पक्षधर और स्वतंत्र पार्टी के पूंजीवाद समर्थित विचारों में भिन्नता तो थी लेकिन वैचारिक रूप से, संघ के कार्यकर्ताओं को कारागार में डालकर इंदिरा गाँधी ने संघ को एक राजनैतिक औचित्य देने की भूल की.

– वर्ष 1989 में राजीव गाँधी का 197 लोकसभा सीट जीतने के बाद भी सरकार बनाने का दावा न करना जबकि उस समय कांग्रेस के पास सबसे बड़ी पार्टी होने का श्रेय था. कांग्रेस ने 197 सीटों के बाद सत्ता के लिए दावा नहीं किया जबकि आने वाले 1996, 1998, 1999 और 2004 में किसी भी एक पार्टी को इस संख्या की सीटें नहीं मिली थीं. वर्ष 2009 में कांग्रेस को 206 लोक सभा सीटों में विजय प्राप्त हुई. भारत में गठबंधन सरकार के उदय को देख पाने में असफल रहने से कांग्रेस को केंद्र से हटकर हाशिये पर जाना पड़ा.

– वर्ष 2004 में अटल सरकार का मध्य प्रदेश राजस्थान विधान सभा में विजय के समय से 6 माह पूर्व लोक सभा चुनाव करवाना भी एक ऐसा ही अवसर था. तीन तिमाही के सकल घरेलु उत्पाद के आंकड़े आठ प्रतिशत वार्षिक के संकेत दे रहे थे, यहाँ से उपजा एक नारा ''शाइनिंग इंडिया''. सत्तारूढ़ दल का यह मानना कि कुछ राज्यों में उसकी जीत का प्रभाव पूरे देश पर पड़ेगा, गलत सिद्ध हुआ. यहाँ एक बात और कही जाती है कि अटल जी के स्वास्थ्य को लेकर चिंताओं के चलते, इस चुनाव को समय पूर्व करवाना एक षड्यंत्र था, जो पार्टी के अंदर ही उपजा था. एक बड़ी भूल भाजपा की, अपने साथी दलों को साथ न रख पाना थी. गुजरात दंगों के बाद की परिस्थितियों में भाजपा 138 सीट पाने में सफल रही, यह संख्या कांग्रेस सांसदों की संख्या से 7 कम थी. इस स्थिति में न केवल कांग्रेस को एक दशक तक सत्ता सुख प्राप्त हुआ और अडवाणी सहित अनेक नेताओं की महत्वाकांक्षाओं पर ग्रहण लगा, इस काल में नरेंद्र मोदी को राष्ट्रीय नेता बनने की प्रक्रिया का प्रारम्भ हुआ. ■

हमारे ध्वस्त उड्डयन बोध

नागरिक उड्डयन का अर्थ है किसी देश की गति. किसी समय क्रीमी लेयर को आवंटित अंतर शहरीय उड़ानें तब लोकप्रिय हुईं जब सरकारी एयरलाइन्स के अतिरिक्त निजी खिलाडी भी इस क्षेत्र में आये. एयर इंडिया का निजीकरण से सरकारीकरण और फिर निजीकरण से एकाधिकार के मुद्दों पर नागरिक उड्डयन खबरों में रहा है. इस आलेख का विषय हमारे उड्डयन शिष्टाचार पर है. एक विमान में बैठे सभी यात्री एक ही समय पर गंतव्य पर पहुंचेंगे यह बात अक्सर विस्मृत हो जाती है कम से कम हमारे जनप्रतिनिधियों द्वारा. शांति से विमान यात्रा करने के अपवाद स्वरुप पिछले तीन वर्ष की अवधि में 255 यात्रियों को नो फ्लाई जोन में रखा गया है. लोक सभा में दी गयी जानकारी के अनुसार 'नो फ्लाई लिस्ट' में रखे जाने के कारण दुर्व्यवहार, झगड़े और चालक दल के सदस्यों के साथ मारपीट हैं. अनंतपुर लोक सभा सेट से सांसद जे सी दिवाकर विशाखापत्तनम हवाई अड्डे पर निर्धारित समय से देरी से आये तब तक विमान के द्वार बंद हो चुके थे. उन्होंने बोर्डिंग पास माँगा जो नहीं दिया जा सकता था क्योंकि काउंटर बंद हो चूका था. माननीय ने काउंटर पर रखा एक प्रिंटर उठाकर फर्श पर दे मारा, एयरलाइन स्टाफ से धक्का मुक्की की. शिवसेना सांसद रविंद्र गायकवाड़ ने जब एयरलाइन स्टाफ से धक्का मुक्की की तो उन्हें एयरलाइन्स ने नो फ्लाई जोन में दाल दिया. रोचक बात यह है कि शिव सेना ने इस मामले को लेकर लोक सभा में सांसद के विशेषाधिकार हनन को मुद्दा बनाया. मध्य प्रदेश से सांसद भगीरथ प्रसाद को बिजनेस क्लास टिकट होने के बाद भी इकॉनमी में बैठने को कहने की शिकायत हो या शिवराज सिंह को एयरक्राफ्ट की टूटी सीट पर यात्रा करने की विवशता की शिकायत समझ में आती है. सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर की एक विशिष्ट सीट पर बैठकर यात्रा करने की जिद के कारण विमान देरी से प्रस्थान कर पाया. अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों में हमारा व्यवहार कुछ अलग नहीं है. अप्रैल 2023 में लंदन की फ्लाइट में एक यात्री को उसके एयरलाइन स्टाफ के साथ दुर्व्यवहार के आरोप पर वापिस दिल्ली छोड़ा गया. ■

विमान में यात्रा करने के निषेध की नो फ्लाई सूची में अब तक 375 लोग स्थान पा चुके हैं. इन्हें विमान में उचित व्यवहार न करने के कारण इस सूची में डाला गया है. वर्ष 2023 में 110 व वर्ष 2024 में 82 लोग इस सूची में डाले गए हैं. ■

हमारे तालाब और भविष्यबोध का सूखा

सांस्कृतिक रूप से विभिन्नताओं से भरे देश में तालाबों को संस्कृति का ही एक हिस्सा माना गया है, जहां तलाबों व विभिन्न जलस्रोतों को इंसानों की भांति नाम दिए जाते थे। तालाबों की पूजा की जाती थी। खेती और पीने सहित पानी की अन्य जरूरतों के लिए लोग तालाबों पर ही निर्भर थे। कई गांवों में पशुओं के लिए अलग तालाब हुआ करते थे। विभिन्न पौराणिक कथाओं में भी तालाबों का उल्लेख मिलता है, जहां लोग पानी लेने व स्नान के लिए जाते थे। एक अनुमान के अनुसार आजादी के पहले भारत में करीब 24 लाख तालाब हुआ करते थे। भूमिगत जलस्तर बनाने में तालाबों की अहम भूमिका थी, लेकिन वर्तमान में तालाब केवल किताबों और सरकारी फाइलों तक ही सिमटते जा रहे हैं और देश की जनता ऐसे विकराल जल संकट की तरफ बढ़ रही है, जहां बूंद–बूंद पानी के लिए मोहताज होना पड़ सकता है।

सिर्फ एक जिले की बात करें तो अकेले हरिद्वार में लगभग 1668 तालाब हैं। कई तालाबों पर अतिक्रमण कर लोगों ने बहुमंजिला भवन बना रखे हैं। वर्ष 2018 में नैनीताल हाईकोर्ट ने आदेश दिया कि तालाबों से अतिक्रमण हटाए जाएँ. जब गिनती की गयी तो अकेले हरिद्वार तहसील में 330 में से 61 तालाबों पर, रुड़की तहसील में 680 में से 437 तालाबों पर, लक्सर तहसील में 367 में से 316 तालाबों पर और भगवानपुर तहसील में 291 में से 124 तालाबों पर अतिक्रमण होने की बात सामने आई। तत्काल तहसील प्रशासन ने खानापूर्ति करते हुए हरिद्वार में तीन, रुड़की में 47, लक्सर में 86 और भगवानपुर में 19 तालाबों से अतिक्रमण हटाया, लेकिन इसके बाद मामला ठंडे बस्ते में चला गया। जिस कारण हरिद्वार में 58, रुड़की में 390, लक्सर में 230 और भगवानपुर में 105 तालाबों पर अतिक्रमण है।

दूसरी तरफ भोपाल के बड़े तालाब की बात करें तो वर्ष 2010 में जो तालाब 33.5 वर्ग किमी का था वह वर्ष 2025 में घटकर 29.6 वर्ग किमी रह गया है। लोक सभा चुनाव हुए भोपाल में, हर प्रकार की तू तू मैं मैं हुई, भोपाल के बड़े तालाब का किसी भाषण, किसी सभा में उल्लेख तक नहीं हुआ. लगभग यही हाल पूरे देश का है.

जल संरक्षण की इन प्राकृतिक धरोहरों को पाटकर भवन निर्माण का नुकसान यह हुआ कि बरसात का पानी पोखर, कुओं, तालाबों आदि में संग्रहित होकर भूजल को रिचार्ज करने के बजाए नालों के माध्यम से नदियों और नदियों से समुद्र में जाकर व्यर्थ होने लगा। इससे वर्षा जल को भूमि के अंदर जाने का माध्यम नहीं मिला और भूजल तेजी से कम होने लगा। तो वहीं भू–जल पर अधिक निर्भर होने के कारण हमने इतना पानी खींच लिया कि हैदराबाद, दिल्ली, चेन्नई, बेंगलुरु, कोलकाता आदि बड़े शहरों में भूजल समाप्त होने की कगार पर पहुंच गया है। जल गुणवत्ता सूचकांक में 122 देशों की सूची में भारत 120 की स्थिति में आ गया. दूसरी तरफ आधुनिकता के दौर में बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़े स्तर पर जंगलों के कटान ने आग में घी डालने का काम किया। वनों के कटान से मिट्टी ढीली पड़ गई। हल्की बरसात में भू–कटाव शुरू हो गया। इसका सबसे ज्यादा नुकसान पहाड़ी इलाकों में हुआ। पेड़ों के कटने से पर्यावरण संतुलन बिगड़ने लगा और गर्म दिन गढ़ रहे हैं। भूमि में पहले से ही जल की कमी होने के कारण वनस्पतियों आदि को पर्याप्त नमी और जल नहीं मिला, इससे उपजाऊ भूमि मरुस्थलीकरण की चपेट में आ गई और भारत की करीब 24 प्रतिशत भूमि मरुस्थल में परिवर्तित हो चुकी है. देश की लगभग 40 प्रतिशत जनता की पहुँच स्वच्छ जल तक नहीं है. जनता सरकार को, सरकार जनता को कोस रही है, यह मामले का निष्कर्ष है.

जल की इस भीषण समस्या को देखते हुए कई संगठन जरूर सक्रिय हुए और उन्होंने लोगों को जागरुक करना शुरू किया। नतीजा ये रहा कि देश के कई गांवों में तालाब निर्माण का कार्य शुरू हुआ। कई लोगों/किसानों ने स्वयं के स्तर पर भी तालाबों का निर्माण व सफाई की। सभी के इन प्रयासों से देश भर में हजारों तालाब बनाए जा चुके हैं. सरकार ने एक जलशक्ति मंत्रालय का गठन किया गया। उल्लेखनीय यह है कि आज भी देश के करोड़ों लोग पानी बचाने के प्रति जागरुक नहीं हैं। 40 प्रतिशत जल किसी न किसी कारण से व्यर्थ हो जाता है। तालाबों और नदियों पर अधिकारियों और मंत्रियों की सांठगांठ से धड़ल्ले से अतिक्रमण हो रहा है। पर्यावरण संरक्षण की दुहाई देने वाले मंत्रियों और अधिकारियों के काल में ही विकास के नाम पर पर्यावरण को क्षति पहुंचाई जा रही है। एक सूबे के मुख्यमंत्री का कथन उल्लेखनीय है, वे कहते हैं ''विकास न करें तो क्या हिमालय चले जाएँ ?''

जल संसाधन सांझे हैं, विरासत हैं, जिसे अच्छी स्थिति में हमें अगली पीढ़ी को सौंपना है. इस बात की समझ का अभाव घातक सिद्ध हो रहा है.■

बैंगलोर में 42, दरभंगा में 50, हरियाणा में 200, कलकत्ता में 9 तालाब और झीलें पाटकर आवासीय परिसर बनाए गए हैं. वसई में 108 तालाबों में 28 ही बचे हैं.■

संदर्भवश

–पर्यावरण के प्रति जागरूकता का प्रसंग था जब सुप्रीम कोर्ट ने अरावली पर्वत का पर्वत होना, उसकी ऊँचाई से सीमांकित किया. सौ मीटर से ऊंची पर्वत शिखर को छोड़कर बाकी को अरावली न मानने का निर्णय. वैध अवैध खनन के चलते देश की सबसे प्राचीन पर्वतमाला के नष्ट होने का अर्थ था, रेत की आँधियों के रास्ते में खड़ा यह पर्वत जब न होगा तो दिल्ली तक धूल की आँधियों का प्रकोप बढ़ता. नवंबर में सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय को रोक दिया है, यह संतोष का विषय है.

– खबर है कि रेलवे में ब्रिटिश काल की ठसक का मार्च 26 तक अंत होने जा रहा है. एक जीआरपी का सिपाही, डीआरएम के ऑफिस के लिए सिर्फ इसलिए नियुक्त था कि वो साहब को आने जाने पर सैल्यूट करे. ऑफिसर्स के घर पर रेलवे कर्मचारियों को काम करने से मनाही के बाद तीस हजार व्यक्ति अब अपनी रेलवे की ड्यूटी करेंगे, पहले साहब की चाकरी करते थे. इंस्पेक्शन सैलून नामक राजसी ठाठ की बोगी को यात्री गाड़ियों में लगाया जायेगा ऐसा भी प्रस्ताव है. यह सब बहुत पहले करने की आवश्यता थी. देर आयद दुरुस्त आयद.

–विश्व पटल अब प्रहसन का मंच बन गया है. ट्रंप कह रहे कि वेनेजुएला का चौधरी उनके डांस की नकल कर रहा था इसलिए गुस्से में कार्यवाही की है. इधर रूस ने अपने एक तेल वाहक को भेज दिया वेनेजुएला तेल लेने, अमेरिकन प्रतिबंध प्रभावी हैं वेनेजुएला पर. रूस ने अपने जलपोत पर नया नाम पेंट करके धोखा देने का प्रयास किया, अमेरिका ने वह जलपोत जब्त कर लिया. एक बात देखने की यह है कि मामला लीबिया या इराक जैसा दबा छुपा न था वेनेजुएला का. ट्रंप ने घोषित कर रखा है अगला शिकार कौन से देश होंगे. जापान, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश में तख्तापलट का एक स्पष्ट तरीका है. राष्ट्रों पर कर्ज का बोझ बढाकर आर्थिकी तहस नहस कर, किसी बहाने से सड़कों पर उतारो भीड़ को, और इस अराजकता में किसी अपने पिठ्ठू को उस देश की बागडोर सौंप कर उसकी सम्पदा का दोहन करो. यदि यही कथित न्यू वर्ल्ड आर्डर है, तो स्थितियां अत्यंत गंभीर हैं.

–वेदांता समूह के मुखिया के पुत्र का एक सड़क दुर्घटना में देहांत होना एक दुखद समाचार है. बच्चे की फोटो देखकर मन द्रवित हो उठा. इंदिरा जी का संजय का क्षत विक्षत शरीर देखना, राजीव गांधी के शव की पहचान उनके जूते से, माधवराव सिंधिया के हवाई दुर्घटना में मिले शव की पहचान उनकी अंगूठी से होना, प्रसिद्ध गजल गायक जगजीत सिंह का फोन बजता है, विवेक उनके पुत्र का एक्सीडेंट हो गया है, वे अस्पताल फोन करते हैं, हाउ इज बब्बू, जवाब आया, ही इज डेड. कलेक्टर थे सक्सेना जी जबलपुर में, उनका युवा बेटा दिल्ली में था, जरा सी बीमारी में चल बसा. कितना बस है हमारा नियति पर. कबीर कहते हैं, काल अचयंता झपड़सि, ज्यों तीतर को बाज या पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात, देखत ही छुप जायेगा ज्यों तारा परभात. रहस्य है या माया, छलावा है या और कुछ पर सच यही है, लाभ हानि जीवन मरण, यश अपयश, विधि हाथ. धरती पर केंद्र में शायद हम नहीं हैं, कोई और है नियंता.

–संस्थानों में कनिष्ठ कर्मचारियों की प्रताड़ना और अपमान के मामले बढ़ रहे हैं. एक दृष्टांत है टाटा स्टील के एम. डी एक कंपनी से कोई बड़ी डील करने के पहले, टाटा ग्रुप के चेयरमैन रतन टाटा से बात करना चाहते थे. बातचीत में डील पर दोनों के विचार भिन्न थे, रतन ने कहा, जैसा आप ठीक समझो करो, मेरी बात मैने कह दी है. इसके बाद फोन कट गया. एम डी तनाव में था. क्या रतन ने खीझ कर फोन काट दिया है. कुछ देर बाद रतन का फोन आता है एम डी को, सुनो उस डील को आप समझ लो, मैने फोन यह बताने के लिए किया था कि फोन कट गया था, मैने नहीं काटा था. अपने सहकर्मी के प्रति इतनी संवेदनशीलता और सम्मान की परंपरा के चलते टाटा और रतन दोनों आज भी सम्मानित नाम हैं.

– मध्य प्रदेश का इंदौर जो देश के सबसे साफ शहर के विशेषण से अलंकृत है, में दूषित पेय जल के कारण 15 लोग अपनी जान से गये. कुछ अधिकारी निलंबित किये गए. पेय जल और सीवरेज लाइन का साथ होना इस घटना का एक बड़ा कारण बताया जा रहा है. जांच, मुआवजे की घोषणा, परिपाटी के रूप में स्थापित है. जनप्रतिनिधियों की नैतिकता और अधिकारियों की जिम्मेदारी के बीच का सच मृतकों की संख्या पर विवाद के रूप में प्रस्तुत है. इन्ही परिस्थितियों को गालिब शब्द देते हैं '' हैरां हूँ, दिल को रोऊँ कि पीटूँ जिगर को मैं, मकदूर हूँ तो साथ रखूँ नौहागर को मैं'' (मकदूर –सामर्थ्य, नौहागर – मृत्यु पर विलाप करने वाला.)

–अफ्रीका के घाना में एक स्वघोषित अवतार ने 25 दिसंबर को विश्व में जल प्रलय की भविष्यवाणी कर अपने शिष्यों से इस बात के लिए चंदा मांगा कि एक बड़ी नाव का निर्माण किया जा सके ताकि उसके शिष्य इस जलप्लावन से सुरक्षित रहें. जब 25 दिसंबर को कुछ नहीं हुआ तो इस स्वघोषित अवतार ने घोषणा की कि उसके अनुरोध पर ईश्वर ने जल प्रलय दस दिन के लिए टाल दी है. अब दस बड़ी नावें बनाना आवश्यक है, जिसके लिए और चंदा चाहिए. बाद में पता चला कि इन गुरुजी ने इस चंदे के पैसे से एक मर्सडीज कार खरीदी है.

–चमकौर के युद्ध में अपने चार साहिबजादों के बलिदान के बाद गुरु गोबिंद सिंह जी के शब्द ''चार मुए तो क्या हुआ, जीवित कई हजार.'' उनके व्यक्तित्व की ऊँचाई का प्रमाण हैं. शहादत के सर्वोच्च शिखर, श्री गुरुगोबिंद सिंह के चरणों मे नवलय का नमन. ■

कहानी

नमक का दरोगा - प्रेमचंद

जब नमक का नया विभाग बना, और ईश्वरप्रदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी–छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल–प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ–बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़–छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। यह वह समय था जब अंग्रेजी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और शृंगार रस के काव्य पढकर फारसीदाँ लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे। मुंशी वंशीधर भी जुलेखा की विरह–कथा समाप्त करके सीरी और फरहाद के प्रेम–वृत्तांत को नल और नील की लड़ाई और अमेरिका के आविष्कार से अधिक महत्व की बातें समझते हुए रोजगार की खोज में निकले। उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे, ''बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वे घास–फूस की तरह बढती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पडूँ! अब तुम्हीं घर के मालिक–मुख्तार हो।''

''नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते–घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती हैं, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।''

''इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर को देखो, उसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरजवाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है। लेकिन बेगरज को दाँव पर पाना जरा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो यह मेरी जन्म भर की कमाई है।''

इस उपदेश के बाद पिताजी ने आशीर्वाद दिया। वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे। ये बातें ध्यान से सुनीं और तब घर से चल खड़े हुए। इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुध्दि अपनी पथप्रदर्शक और आत्मावलम्बन ही अपना सहायक था। लेकिन अच्छे शकुन से चले थे, जाते ही जाते नमक विभाग के दारोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गए। वेतन अच्छा और ऊपरी आय का तो ठिकाना ही न था। वृद्ध मुंशीजी को सुख–संवाद मिला तो फूले न समाए। महाजन कुछ नरम पड़े, कलवार की आशालता लहलहाई। पड़ोसियों के हृदय में शूल उठने लगे।

जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे। मुंशी वंशीधर को यहाँ आए अभी छह महीनों से अधिक न हुए थे, लेकिन इस थोड़े समय में ही उन्होंने अपनी कार्यकुशलता और उत्तम आचार से अफसरों को मोहित कर लिया था। अफसर लोग उन पर बहुत विश्वास करने लगे। नमक के दफ्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बंद किए मीठी नींद सो रहे थे। अचानक ऑख खुली तो नदी के प्रवाह की जगह गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया। उठ बैठे। इतनी रात गए गाड़ियाँ क्यों नदी के पार जाती हैं ? अवश्य कुछ न कुछ गोलमाल है। तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया। वरदी पहनी, तमंचा जेब में रखा और बात की बात में घोड़ा बढ़ाये हुए पुल पर आ पहुँचे। गाड़ियों की एक लम्बी कतार पुल के पार जाती देखी। डाँटकर पूछा, ''किसकी गाड़ियाँ हैं ?''

थोडी देर तक सन्नाटा रहा। आदमियों में कुछ कानाफूसी हुई तब आगे वाले ने कहा, ''पंडित अलोपीदीन की।''

''कौन पंडित अलोपीदीन ?''

''दातागंज के।''

मुंशी वंशीधर चौंके। पंडित अलोपीदीन इस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित जमींदार थे। लाखों रुपए का लेन–देन करते थे, इधर छोटे से बड़े कौन ऐसे थे जो उनके ऋणी न हों। व्यापार भी बडा लम्बा–चौडा था। बड़े चलते–पुरजे आदमी थे। अंग्रेज अफसर उनके इलाके में शिकार खेलने आते और उनके मेहमान होते। बारहों मास सदाव्रत चलता था।

मुंशी ने पूछा, ''गाड़ियाँ कहाँ जाएँगी ?'' उत्तर मिला, ''कानपुर।''

लेकिन इस प्रश्न पर कि 'इनमें क्या है', सन्नाटा छा गया। दारोगा साहब का संदेह और भी बढा। कुछ देर तक उत्तर की बाट देखकर वह जोर से बोले, ''क्या तुम सब गूंगे हो गए हो ? हम पूछते हैं इनमें क्या लदा है ?''

जब इस बार भी कोई उत्तर न मिला तो उन्होंने घोड़े को एक गाड़ी से मिलाकर बोरे को टटोला। भ्रम दूर हो गया। यह नमक के डेले थे।

पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर सवार, कुछ सोते, कुछ जागते चले आते थे। अचानक कई गाड़ीवानों ने घबराए हुए आकर जगाया और बोले, ''महाराज! दारोगा ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और घाट पर खड़े आपको बुलाते हैं।''

पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखण्ड विश्वास था। वे कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में

भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वे जैसे चाहती हैं नचाती हैं। लेटे ही लेटे गर्व से बोले, ''चलो हम आते हैं।'' यह कहकर पंडितजी ने निश्चिंत होकर पान के बीड़े लगाकर खाए। फिर लिहाफ ओढ़कर दारोगा के पास आकर बोले, ''बाबूजी आशीर्वाद! कहिए, हमसे ऐसा कौन सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गईं? हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा–दृष्टि रहनी चाहिए।''

वंशीधर रुखाई से बोले, ''सरकारी हुक्म।''

पंडित अलोपीदीन ने हँसकर कहा, ''हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढावें। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था।''

वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पडा। ईमानदारी की नई उमंग थी। कड़ककर बोले, ''हम उन नमकहरामों में नहीं है जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। आपको कायदे के अनुसार चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुर्सत नहीं है। जमादार बदलूसिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।''

पंडित अलोपीदीन स्तम्भित हो गए। गाड़ीवानों में हलचल मच गई। पंडितजी के जीवन में कदाचित यह पहला ही अवसर था कि पंडितजी को ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं। बदलूसिंह आगे बढ़ा, किन्तु रौब के मारे यह साहस न हुआ कि उनका हाथ पकड़ सके। पंडितजी ने धर्म को धन का ऐसा निरादर करते कभी न देखा था। विचार किया कि यह अभी उद्दंड लड़का है। माया–मोह के जाल में अभी नहीं पड़ा। अल्हड़ है, झिझकता है। बहुत दीनभाव से बोले, ''बाबू साहब, ऐसा न कीजिए, हम मिट जाएँगे। इज्जत धूल में मिल जाएगी। हमारा अपमान करने से आपके हाथ क्या आएगा। हम किसी तरह आपसे बाहर थोड़े ही हैं।''

वंशीधर ने कठोर स्वर में कहा, ''हम ऐसी बातें नहीं सुनना चाहते।''

अलोपीदीन ने जिस सहारे को चट्टान समझ रखा था, वह पैरों के नीचे खिसकता हुआ मालूम हुआ। स्वाभिमान और धन–ऐश्वर्य की कड़ी चोट लगी। किन्तु अभी तक धन की सांख्यिक शक्ति का पूरा भरोसा था। अपने मुख्तार से बोले, ''लालाजी, एक हजार के नोट बाबू साहब की भेंट करो, आप इस समय भूखे सिंह हो रहे हैं।''

वंशीधर ने गरम होकर कहा, ''एक हजार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।''

धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव–दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुँझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल–उछलकर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचलित खड़ा था।

अलोपीदीन निराश होकर बोले, ''अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपको अधिकार है।''

वंशीधर ने अपने जमादार को ललकारा। बदलूसिंह मन में दारोगाजी को गालियाँ देता हुआ पंडित अलोपीदीन की ओर बढ़ा। पंडितजी घबराकर दो–तीन कदम पीछे हट गए। अत्यंत दीनता से बोले, ''बाबू साहब, ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिए, मैं पच्चीस हजार पर निपटारा करने का तैयार हूँ।''

''असम्भव बात है।''

''तीस हजार पर ?''

''किसी तरह भी सम्भव नहीं।''

''क्या चालीस हजार पर भी नहीं।''

''चालीस हजार नहीं, चालीस लाख पर भी असम्भव है।''

''बदलूसिंह, इस आदमी को हिरासत में ले लो। अब मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।''

धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला। अलोपीदीन ने एक हृष्ट–पुष्ट मनुष्य को हथकड़ियाँ लिए हुए अपनी तरफ आते देखा। चारों ओर निराश और कातर दृष्टि से देखने लगे। इसके बाद मूर्छित होकर गिर पड़े।

दुनिया सोती थी पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक–वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए वही पंडितजी के इस व्यवहार पर टीका–टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया।

पानी को दूध के नाम से बेचने वाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरने वाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज बनाने वाले सेठ और साहूकार, ये सब के सब देवताओं की भाँति गर्दनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गर्दन झुकाए अदालत की तरफ चले तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित ऑखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

किंतु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील–मुख्तार उनके आज्ञा पालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बेमोल के गुलाम थे।

उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए ? ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए ? प्रत्येक

मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था।

बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे, किंतु लोभ से डाँवाडोल।

यहाँ तक कि मुंशीजी को न्याय भी अपनी ओर कुछ खिंचा हुआ दीख पड़ता था। वह न्याय का दरबार था, परंतु उसके कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा छाया हुआ था। पक्षपात और न्याय का क्या मेल ? जहाँ पक्षपात हो, वहाँ न्याय की कल्पना नहीं की जा सकती। मुकदमा शीघ्र ही समाप्त हो गया।

डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अपनी तजवीज में लिखा, पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध दिए गए प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक हैं। वे एक बड़े भारी आदमी हैं। यह बात कल्पना के बाहर है कि उन्होंने थोड़े लाभ के लिए ऐसा दुस्साहस किया हो। यद्यपि नमक के दरोगा मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है, लेकिन यह बड़े खेद की बात है कि उसकी उद्दंडता और विचारहीनता के कारण एक भलेमानुस को कष्ट झेलना पड़ा। हम प्रसन्न हैं कि वह अपने काम में सजग और सचेत रहता है, किंतु नमक के मुकदमे की बढ़ी हुई नमक से हलाली ने उसके विवेक और बुध्दि को भ्रष्ट कर दिया। भविष्य में उसे होशियार रहना चाहिए।

वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े। पंडित अलोपीदीन मुस्कुराते हुए बाहर निकले। स्वजन बांधवों ने रुपए की लूट की। उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले तो चारों ओर उनके ऊपर व्यंग्यबाणों की वर्षा होने लगी। चपरासियों ने झुक–झुककर सलाम किए। किंतु इस समय एक कटु वाक्य, एक–एक संकेत उनकी गर्वाग्नि को प्रज्ज्वलित कर रहा था। कदाचित इस मुकदमे में सफल होकर वे इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वत्ता, लंबी–चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी–बड़ी दाढ़ियाँ, ढीले चोगे एक भी सच्चे आदर का पात्र नहीं है।

वंशीधर ने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्य–परायणता का दंड मिला। बेचारे भग्न हृदय, शोक और खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशीजी तो पहले ही से कुनमुना रहे थे कि चलते–चलते इस लड़के को समझाया था, लेकिन इसने एक न सुनी। सब मनमानी करता है। हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढापे में भगत बनकर बैठें और वहाँ बस वही सूखी तनख्वाह! हमने भी तो नौकरी की है और कोई ओहदेदार नहीं थे। लेकिन काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अंधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दिया जलाएँगे। खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना–लिखना सब अकारथ गया।

इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरावस्था में घर पहुँचे और बूढ़े पिताजी ने समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले, ''जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ।'' बहुत देर तक पछता–पछताकर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहाँ से टल न जाते तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्ध माता को भी दुःख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गईं। पत्नी ने कई दिनों तक सीधे मुँह बात तक नहीं की।

इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया। संध्या का समय था। बूढे मुंशीजी बैठे–बैठे राम नाम की माला जप रहे थे। इसी समय उनके द्वार पर सजा हुआ रथ आकर रुका। हरे और गुलाबी परदे, पछहिए बैलों की जोड़ी, उनकी गर्दन में नीले धागे, सींग पीतल से जड़े हुए। कई नौकर लाठियाँ कंधों पर रखे साथ थे।

मुंशीजी अगवानी को दौड़े तो देखा पंडित अलोपीदीन हैं। झुककर दंडवत की और लल्लो–चप्पो की बातें करने लगे, ''हमारा भाग्य उदय हुआ, जो आपके चरण इस द्वार पर आए। आप हमारे पूज्य देवता हैं, आपको कौन सा मुँह दिखावें, मुँह में तो कालिख लगी हुई है। किंतु क्या करें, लड़का अभागा कपूत है, नहीं तो आपसे क्या मुँह छिपाना पड़ता? ईश्वर निस्संतान चाहे रखे पर ऐसी संतान न दे।''

अलोपीदीन ने कहा, ''नहीं भाई साहब, ऐसा न कहिए।''

मुंशीजी ने चकित होकर कहा, ''ऐसी संतान को और क्या कहूँ ?''

अलोपीदीन ने वात्सल्यपूर्ण स्वर में कहा, ''कुलतिलक और पुरखों की कीर्ति उज्ज्वल करने वाले संसार में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें ?''

पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा, ''दरोगाजी, इसे खुशामद न समझिए, खुशामद करने के लिए मुझे इतना कष्ट उठाने की जरूरत न थी। उस रात को आपने अपने अधिकार–बल से अपनी हिरासत में लिया था, किंतु आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में आया हूँ। मैंने हजारों रईस और अमीर देखे, हजारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा, किंतु परास्त किया तो आपने। मैंने सबको अपना और अपने धन का गुलाम बनाकर छोड़ दिया। मुझे आज्ञा दीजिए कि आपसे कुछ विनय करूँ।''

वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देखा था तो उठकर सत्कार किया, किंतु स्वाभिमान सहित। समझ गए थे कि यह महाशय मुझे लज्जित करने और जलाने आए हैं। क्षमा–प्रार्थना की चेष्टा नहीं की, वरन् उन्हें अपने पिता की यह ठकुरसुहाती की बात असह्य सी प्रतीत हुई। पर अब पंडितजी की बातें सुनकर मन की मैल मिट गई।

पंडितजी की ओर उड़ती हुई दृष्टि से देखा।

सद्भाव झलक रहा था। गर्व ने अब लज्जा के सामने सिर झुका दिया। शर्माते हुए बोले, ''यह आपकी उदारता है जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिए। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था, नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूँ। जो आज्ञा होगी वह मेरे सिर–माथे पर।'' अलोपीदीन ने विनीत भाव से कहा, ''नदी तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं स्वीकार की थी, किंतु आज स्वीकार करनी पड़ेगी।''

वंशीधर बोले, ''मैं किस योग्य हूँ, किंतु जो कुछ सेवा मुझसे हो सकती है, उसमें त्रुटि न होगी।'' अलोपीदीन ने एक स्टाम्प लगा हुआ पत्र निकाला और उसे वंशीधर के सामने रखकर बोले, ''इस पद को स्वीकार कीजिए और अपने हस्ताक्षर कर दीजिए। मैं ब्राह्मण हूँ, जब तक यह सवाल पूरा न कीजिएगा, द्वार से न हटूंगा।''

मुंशी वंशीधर ने उस कागज को पढा तो कृतज्ञता से ऑखों में ऑसू भर आए। पंडित अलोपीदीन ने उन्हें अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियत किया था। छह हजार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोजाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़ा, रहने को बँगला, नौकर–चाकर मुफ्त। कम्पित स्वर में बोले, ''पंडितजी मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी उदारता की प्रशंसा कर सकूँ! किंतु ऐसे उच्च पद के योग्य नहीं हूँ।''

अलोपीदीन हँसकर बोले, ''मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही जरूरत है।''

वंशीधर ने गंभीर भाव से कहा, ''यों मैं आपका दास हूँ। आप जैसे कीर्तिवान, सज्जन पुरुष की सेवा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। किंतु मुझमें न विद्या है, न बुद्धि, न वह स्वभाव जो इन त्रुटियों की पूर्ति कर देता है। ऐसे महान कार्य के लिए एक बड़े मर्मज्ञ अनुभवी मनुष्य की जरूरत है।''

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथ में देकर बोले, ''न मुझे विद्वत्ता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्यकुशलता की। इन गुणों के महत्व को खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया जिसके सामने योग्यता और विद्वत्ता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए, अधिक सोच–विचार न कीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला, बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।''

वंशीधर की ऑखें डबडबा आईं। हृदय के संकुचित पात्र में इतना एहसान न समा सका। एक बार फिर पंडितजी की ओर भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और काँपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज पर हस्ताक्षर कर दिए। अलोपीदीन ने प्रफुल्लित होकर उन्हें गले लगा लिया। ■

नवलय गतिविधि

काव्य संग्रह 'अनामिका' का विमोचन

नवलय द्वारा दिनांक 9 जनवरी 2026 को श्री आशीष शर्मा द्वारा रचित काव्य संग्रह 'अनामिका' का विमोचन समारोह आयोजित किया गया। भोपाल के दुष्यंत कुमार संग्रहालय में आयोजित इस प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन के मुख्य अतिथि थे मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक एवं म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल के मंत्री श्री विकास दवे। विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार व स्वदेश भोपाल के सलाहकार सम्पादक श्री गिरीश उपाध्याय थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता, वरिष्ठ समाजसेवी व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्यक्षेत्र के सहकार्यवाह श्री हेमन्त मुक्तिबोध ने की। कार्यक्रम का प्रारम्भ सुश्री अनामिका शर्मा के द्वारा सरस्वती वन्दना व मां सरस्वती के चित्र पर अतिथियों के द्वारा पुष्पांजलि से हुआ। कार्यक्रम में प्रास्ताविक भाषण नवलय के अध्यक्ष श्री राकेश कुमार जैन का था। उन्होंने अपने वक्तव्य में नवलय संस्था की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी के साथ विमोचित होने वाली कृति की समीक्षा प्रस्तुत की। श्री आशीष शर्मा ने अपनी कृति का मंतव्य प्रकट किया व बताया कि इस काव्य संग्रह की कविताओं के पीछे की भावनायें क्या थीं।

पत्रकार श्री गिरीश उपाध्याय ने कहा कि एक बार एक साहित्यकार ने चिंता व्यक्त की कि कविता कभी हेडलाइन क्यों नहीं होती ? कविता को संपादित करना मुश्किल है क्योंकि किसी की भावनाओं को संपादित करना किसी के बस में नहीं। यदि हम मानवीय समाज बनाने चाहते हैं तो व्यक्ति के अंदर कवि जैसा भाव होना चाहिये। कविता जीवन के कठिन समय में हमारा सम्बल भी है। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के डॉ. विकास दवे ने कहा कि कविता, **क**र्म व **वि**चार का **ता**लमेल होती है। ब्रम्हा जी की सृष्टि का कमल तो सिर्फ खिलता है, पर कवि का कमल मुस्कुराता भी है। इसीलिए एक स्थान पर कवि को ब्रम्हा जी से बड़ा बताया गया है। साहित्यकार के समक्ष क्या लिखूं से अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्यों लिखूं। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ही कविता होती है। श्री हेमंत मुक्तिबोध ने अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए कहा कि कवि होना एक दुर्लभ कार्य है। कवि भी अपनी सृष्टि की रचना ब्रम्हा जी जैसे करता है। पर कवि अधिक स्वतंत्रता से अपनी बात कहता है और इसलिये कवि अधिक क्षमतावान होता है। काव्य विधा तभी अमूल्य है जब उसमें जीवन के मूल्य हों।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अनामिका शर्मा, आयाम और अन्वी, ने भी अपने उदगार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ रंगकर्मी श्री अरविन्द बिलगैंयां ने किया। कार्यक्रम का समापन श्री आशीष शर्मा के द्वारा आभार प्रदर्शन के बाद सुश्री पूर्णिमा दाते के द्वारा वन्देमातरम गान के साथ हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी व रचनाधर्मी उपस्थित थे। ■

(समीप के पृष्ठ पर चित्र उसी अवसर के)

राज-सदन

राज-सदन

राज-सदन

राज-सदन

आशीष शर्मा के काव्य-संग्रह

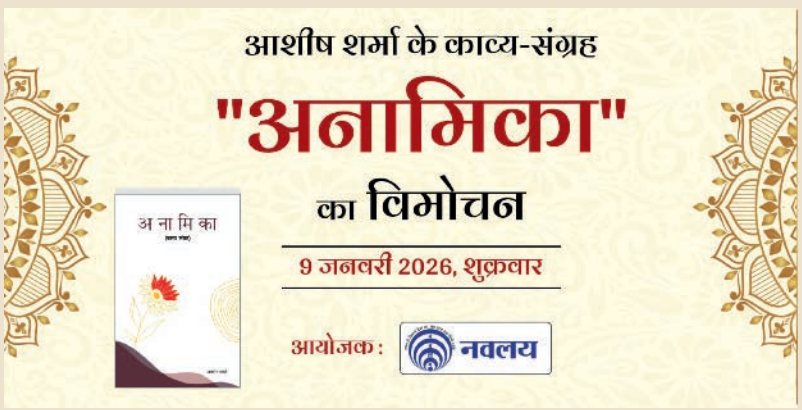

आशीष शर्मा के काव्य-संग्रह
"अनामिका"
का विमोचन
9 जनवरी 2026, शुक्रवार
आयोजक :
नवलय
अ ना मि का

डाक पंजीयन- म.प्र./भोपाल/4-167/2024-26

RNI - MPBIL/2008/26448

नवलय अनुबोध

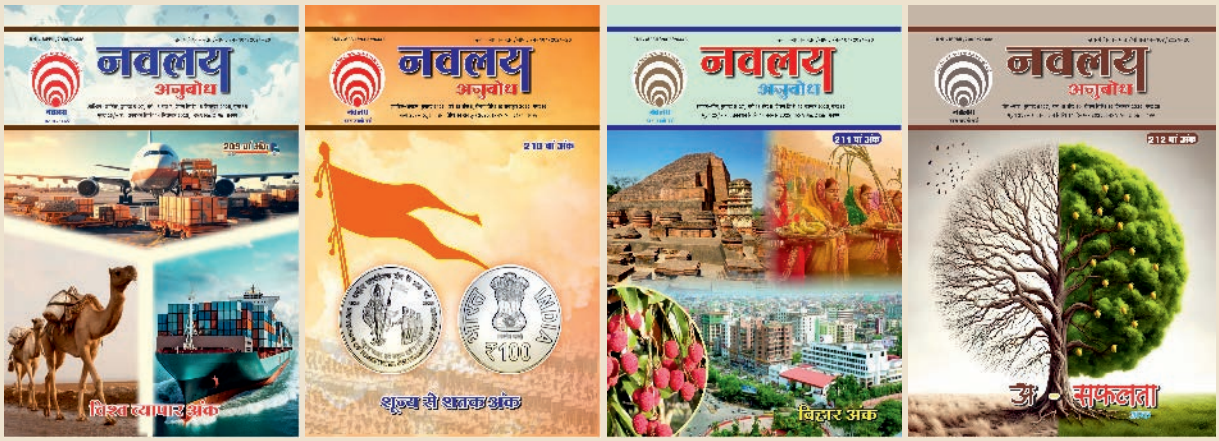

राष्ट्रवाद और संस्कृति के पोषण तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन के सार्थक अभियान का हिस्सा बनने के लिये नवलय अनुबोध पत्रिका के सदस्य बनकर सहभागी बनिये

द्विवार्षिक रू. 500/– वार्षिक सहयोग राशि रू. 300/– का भुगतान

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया की किसी भी शाखा में/ नेट बैंकिंग/गूगल पे/पेटीएम से कर सकते हैं

इस माह जिनसे सहयोग राशि प्राप्त हुई :
1. श्री विनय कुमार, भोपाल

खाते का नाम - नवलय अनुबोध (Navalaya Anubodh)

खाता क्र. - 3018974905

बैंक - सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, जेल रोड, भोपाल

IFSCode – CBIN 0283134

क्यू आर कोड को स्केन कर राशि प्रेषित कर सकते हैं।

NAVLAYA ANUBODH

10302432@cbin

पत्रिका की मुद्रित प्रति के लिये
आपका डाक का पता व प्रेषित राशि की सूचना
मो. क्र. 9755380050 पर भेजें

प्रकाशक एवं मुद्रक राकेश कुमार जैन द्वारा स्वामित्व नवलय के लिए 54, जोन-2, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल-462011 से प्रकाशित एवं श्री श्रद्धा ऑफसेट प्रिंटर्स, एस-बी-2, लोअर ग्राउण्ड, विजय स्तम्भ, एम.पी. नगर, भोपाल द्वारा मुद्रित